Archiv der Gossner Mission
im Evangelischen Landeskirchlichen Archiv in Berlin

Signatur **Gossner_G 1_0383**

Aktenzeichen ohne

Titel

Martin Seeberg: Die Geschichte der Gossnerkirche. Übersetzung ins Hindi als Manuskript

Band

Laufzeit ohne Datum

Enthält

Digitalisiert/Verfilmt 2009 von Mikro-Univers GmbH

Gossner Mission

Martin Seeberg: Geschichte der Gossner Kirche

Übers. in 'Kunde' als Manuskript.

vom: _____ bis: _____

vorherige Akte von: _____ bis: _____

im Archiv unter Nr.: _____

LEITZ
Schnellhefter
Rapid 2 DIN A 4
bei Amtsheftung ist diese Seite oben

Gossner Mission

Gossner Mission

मार्टिन मेवर्ग

गोसनर एवंजेलिकल लुथेरान चर्च छोटानागपुर और आसाम का इतिहास (१९१९ - १९६९)

गोसनर मिशन के क्यूरेटोरियम की ओर से पादरियों, प्रचारकों एवं शिक्षकों के लिए एक अनुदान।

अनुवादक

सिंगराय कुला एम० ए०, बी० एल०

सूचीपत्र

पृष्ठ पृष्ठ

पहला अध्याय

गोसनर मिशन का मिशन क्षेत्र १८४५-१९१५ ३

१. आरम्भ (१८४५ ई०) ४

२. १८५७ ई० का सिपाही-विद्रोह १०

३. १८६६ ई० की फूट और चर्च का बिगाड़ना १६

४. सरदार (१८८०-१९००) २२

५. मंडलियों की वृद्धि ३१

दूसरा अध्याय

गोसनर चर्च को आटोनोमी की प्राप्ति १९१९ ४६

१ मिशनरियों का देश छोड़कर जाना ४६

२. जाँच-पड़ताल ५५

३. स्वतंत्रता (Autonomy) की घोषणा ६५

तीसरा अध्याय

गोसनर चर्च पुराने भारत में १९२०-४६ ८१

१. पहली चर्च कौंसिल के नेतृत्व में (१९२०-१९२४) ८१

२. मिशनरियों का वापस लौटना (१९२५) ९४

३. सन् १९३५ ई. में स्कूल का झगड़ा एवं उसका परिणाम ११२

४. भारत का स्वतंत्र होना १३५

चौथा अध्याय

गोसनर चर्च नये भारत में (१९४७-१९६०) १४८

१. एक नया आरम्भ १४८

२. विदेशी मित्र १६१

३. चर्च की एकता १७३

४. सन् १९६० ई. का नया संविधान १८७

पाँचवा अध्याय

गोसनर चर्च की सेवा १९६०-१९९९

१. सुसमाचार-प्रचार २०१

२. गोसनर चर्च की सामाजिक सेवा २१४

३. एक बड़ा उत्तरदायित्व २२९

४. अधूरे-काम २४१

पहला अध्याय

गोसनर मिशन का मिशन-क्षेत्र

१८४५ - १९१५

गोसनर मिशन का इतिहास एक ईश्वरीय काम है। उसके अभिप्राय और कार्यक्रम में किसी प्रकार के अड़चन अथवा रुकावट नहीं आए। विभिन्न जातियों के मनुष्यों और भाषाओं को अपने सुसमाचार प्रचार करने के साधन के रूप में ईश्वर की सेवा करनी ही पड़ी। उसका काम अभी पूरा नहीं हुआ है, लेकिन अब उसकी पूर्णता की दिशा में एक कदम उठाया जा चुका है। उसकी महिमा और प्रशंसा हो!

Gossner Mission

१ आरम्भ (१८४२ई.)

भारत में मसीही-सुसमाचार का आगमन बहुत ही प्राचीन काल में हो चुका था। ई. सन् 300 के के आस-पास ही हमें दक्षिणी-भारत में पहली मसीही-मंडलियों के बारे सुनते हैं। परन्तु छोटानागपुर अब तक ईश्वर का वचन नहीं पहुँचा था। इसके बारे में हम तब सुनते हैं जब जोहानेस एवांगेलिस्ता गोसनर बर्लिन से बहुत से जर्मन-मिशनरियों को बाहर भेजते हैं। उनमें से उन्चालिस व्यक्ति पहले नागपुर, जबलपुर, मद्रास, दार्जिलिंग तथा गंगा नदी के पाट में बसे शहरों में मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने लगे। इस सुसमाचार

Gossner Mission

की पहली पुकार आदिवासियों के पास तब पहुँची जब कलकत्ते में उसके बारे निर्णय हुआ। वहाँ झुंड के झुंड आदिवासी रास्तों में काम करते थे। इन लोगों की ओर ऐसे समय में चार गोसनर-मिशनरियों का ध्यान बरबस चला गया जब वे इस पशोपेश में पड़े हुए थे कि अब उन्हें कहाँ मसीही-वचन का प्रचार करना चाहिए। उन्हें मूल में बर्मा और तब पंजाब में काम करना था। लेकिन उसके बदले वे अब आदिवासियों के देश में चल पड़े। कलकत्ते से राँची पहुँचने में उन्हें बीस दिन लग गए। राँची में उनका आगमन

Gossner Mission

२ नोवेम्बर १८४५ ई० में हुआ। इन चार मिशनरियों का नाम था एमिल शत्स (Emil Schatz), आगुस्त ब्रांत (August Brandt), फ्रिड्रिक बत्श (Friedrich Batsch) और थेयोदोर यांके (Theodor Janke)। उन्हें काफी बड़ी जमीन दान में मिली; और एक मिशन-स्टेशन खोली गयी। उसके तुरंत बाद एक दूसरा और फिर तीसरा मिशन-स्टेशन क्रमशः डोम्बा (१८४६ ई०) एवं लोहरदगा (१८४८ ई०) में स्थापित किए गए। १८५० ई० के भीतर बारह मिशनरी जर्मनी से आए। लेकिन अब तक बहुत परिश्रम करने पर प्रभु के वचन

Gossner Mission

का कोई असर नजर नहीं आया। दुःख-
तकलीफ, रोग शोक और मृत्यु के कारण
मिशनरियों के उत्साह में कोई ज्ञान बाकी नहीं
रह गयी। उन्होंने बर्लिन के लिए निश्चित अपने
एक पत्र में लिखा: "हमारी अभिलाषा है कि
हम एक दूसरे क्षेत्र की खोज करें जहाँ बड़ी
आशा के साथ प्रभु का काम कर सकें।"
गोसनर ने जलाव में लिखा: "आदिवासी
अपना धर्म बदलें अथवा न बदलें, उसे
तुम सबों को बेचैन होने की जरूरत नहीं,
यदि वे ईश्वर का वचन ग्रहण नहीं करते
हैं तो उसकी जवाबदेही महाविचार के दिन
उनके सिर पर पड़े। लेकिन तुम सब
शांति से प्रार्थना और प्रचार के काम

Gossner Mission

में लगे रहो, हम भी यहां उसके लिए और भी अधिक प्रार्थना करेंगे।"

आदिवासी ईश्वर का वचन ग्रहण करना चाहते थे। ९ जून १८२० ई. को पहले पहल चार उरांव भाईयों — कासु, बन्धु, गुर्का, नविन और पोरिन को बपतिस्मा दिया गया। वे सब किसान थे। उनमें विशेषकर पोरिन सुसमाचार प्रचार करने के काम में बहुत ही परिश्रमी निकले, अतः उनको पहला भारतीय-मिशनरी कहा जा सकता है। वह अपने ग्रामीण-भाईयों को पढ़ाना शुरू किया तथा प्रतिदिन गिर्जा भी करता था।

Gossner Mission

आस-पास के गाँवों में भी जाकर वह ईश्वर का सुसमाचार लोगों को सुनाने लगा।

२५ अक्टोबर १८५१ ई० को सर्वप्रथम दो मुण्डा भाईयों को बपतिस्मा दिया गया। उनमें एक का नाम साधो मुण्डा और दूसरे का मसीहू मुण्डा था, पहला अम्बि तंधुआ और दूसरा बालालोंग का रहने वाला था। सुसमाचार अब राँची के क्षेत्र से बाहर भी फैलने लगा। २५ दिसम्बर १८५५ ई० को चालीस तंगालियों को, जो इलो-आर्गो के निवासी थे बपतिस्मा दिया गया, उनमें से एक ~~[illegible]~~ पौलुस नेगो राँची के थे। फार्टुम जो बसिया के नजदीक है, दो खड़िया -

Gossner Mission

भाई मंगरू और बन्धु बपतिस्मा लेने के लिए आए। राँची अब एक केन्द्र-सा बन गया। जब १८ नोवेम्बर १८५१ ई० को राँची ख्रिस्त गिर्जा की नींव डाली गयी तो उस वक्त वहाँ के मसीही-मंडली की संख्या केवल चालीस की। १८५५ ई० में यहाँ जन्मपर्व का पहला गिर्जा हुआ। इस मंडली की वृद्धि में लड़ाई के कारण कुछ समय के लिए रुकावट आ गयी।

२. १८५७ ई० का सिपाही-विद्रोह

ई० सन् १८५७ में जो सिपाही-विद्रोह उत्तरी भारत में हुआ उसमें हिन्दू और मुसलमान दोनों ने भाग लिया। कंधे में कंधे मिलाकर

Gossner Mission

उन्होंने अंग्रेजों के शासन को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए जहां-तहां विद्रोह कर दिया। दिल्ली और लखनऊ के सिपाहियों के बीच यह विद्रोह आग की तरह बढ़ उठी और कुछ नवाब भी उसमें मिल गए। इस क्रांति की आग में छोटानागपुर भी जल उठा तथा भारतीय सिपाहियों की एक रेजीमेंट रांची को इसे बचाने के लिये यहां छावनी लगा कर बैठ गयी।

आदिवासियों ने इस विद्रोह में भाग नहीं लिया क्योंकि उन्हें हिन्दुओं के राज में अधिक दुःख और तकलीफों का सामना करना पड़ता था बनिस्बत की अंग्रेजों की छत्रछाया में। नयी इसाई-मंडलियों

Gossner Mission

को इस प्रकार सताया जाने लगा कि जर्मन-मिशनरियों को भी कलकत्ता भाग कर अपनी जान बचाने की नौबत आ गयी। राँची ख्रिस्त गिर्जा को बम से मारा गया और चर्च-कम्पौंड में बसे घरों को लूट-पाट कर उजाड़ दिया गया। उन्हें विभिन्न ढंग से सताया जाने लगा क्योंकि उन्होंने घृणित सफेद साहेबों का धर्म और विश्वास को ग्रहण किया था। यहां तक की ~~कई~~ नन्हें-मुन्ने बच्चे भी उनके क्रूर हाथों से अछूता न रहे, और उनका यह कह कर खिल्ली उड़ाया गया: "हां, अब कहो, तुम सबों का यीशु कहां है?" बहुतों ने जंगल में भाग कर आश्रय लिया।

Gossner Mission

रांची एवं आस-पास के ईसाईयों के लिए यह सबसे पहला अवसर था जब बिना बाहरी सहायता के अपने विश्वास में टिके रहें। कलकत्ता में ठहरे हुए मिशनरियों के पास कोई आशा बाकी रह नहीं गयी थी, और इसलिए शास ने अमेरिका में एक नये कार्यक्षेत्र ढूंढने का सलाह दिया।

लेकिन जब विद्रोह को कुछ ही महीनों में दबा दिया गया तो मसीही-मंडली सलाहट के फलस्वरूप कमजोर होने के बदले और भी अधिक मजबूत हो उठी। इन बड़े कठिनाईयों के दिनों में एक सौ पचास नए व्यक्तियों ने बपतिस्मा लेने की इच्छा

Gossner Mission

प्रकट किया और उन्होंने ने यीशु का बपतिस्मा लिया। यह शुभ संदेश जब जोहानेस एवंगेलिस्ता गोसनर को बर्लिन में मिला तो वे बहुत ही जोर से बीमार थे। यह उनके लिए एक बड़े आनन्द का अंतिम समाचार था।

अब राँची में मसीही-धर्म की धारा आदिवासियों के बीच इस कदर फूट पड़ी कि राँची के बाहर के स्टेशनों में काम बंद कर दिया गया और राँची में बड़े जोर-शोर से बपतिस्मा लेने के लिए इच्छुक लोगों को केन्द्रित ढंग से शिक्षा दिया जाने लगा। प्राचीनों को गाँवों में

Gossner Mission

भेजा गया और उन्हें इस बात के लिए उत्तरदायी ठहराया गया जिसे कि वहाँ की मंडलियाँ ठीक से चलें।

१८५९ ई. में तीन भारतीय प्रचारक सुसमाचार प्रचार करने के लिए भ्रमण करने लगे। उनका काम था बपतिस्मा लेने वालों की परीक्षा करना और उनसे कैटेकिस्म को दुरुस्त करवाना। कम-से-कम छः महीनों की अवधि के बाद बपतिस्मा लेने वालों को प्रचारकगण मिशनरियों के पास लाते थे और उन्हें तीन सप्ताह तक बपतिस्मा की तालीम दी जाती थी। १८६३ ई. में पुरुलिया और १८६५ ई. में चाईबासा मिशन-स्टेशनों की

Gossner Mission

स्थापना हुई। मसीही लोगों की संख्या इस वक्त दस हजार थी।

३. १८६६ ई. की फूट और चर्च का विभाजन

इस वक्त एक ऐसी दुःख भरी घटना हुई जिसका परिणाम पचास वर्षों के बाद भी मिट न सका। मिशनरियों के बीच मत-भेद होने के फलस्वरूप चर्च दो भागों में अलग हो गया।

गोसनर की मृत्यु के बाद बर्लिन में एक कन्सिस्टोरियम बनायी गयी जो इस बात में बहुत जोर देने लगी कि अधूरी छोड़ी हुई मिशन-क्षेत्र की समस्याओं को सुलझाया जाए। मिशनरियों के काम करने के ढंग

Gossner Mission

में जो पूरी स्वतंत्रता थी उसका फल यह हुआ कि मसीही-मंडलियां मिशनरियों की आत्मिक धार्मिकता से बहुत ही प्रभावित हुए। इसका महत्व चर्च-शासन के लिए कुछ खास नहीं था लेकिन कुछ व्यक्तियों की नजरों में बपतिस्त-मंडली छोटानागपुर में होने वाली चर्च के लिए एक नमूना था। इसके अलावा प्रतिदिन धर्म खोजकों की संख्या में वृद्धि आने के कारण शामिल स्थान बनाना और नए मिशन-स्टेशनों का खोला जाना जरूरी हो गया। भविष्य में कुरोटोरियम के अनुमति बिना कोई भी नया मिशन-स्टेशन की स्थापना नहीं हो सकती थी, क्योंकि रुपया-पैसा

Gossner Mission

का हिसाब-किताब और मिशन के ज़ायदाद का ठीक से शासन करना बहुत ज़रूरी हो गया। चौदह ~~मिशनरी~~ मिशनरियों में छः मिशनरी काम करने के इन नए तरीकों से बिलकुल असहमत थे, उनको ये बात कतई पसंद नहीं थी कि उनके काम के विरुद्ध किसी प्रकार की शिकायत पेश की जाए।

इस झगड़े में भारतीय ईसाई-मंडली मंडली को भी फंसाया गया जब कुछ अनाज्ञाकारी मिशनरी अपना काम ज़ारी रखे और करीब आधे बपतिस्मा लिए हुए मसीही-भाईयों को अपनी ओर मिला लिए। एंगलिकन बिशप ने

Gossner Mission

इस नाजुक मौका से फायदा उठाया और रांची में एक मुलाकात के अवसर पर तीन जर्मन-मिशनरियों को पादरी का पदाभिषेक दिया तथा सहस्रों मसीही-भाईयों को अपने चर्च में मिला लिया। इस घटना के कारण अंत में १८९९ ई. में चर्च दो भागों में बंट गया। उसी समय से एक ही स्थान में दो एंग्लिकन चर्च बन गए और इस दुर्घटना के फलस्वरूप बाद में जब १९१९ ई. में गोसनर चर्च की ओटोनोमी-घोषणा हुई तो एंग्लिकन चर्च से कदम-से-कदम मिलाकर चलना असंभव-सा हो गया।

Gossner Mission

मिशनरियों के बीच इस बुरे मत-भेद एवं झगड़े को दृष्टि में रखते हुए यह भी कहा जा सकता है कि इसका असर आने वाले वर्षों में होने वाले चर्च के अगुओं पर भी पड़ा।

यह एक अनोखी बात है कि इस प्रकार की दुर्घटनाओं के बावजूद भी चर्च की बढ़ती में किसी प्रकार की रुकावट नहीं आयी वरन् वह और भी जोर पकड़ती गई। अतिशीघ्र एक के बाद दूसरे स्टेशनों की नींव कुड़जु (१८६६ई), गोविन्दपुर (१८७०ई), लोहरदगा (१८७१ई) और टकरमा (१८७२ई) में डाली गयी। मिशनरियों की संख्या के साथ-साथ—

Gossner Mission

जर्मनी की आर्थिक-सहायता में भी वृद्धि होने लगी।

अगले दस वर्षों में लुथेरान विश्वास की शिक्षा मंडलियों में काफी मजबूत हो गयी। वास्तव में कहा जाए तो यह सब प्रेडिग नोतरोत (Praeses Notrot) के लम्बे वर्षों के आदर्शमय परिश्रम का फल था।

बहुत से बपतिस्मा लेने के लिए इच्छुक आदिवासियों में न केवल धर्म की लालसा और न ही मसीही-मंडलियों से मिल जाने का अभिप्राय था, परन्तु इस नये सुसमाचार से उन्हें एक नये जीवन की आशा मिली, क्योंकि दयालु और प्रेमी ईश्वर जो मसीह यीशु में हैं, भय और

Gossner Mission

भूत-प्रेतों से छुटकारा देने वाला है। इस सब के होने पर भी यह प्रतीकात्मक प्रश्न हमारे सामने रह ही जाता है कि क्या मनुष्यों के बाहरी जीवन में बड़े सामाजिक न्याय से परिवर्तन लाया जा सकता है।

४ सरदारें (१८८०-१९००)

आदिवासी किसानों की हालत शताब्दियों से खराब होती जा रही थी। कभी वे जमीन के स्वामी थे, लेकिन कपटी जमींदारों एवं ठीकेदारों ने उनके साथ मनमाना करना शुरू कर दिया। कानून, शासन और ~~पुलिस~~ पुलिस

उनके कब्जे में था। झूठी गवाही देकर इन निर्दोष किसानों से जमीन छीन लेना प्रतिदिन की बात थी। शान्ति एवं शासन को ध्यान में रखते हुए अंग्रेजों ने १८२० ई० और १८३२ ई० में होने वाले किसानों के विद्रोह को कठोरता से दबा दिया। इस बीच में जमीन का माप हुआ। लेकिन जमीन मापने वाले या तो हिन्दु और घूस लेते थे अथवा आदिवासी मालगुजारी की वृद्धि के डर से गलत बात (statement) कह देते थे। वास्तविकता यही थी कि किसी प्रकार का सुधार नहीं हुआ। सभी गाँवों में अन्याय और गैरकानूनी दबाव

Gossner Mission

का राज था। अनपढ़ आदिवासियों को इस वक्त मदद की बहुत ज्यादा जरूरत थी। बपतिस्मा लेने वालों की एक बड़ी संख्या इस मामले में गरीबी-मंडलियों से संरक्षण और सहायता चाहती थी। मिशनरियों के सामने यह सवाल था, क्या आदिवासियों को जमीन-अधिकार के सिलसिले में मदद करना चाहिए?

बहुत से मामलों में उन गरीबी-भाईयों को संरक्षण दी गयी जो निर्दयता से सताए गए थे। उन्हें कानूनी-विषयों में सलाह देने के लिए एक वकील नियुक्त किया गया। सरकारी-अधिकारी

के पास मिशनरियों ने कुचले और सताए हुए आदिवासियों के प्रति अपनी आवाज उठायी। उन्होंने अपने ही व्यक्तियों को जमीन के नाप के लिए प्रशिक्षण दी तथा बचे हुए से अच्छे और नए ढंग से खेती करने का सलाह दिया। आदिवासियों की शिक्षा के लिए बहुत से स्कूलों को खोलने का अर्थ था उनके हाथ में शिक्षा रूपी ऐसा हथियार दिया गया जिसे वे अपने सताने वालों के विरुद्ध लड़ सकें।

लेकिन इस सब के होते हुए भी पूर्ण रूप से कस्र का निवारण नहीं होता है। कठिनाई पहले की तरह ही बनी रहती है।

Gossner Mission

अपने अधिकारों की मांग के लिए ई॰ सन् १८८५ से लेकर आदिवासियों के बीच बहुत से क्रांतिकारी दलों का संगठन हुआ। उनके नेता अपने को सरदार कहते हैं और उनमें बहुत से सरदारें ईसाई थे। किसानों से उनकी मांग थी कि वे जमींदारों का मालगुजारी देना बंद करें। फलतः जमींदार सब कचहरी में उनके विरुद्ध नालिश करने लगे। सरदारें रुपया-पैसा जमा करने लगे जिससे वे अपने ~~अधिकारों~~ अधिकारों की मांग न केवल सरकार के पास वरन् लंदन में भी पेश कर सकें। सन् १८८६ ई॰ में मिशनरियों की एक जेनेरल कांफ्रेंस

Gossner Mission

हुई। इस कंफ्रेंस में यह प्रस्ताव किया गया कि अब सरदारों की सभी मांगे मिशनरियों को अपने हाथ में लेना चाहिए। इनकी मांगे की जमीन-सम्बंधी पुराने मूल-अधिकारों को पुनः प्रस्थ करना, गैर आदिवासियों का निर्वासन तथा एक राजनैतिक आदिवासी प्रान्त की स्थापना, जिसकी प्राप्ति के लिए आवश्यकता पड़ने पर बल-प्रयोग करना भी उचित समझा गया। बहुत से ईसाईयों को काफी निराशा हुई जब मिशनरियों ने उनकी मांगों को अपने हाथों में लेने से अस्वीकार कर दिया। वे मंडली के जीवन से

Gossner Mission

दूर रहने लगे अथवा प्रभु की आराधना एक जगह इकट्ठा होकर स्वयं ही करते थे। मंडली के बहुत से पंच लोग सरदारों से मिल गए। सरकार ने जब सरदारों के आरोप पर विचार करने से अस्वीकार कर दिया तो कुछ दिनों तक देश में शांति छायी रही।

लेकिन चोट से खून का बहना जारी रहा। क्या यीशु मसीह गरीबों और अधिकार से वंचित लोगों का वकील नहीं? जो बल प्रयोग करते हैं क्या उनको आज उपदेश नहीं दिया जा सकता है?

"बल के विरुद्ध बल" सरदारों का यह जवाब

Gossner Mission

यीशु की आज्ञा में जंचता नहीं। पादरियों का यह कहना "प्रार्थना ही सहायता है" भी उसी तरह असंतोषजनक है। क्रांतिकारियों की ओर लोगों ने तब ध्यान दिया जब दाऊद बिरसा इनके नेता एवं पैगम्बर बने। १८९५ ई० में उनको कैद किया गया लेकिन फिर से छोड़ दिया गया। सन् १८९७-९८ ई० के ज्याकाल और गुरुवारी के दिनों में वह ईश्वर के राज के आगमन के बारे प्रचार करने लगा। अपने समर्थकों को वह एक राजनैतिक-धर्म पढ़ाने लगा। यह धर्म एक उद्धार का समाचार

था जो ईसाई धर्म और मूर्तीपूजा के विचारों पर आधारित था। सन् १८९९ ई० के जन्म-पर्व के अवसर में एक विद्रोह हुआ जिसका खास लक्ष्य बहुत से पुलिस-स्टेशनों और चर्चों को खतम करना या कब्जे में लेने का था। सैनिकों ने चढ़ाई कर दिया। फलतः बहुत से व्यक्ति मारे गए या घायल हुए। टकरगा के नजदीक बिरसा को पकड़ा गया। सन् १९०० ई. में कलकत्ते के जेल में उसकी मृत्यु हो गयी। छोटानागपुर के गांवों में सैनिकों ने पड़ाव डाल दिया। दुख-तकलीफ, गरीबी

Gossner Mission

और अन्याय पहले से भी अधिक बढ़ गया। सामाजिक-क्रांति का अंत हो गया एवं आंतरिक-व्यवस्था फिर से आ गयी। लेकिन आदिवासियों की लालसाएं अपूर्ण रह गयीं।

५ मंडलियों की वृद्धि

जर्मन के मामले में जेसुइटों (Jesuit) का कथोलिक मिशन कम सावधान नहीं था। सन् १८६६ ई. से लेकर यहां-वहां मिशन-स्टेशन खोली गयी लेकिन उन्हें बहुत कम सफलता मिली। इस परिस्थिति में परिवर्तन आने में देर न लगी जब सन् १८८६ ई. में जेसुईट पाटर लीवन्स (Jesuit pater Lievens)

Gossner Mission

का आगमन हुआ। उनके विचार में मिशन-
कार्य में कोई भी सामान बुरा नहीं था।
अब वह सरदारों की तरह प्रचार करने
लगा तथा लोगों को प्रतिज्ञाएं भी किया
कि उनकी सभी प्रकार की मांगे पूरी की
जाएगी। लोगों को अपनी ओर खींचने
के लिए उसने रुपया-पैसा खूब खर्च
किया, नौकर-चाकरों को लगाया और
सभी प्रकार के हथियारों को जखीरा में
लाने से उसे ~~कभी~~ जरा भी हिचकिचाहट
नहीं हुई। कुछ ही सप्ताह के भीतर
हजारों लोगों को बपतिस्मा दिया गया,
बहुत से लुपोरान ~~क्रिस्तान~~ ख्रिस्तान

Gossner Mission

कथोलिक बन गए। यहाँ तक की प्रचारकों को रुपया का लालच देकर खरीद लिया गया।

लेकिन लीवेन्स की प्रतिज्ञाएं अधूरी रह गयी। चार वर्षों के बाद ही उन्हें देश छोड़ना पड़ा। तदुपरान्त कथोलिक-मिशन आदिवासियों की सामाजिक-स्थिति में सुधार लाने के निमित्त स्कूल और शिक्षात्मक कामों विशेष ध्यान देने लगा। इस क्षेत्र में जेसुईटों ने बहुत ही प्रशंसनीय काम किया। अधिकतर कथोलिक मिशन-स्टेशन पश्चिमी छोटानागपुर

Gossner Mission

के उरांव लोगों के यहां खोले गए।

सन् १८९० ई० में जब सरदारी क्रान्ति और पाटेर लीवेन्स के सपनों में पानी फिर गया, तो एक लम्बी अवधि के बाद लुथेरान-मिशन ने बहुत से नये मिशन-स्टेशनों को खोला, जैसे चैनपुर (१८९२), चक्रधरपुर (१८९३), ~~[illegible]~~ खूंटीटोली एवं गुमला (१८९५), किंकेल (१८९८), करीमती और कुरसुगदा (१९००), तलाड़ (आगलेश्वा) और कोरोंजो (१९०३)।

सन् १९०५ ई० में जयपुर-स्टेट के बहुत से व्यक्तियों ने ~~[illegible]~~ बपतिस्मा लिया। इसके होते हुए भी वहां मिशन-स्टेशन

Gossner Mission

खोला नहीं जा सका क्योंकि वहां के राजा इसमें रोक लगा दी। किंकेला और खूंटीटोली में बहुत लोगों ने ~~बप~~ बपतिस्मा लेने की इच्छा प्रकट किया।

इन मिशन-स्टेशनों की नींव मिशनरियों के द्वारा डाली गयी थी, लेकिन वास्तव में मंडली की बढ़ती भारतीय पादरियों, प्रचारकों और बुजुर्गों के कार्य का फल था। दुःख की बात है कि मंडली सरपंच के पद की महत्ता घटती ही गयी क्योंकि प्रचारकगण गांवों में गिर्जा करना, बैबल पाठ और आत्मिक-सेवा का भार अपने कंधों पर लेने लगे।

सन् १८७० ई० से ही यह एक मिशन

तय गया कि प्रचारकगण सप्ताह में चार दिन ईसाई भाईयों के बीच में और एक दिन अख्रिस्तानों के यहाँ काम करें, बाकी दो दिन विश्रामवार के उपदेश की तैयारी के लिए निश्चित थे। उन्हें प्रति चौदह दिनों में अपना कार्य-विवरण लिखना तथा तीन महीनों में एक बार रांची में निरन्तर-प्रशिक्षण-कोर्स में उपस्थित होना बहुत आवश्यक था।

सन् १८६६ ई० में पोलुस नेमो को कुरलिया-चर्च में पादरी पद का अभिषेक मिला। वह डूलो-जर्गो (Dulo-Jargo) का रहने वाला एक हिन्दू भाई था। वह पहला भारतीय पादरी था। लेकिन

Gossner Mission

कुछ ही दिनों के पश्चात् वे अपनी मंडली को छोड़कर एंगलिकन-चर्च की सेवा में चले गए। यह भी एक कारण है कि एक दूसरा नाम प्रधान पादरी के हैसियत से लिया जाता है। इस व्यक्ति का नाम था नथानिएल कुजुर। उनका पदाभिषेक २१ जुलाई १८७० ई० को चाईबासा में हुआ। बहुत वर्षों तक वे सिंहभूम के पिरिंग में बहुत ही अद्भुत ढंग और उत्साह से लोगों को ईश्वर का वचन सुनाए। उसे भी अधिक मशहूर एक उराँव पादरी हुए जिसका पदाभिषेक सन् १८७५ ई० में हुआ। वृद्धावस्था में सन् १९१९ ई०

Gossner Mission

को वे ओटोनामी चर्च के प्रेसीडेंट चुने गए।
उनका नाम था पादरी एच० डी० लकड़ा।

सन् १८७३ ई० को रांची में
थेयोलोजिकल सेमीनार की नींव डाली गयी।
उसी समय से यहां उन व्यक्तियों को प्रशिक्षण
दिया जाता है जो मंडली की वृद्धि और
देख-भाल का भारी उत्तरदायित्व अपने कंधों
पर लेते हैं।

गरीबी बहुत हद की और इस कारण
यह एक बड़ी कठिन बात कि किस प्रकार
मंडलियों को आर्थिक मामलों में आत्म-
निर्भर बनाया जाए। सन् १८७५ ई०
से प्रत्येक मंडली रुपया-पैसा का

Gossner Mission

हिसाब-किताब रखने लगी और सन् १९१३ ई० में तकरीबन से यह एक बहुत संदेश मिला कि चंदा और महसूल से आज इतनी आमदनी हो गयी है कि उसे सभी प्रकार का खर्च संभाला जा सकता है।

बहुत से स्कूलों के खोले जाने के फलस्वरूप खर्च ब अत्यधिक बढ़ गया। इन गाँवों के स्कूलों का देख-भाल करना बहुत ही आवश्यक था तथा शिक्षकों को आधा वेतन देने का भार मंडली के कंधों पर ही था। मां-बाप तो अनपढ़ ही थे, बच्चों का नियमित ढंग से स्कूल जाना भी असंभव था, क्योंकि

Gossner Mission

उनको भी माँ-बाप के साथ मैदान और खेतों में काम करना पड़ता था। लेकिन उन स्थानों में जहां छात्रावास भी थे उनकी स्थिति काफी ठीक थी। राँची के स्कूल को उदाहरण के लिए लिया जा सकता है जहां शिक्षकों, प्रचारकों और पादरियों को आवश्यकतानुसार प्रशिक्षण भी दिया जाता था। स्कूलों को अब सरकारी-सहायता भी मिलने लगी। ईसाई-स्कूलों के दो प्रकार के विशेष कर्तव्य थे: प्रथम, उन्हें बच्चों को कसौटी-धर्म की शिक्षा देनी पड़ती थी और द्वितीय, उन्हें इस प्रकार की शिक्षा देनी पड़ती थी जिससे भविष्य में उनको अच्छी नौकरियाँ भी मिल सकें।

Gossner Mission

केवल कुछ ही मामलों में इन स्कूलों का प्रभाव मिशनरियों की तरह हुआ, क्योंकि अख्रिस्तान बच्चे ख्रिस्तान बच्चों की तुलना में बहुत कम संख्या में स्कूल जाते थे।

बच्चों और बयस्कों को बसीदी ढंग से समझाने बुझाने के लिए बेबल और कहेकिस्म को स्वदेशी भाषा में अनुवाद करना जरूरी था। आरम्भिक काल में आए हुए मिशनरी सार्वजनिक हिन्दी भाषा को ख्रिस्तान आदिवासियों के लिए उचित समझते थे। मिशनरी सब सन् १८७० ई० से सुसमाचार प्रचार के प्रश्न लिए

Gossner Mission

आदिवासियों की भाषा ही को अधिक-से अधिक प्रयोग में लाने लगे। मिशनरी नीतरोत (Nommensen) नये-नियम के सुसमाचार को सन् १८७५ - १८९५ ई० के भीतर बुंडारी भाषा में अनुवाद किया और उसी समय से यह एक साहित्यिक-भाषा बन जाती है। कुछ ही दिनों के पश्चात् मिशनरी हान (Hahn) ने नये-नियम के सुसमाचार का अनुवाद उराँव भाषा में किया। तदुपरान्त लूथर के कटेकिस्म का अनुवाद विभिन्न आदिवासी-भाषाओं में होने में देर नहीं लगी। ईश्वरीय-वचन के प्रचार के कार्य में मसीही-संगीत और भजन केवल एवं

Gossner Mission

कटेकिस्म से अधिक प्रभावशाली प्रमाणित हुए। सर्वप्रथम जर्मन-गीतों को अनुवाद किया गया और सन् १८७० ई. में पहले-पहल "साक्षी वाणी" के रूप में छापा गया। उसी वक्त अनगणित मसीही-भजन लिखे और छापे भी गए। इस प्रकार के कुंडारी भजनों का कवितीकरण सर्वप्रथम पादरी नथानियल द्वारा सम्पन्न हुआ तथा सन् १८७२ ई. में उनका प्रकाशन भी हुआ। उरांव भी इस विषय में पीछे न रहे। कुरुलिया के बंगाली क्रिस्तानों ने भी मसीही भजन पुस्तक निकाला।

सन् १८७२ ई. को रांची में चर्च द्वारा

Gossner Mission

एक छापाखाना की नींव डाली गयी। अब, स्कूल के लड़कों के लिए और धार्मिक-विषयों से सम्बंधित पुस्तकों को छापना भी आसान हो गया। थियोलोजी के विद्यार्थियों के लिए यह बहुत ही लाभदायक था। १ दिसम्बर १८७२ ई० से अर्धमासिक-पत्रिका धर्मबन्धु का प्रकाशन होना आरम्भ हुआ। इस पत्रिका की संख्या सन् १९१० ई० में एक हजार से भी अधिक बढ़ गयी।

तत्कालिन वर्षों में जब मंडली की वृद्धि के बारे जब हम बातें करते हैं तो हमें आसाम में सुसमाचार प्रचार के काम को कदापि नहीं भूलना चाहिए। सन् १८९२ ई० में

Gossner Mission

दो प्रचारकों को एक विशेष भार देकर आसाम भेजा गया कि वे वहाँ के चाय-बागानों में काम करने वाले छोटानागपुर से गए आदिवासियों को ईश्वर का वचन सुनावें। वहां पहुंच कर उन्होंने बड़े उत्साह से मिशन-कार्य शुरू किया। सन् १९०० ई० से मिशनरियों, पादरियों और प्रचारकों ने वहां नियमित रूप से काम आरम्भ किया। बैथमंगा, ओरहत और तिनसुकिया में गरीही-मंडलियां बनने लगीं। सच्ची बात है कि वहां इन ईसाईयों की संख्या सन् १९१४ ई० तक करीब तीन हजार ही थी।

इसके विपरीत इस वर्ष के

Gossner Mission

सभी लुथेरान ईसाईयों के गणनानुसार एक लाख व्यक्तियों को बपतिस्मा दिया जा चुका था।

दूसरा अध्याय

गोसनर चर्च को आत्मनिर्भरता की प्राप्ति

१९१९

१. मिशनरियों का देश छोड़ कर जाना

ई. सन् १९१४ के अगस्त महीने में विश्व-युद्ध छिड़ गया। इस भयंकर युद्ध में युरोप के देश भयानक रूप से लड़ पड़े। इसका असर छोटानागपुर के लुथेरान आदिवासियों पर पड़े बिना न रहा।

Gossner Mission

गोरानार चर्च के इतिहास में एक अध्याय का अंत हो जाता है जब सन् १९१२-१३ ई० में मिशनरी हान की मृत्यु हो जाती है और डा० नोतरोत जर्मनी वापस लौट जाते हैं। इन्होंने चालीस वर्षों से भी अधिक छोटानागपुर की मंडलियों की सेवा की। नए प्रेज़ेस (Präses) जे० स्तोस (J. Stosch) हो जाते हैं। उसकी अगुवाई में मार्च १९१४ ई० को जर्मन-मिशनरियों के बीच पहला जेनेरल ~~कंफ्रेंस~~ कंफ्रेंस हुआ। इस कंफ्रेंस में एक नए विषय पर काफी बहस हुई, जिसके अनुसार बाल्टिक में क्यूरोलोरियन ने यह निश्चय किया कि चर्च आत्म-निर्भर हो एवं

Gossner Mission

धीरे-धीरे आदिवासियों के हाथों में सारा उत्तरदायित्व सुपुर्द कर दिया जाए।

विश्व-युद्ध के कारण क्युरोहोरियम के विचारों को कार्यान्वित नहीं किया जा सका। सन् १९१५ ई० के जून और जुलाई महीनों में जर्मन-मिशनरियों को सपरिवार अंग्रेजों ने कैद कर लिया और इस प्रकार उनको छोटानागपुर छोड़ना ही पड़ा। यहां तक की लोगों से विदाई लेने का अवसर तक उन्हें नहीं मिला। बहुतों ने मन-ही-मन में सवाल किया होगा: "क्या अब सब चीजों का अंत हो गया?" कुल मिलाकर छत्तीस मिशनरियों और पांच सिस्टरों को अचानक अपना

Gossner Mission

काम छोड़ना पड़ा, फलतः मंडलियों और मिशन-स्टेशनों में उनकी सेवा का अभाव बहुत महसूस होने लगा। सन् १९१४ ई. से जर्मनी से किसी प्रकार की सहायता नहीं पहुँचने लगी। मकानों और स्कूलों का देख-भाल करना आवश्यक था। पादरियों, प्रचारकों एवं शिक्षकों का जीवन बहुत ही खतरे में पड़ गया। लेकिन मसीहियों का उत्साह बना रहा। वे हताश नहीं हुए। इस दुर्वस्था में पादरियों ने मिशनरियों का कार्य का भार अपने सिरों में लेने का प्रयत्न किया। लेकिन थेयोलोजिकल-सेमीनार को शिक्षकों की त्रुटि के कारण बंद करना ही पड़ा।

Gossner Mission

अतः मंडलियों ने अधिक-से-अधिक दान देने लगे। गोसपल-चर्च का लोक काफी इच्छा हुआ जब सरकार ने यह निश्चय किया कि (एंगलिकन चर्च के बिशप वेस्टकोट (Westcott) लगभग तीन सौ गोसपल मिशन स्कूलों का देखभाल का भार अपने कंधों पर ले। काफी सरकारी सहायता भी मिलने लगी, परंतु प्रायः सभी मकानों और चर्च के जायदाद को सरकार ने जब्त कर लिया। बिशप वेस्टकोट मिशनरियों की इच्छा के अनुसार गोसपल चर्च के पादरियों की सहायता के लिए तैयार थे। अतः निश्चय हुआ कि भारतीय पादरी ही मंडलियों के काम का उत्तरदायी संभाले,

Gossner Mission

कि सक्रामेंत और दृढ़िकरण भारतीय पादरी ही देवें और गिर्जों में लुथेरान - आराधना ही अख्तार में लाया जाए। बिशप वेस्टकोट ने इस निश्चय के विरुद्ध कभी ध्यान नहीं किया। वे एक सच्चे मित्र की तरह अमरीकी और भारतीय मित्रों से रुपया - पैसा लेकर गोसनर चर्च की सहायता बहुत ही सफलतापूर्वक किए।

सन् १९१६ के २०-२१ मार्च को रांची में मंडली-सिनोद की तैयारी हुई जिसमें कुल चौवालिस पादरियों में अड़तीस पादरियों ने भाग लिया। इसके अतिरिक्त बहुत से प्रचारकगण, शिक्षक और उत्तरदायी व्यक्ति भी वहां उपस्थित थे।

Gossner Mission

यहां काफी जोरों से यह विचार-विमर्श हुआ कि कैसे मसीही-मंडलियों की आमदनी बढ़ाई जाए। मंडली-सेवा तेरो विषय भी सभा के कार्य-सूची (Agenda) में थे। इस सभा का खास उद्देश्य था मिशन-क्षेत्रों को नए ढंग से संगठित करना। अब मिशन-क्षेत्रों को चार प्रमुख इलाकों में बाँट दिया गया। पादरी हनुक दंगो लकड़ा उस वक्त सेन्ट्रल कमिटी के चेयरमैन थे। उनके एक विवरण के अनुसार मंडलियों के निम्नलिखित तीन प्रमुख समस्याओं को सुलझाना बहुत ही आवश्यक था:-

प्रथम, मंडलियों का आत्मनिर्भर होना (Self-supporting)

Gossner Mission

द्वितीय, मंडलियों का आत्मशासन

(self-governing)

तृतीय, मंडलियों की आत्मवृद्धि

(self-evangelizing)

ये तीन बातें अवश्य ही बहुत संक्षिप्त हैं, लेकिन ये गोसनर चर्च के ऑटोनोमी होने की बहुत बड़ी लालसा को प्रकट करते हैं। इसी समय उत्तरी अमेरिका के लुथेरान सिनोद से छोटानागपुर के गोसनर चर्च की मंडलियों को निरीक्षण में लेने का प्रस्ताव डाला गया। लेकिन वर्लिन के ब्यूरोक्रेटरियम ने इस प्रस्ताव को सधन्यवाद अस्वीकार कर दिया तथा गोसनर चर्च के प्रभावशाली पादरियों को

Gossner Mission

अति आवश्यक मामलों में उचित एवं योग्य कंडिडेट मिलने पर पदाभिषेक देने का पूर्णाधिकार दिया गया। परन्तु यह अधिकार-पत्र गोसनर चर्च के पास पहुँच नहीं पाया।

डा० जॉन मोट (Dr. John Mott) द्वारा प्रवर्तित अमरीकी आर्थिक-सहायता गोसनर चर्च को मिलती ही जाती है। यह विचार कि जर्मन मिशनरी अब कभी भी वापस लौटकर नहीं आएंगे सन् १९१७ ई० से और पकड़ता गया। विशप वेस्टकोट भी कहने लगे कि अब वह दिन आ पहुँचा है कि किसी प्रकार का "सेटेलमेंट" हो जाए।

Gossner Mission

2. जाँच - पड़ताल

सन् १९१६ ई॰ को बिशप वेस्टकोट ने मेशानल मिशन कौंसिल को इस अनुमति के लिए निवेदन किया कि छोटानागपुर के लुथेरान गोसनर मंडलियों को एंग्लिकन चर्च से मिला दिया जाए। भारतीय एवं जर्मन लुथेरानों ने बिशप वेस्टकोट की इस चाल पर आपसी खूब आलोचना किया। दो वर्षों तक उसने अच्छे सलाहकार के रूप में बड़े परिश्रम और विश्वस्तता से लुथेरान मंडलियों की सहायता की। इस कठिनाई भरी स्थिति में वे मन-ही-मन वे एक उपाय की खोज में थे जिसे

एंग्लिकन चर्चों फिर से मिल जाएं।

ऐसा मालूम होता है कि वे अब कुछ ही

दिनों में मिल जाएंगे। एंग्लिकन

मिशनरी कैनोन कोसग्रेव (Canon Cosgrave)

ने अपने एक स्मृति पत्र (memoradum)

में निम्नलिखित प्रस्ताव सामने पेश किया कि

: दोनों चर्चों को मिलाकर एक ऐसा चर्च

बनाया जाए जिसमें लुथेरान और एंग्लिकन

चर्च की अपनी अलग-अलग विशेषताएं

बनी रहे। लुथेरान चर्च के सुधार-पर्व

को ग्रहण कर लिया जाए तथा जो भी

पदाभिषेक और दृढ़िकरण लुथेरानों के

बीच हो चुका हो उसे स्वीकार कर

लिया जाए। लेकिन भविष्य में

Gossner Mission

इस प्रकार का कार्याधिकार केवल

एंगलिकन बिशप के हाथ रहे।

लुथरानों ने एंगलिकन चर्च की

सहायता को सधन्यवाद स्वीकार किया।

लेकिन उन्हें जब उल्लिखित प्रस्ताव के बारे

में मालूम हुआ तो न केवल लुथरान पादरी बल्कि

जन-साधारण लोग भी आका डोरों से विरोध

करने लगे। इसी बीच रांची में एक

घटना हुई जिसके कारण जनसाधारण

विरोध और भी बढ़ गया। एंगलिकन

चर्च की यह इच्छा थी कि अन्धों के

स्कूल को और भी बढ़ाया जाए। इसके

लिए जमीन की जरूरत थी। अतः बिशप

यह प्रयत्न करने लगा कि सरकार

Gossner Mission

उन्हें लुथेरान कम्पाउंड के अंदर एक टुकड़ी प्रदान दे ताकि अनुयायों के लिए मकान बनाया जा सके। लुथेरानों ने सफलतापूर्वक सरकार के पास इसका कड़ा विरोध किया। इस मामले में पतरस कुशद — जो मंडली के एक सदस्य और सरकारी सेवक थे ने बहुत जोरों की आवाज उठायी। उसके कड़े प्रतिरोध तथा बहुत ही अच्छे शिक्षा के कारण एक जनसाधारण हस्ति होकर भी वे इन कठिनाई भरे वर्षों में गोसपल चर्च के नेता बने।

यह दुःख की बात है कि विरोध कुछ विशाल और हिम्मत नहीं हारने वाले लुथेरानों के बीच तनाव बढ़ता ही गया।

Gossner Mission

यह हाल देखकर नेशनल मिशनरी कौंसिल के एक्जीक्युटिव कमिटी ने १ली मार्च १९१९ ई० को छोटानागपुर में एक जाँच-कमिशन ~~[illegible]~~ बैठाने का फैसला किया, जिसका कर्तव्य था गोसनर-चर्च के अनुयायी ईसाईयों की इच्छा का जाँच-पड़ताल करना तथा यह पता लगाना कि वे मंडलियों के भविष्य के बारे क्या चाहते हैं। डा० दत्ता (CVJM Lahore) और प्रो० मुकर्जी (Serampore) जैसे भारतीय सदस्य तथा बियोंड मिशन इन बिहार (Beyond Mission in Bihar) के मिशनरी डा० फेल्ट (Felt) इस कमिशन के सदस्य थे।

Gossner Mission

बड़ी कठिनाई के साथ उन्होंने यह तय किया कि डा० दत्ता और डा० फील्ड रांची जिला के पश्चिमी एवं प्रो० मुकर्जी और मिस्टर होज (Hodge) पूर्वी भाग का निरीक्षण करेंगे। २० मई से लेकर १० जून तक उन्होंने विभिन्न मंडलियों का भ्रमण किया और बड़ी सतर्कता के साथ उन्होंने एक लिखित विवरण मंडलियों के सामने पेश किया। उन्होंने निम्नलिखित चार विभिन्न तरह उपाय मंडलियों के शासन के निमित्त प्रस्ताव किया :-

१) एकलिकन चर्च के साथ मिल जाने की संभावना,

२) दक्षिण-भारत के अमरीकी लुथरानों

Gossner Mission

द्वारा स्वीकृत अथवा अस्वीकृत किया जाना,

3) नेशनल मिशन सोसाईटी के नुयंरान अंग द्वारा स्वीकृत अथवा अस्वीकृत किया जाना, और

4) स्वतंत्रता की समस्या।

वाद-विवाद साधारणत: छः से सात घंटों तक होता है। उपस्थित होने वाले मंडलियों के सदस्यों की संख्या तीन सौ से एक हजार के बीच घटती बढ़ती है। आश्चर्य की बात है कि सभी मंडलियों में सर्व-सम्मति का परिणाम एक ही प्रकार का निकला। सभी जगह लोगों ने जाँच-कमिशन के इस प्रस्ताव को कि एंगलिकन चर्च के साथ मिल जाना चाहिए,

Gossner Mission

इन्कार कर दिया। क्योंकि विशप के अधिकार, एंगलिकनों के दृढ़िकरण के नियम एवं विश्वास का परिवर्तन लुथेरानों के लिए ग्रहणीय नहीं था। भारतीय नेशनल मिशन सोसाईटी के नियंत्रण में भी उन्हें आने की इच्छा नहीं थी, उसके विपरीत स्वतंत्रता की सामान्य-मांग लोगों के मन में बसी हुई थी। लेकिन उनका यह भी विचार नहीं था कि स्वतंत्र होने का अवसर अभी तक नहीं आया है। जमीन-जायदाद, रुपया-पैसा का देख भाल और शासन तथा नेताओं के प्रशिक्षण कार्यों के मामलों में वे विदेशी सहायता छोड़ना नहीं चाहते थे। पूर्वी देशों की

Gossner Mission

मंडलियों की अपेक्षा पश्चिमी क्षेत्र की मंडलियों में जहां उरांवों की संख्या अधिक थी लोगों में आत्म-शासन का विश्वास अधिक था। मंडलियों के दोनों वर्गों की अभिरुचि एवं गंभीरता से जांच-कमिशन प्रभावित हुए बिना नहीं रहा। "मन में विश्वास वसे विश्वास के प्रति लोगों की निष्कपट भक्ति जो देखने को मिलती है, हमारे लिए एक बड़े आनन्द की बात है।"

यदि जांच-कमिशन पड़ताल के उल्लिखित परिणामों पर कुछ समय के लिए कुछ भी ध्यान न दिया जाए तथापि लोगों को प्रश्न

Gossner Mission

पूर्वना वास्तव में गोसनर चर्च के लिए एक बड़ी घटना थी। अब तक जर्मन-मिशनरी मंडलियों में प्रतिनिधित्व किए और आवश्यकता पड़ने पर सलाह देकर मंडलियों की सेवा किए, लेकिन गोसनर-चर्च के ईसाईयों ने सन् १९१९ ई० में जिस दृढ़ता और एकता के साथ अपना उत्तरदायित्व पहचाना एक प्रशंसनीय बात है। एंगलिकनों का यह दोषारोपण कि पादरियों ने लोगों को कमिशन के आगे के पहले फुसलाया, निराधार है। विवरण से यह साफ पता चलता है कि किसी प्रकार का फैसला होने के पूर्व काफी ओरों से वाद-विवाद हुआ।

Gossner Mission

चर्चों को बनने में बहुत साथ दिया तथा रांची में इसने एक सभा भी बुलाया। इस कौंसिल के सदस्य विशेषतः विभिन्न मिशनों के प्रतिनिधि हुआ करते थे, लेकिन अब यह प्रस्ताव किया गया कि इसके प्रतिनिधि भारतीय चर्चों के व्यक्ति हों और कम-से-कम आधे सदस्य भारतीय हों और "नेशनल मिशन कौंसिल" को "नेशनल क्रिश्चियन कौंसिल" में बदल दिया गया। इसका कर्तव्य था विभिन्न चर्चों और मिशनों के आपसी ~~सम्बंधों~~ मतभेद को दूर करना, उनके आपसी सम्बंधों को मजबूत

Gossner Mission

को ३० जुलाई को रजिस्ट्री कर दिया गया।

इस बीच में भारत के और भी अन्य चर्चों से सम्बंध की स्थापना हुई। सबसे पहले दक्षिण-भारत के लुथेरानों से ~~दक्षिण~~ सम्बंध स्थापित किया जाता है। दक्षिण भारत के गुंटूर मिशन के अमरीकी लोगों की उपस्थिति तथा सेंट्रल आफ्रिका कौंसिल को सलाह और सहायता देना भी एक कारण था जिससे दोनों में घनिष्ठता का सम्बंध हो गया। इस सिलसिले में नेशनल मिशन कौंसिल का नाम स्मरणीय रहेगा; इसने गोसनर

Gossner Mission

प्रेसीडेंट का निर्वाचन होता है ; एक सेक्रेटरी और एक खजान्ची भी आफिस के काम के लिए चुने जाते हैं। इन तीन सदस्यों के अतिरिक्त चर्च कौंसिल के लिए छः पादरी और चार साधारण सदस्यों का चुनाव तीन वर्षों की अवधि के लिए होता है। प्रान्तकपानों और इलाकों से महासभा (सिनोड) में प्रतिनिधि भेजने का तथा चर्च के विशेष कार्यों के लिए जरूरत पड़ने पर समितियाँ (Standing Committees) बनाने का नियम बनाया गया। इस संविधान का "सोसाईटी रजिस्ट्रेशन एक्ट" द्वारा कचहरी में सन् १९३१ ई०

Gossner Mission

यहां यह विचार किया जाता है कि जर्मन और छोटानागपुर के लुथेरानों के बीच का सम्बंध बना रहेगा अथवा इसे फिर से कायम किया जाए।

सन् १९२० ई० के २३ नवंबर को गोसनर-चर्च के प्रतिनिधियों ने चर्च के संविधान को ग्रहण कर लिया। इस संविधान की रूप-रेखा पहले से ही पादरियों ने तैयार कर रखा था और मंडलियां इसके तौर जानती थीं इस संविधान में ईश्वर के वचन के प्रति निष्कपट विश्वास और सुधारात्मक शिक्षा की बातें मिलती हैं। पादरियों के बीच से एक

Gossner Mission

सन् १९२० ई० के २० और २१ की नवंबर को चर्च के "छोटानागपुर में लुथेरान मिशन का पचहत्तर वर्षीय जुबिली दिवस" मनाया जाता है। हजारों व्यक्तियों ने इसमें भाग लिया और अन्य बाहरी-मेहमानों (guests) पर चर्च के द्वारा जीवन का बहुत ही प्रभाव पड़ा। वर्तमान अतिथि इसमें भाग नहीं ले पाते हैं, क्योंकि उन्हें किसी प्रकार की सरकारी अनुमति नहीं मिलती है। लेकिन इसके बदले लोगों के द्वारा समूह के सामने क्युरोलोरियस का एक पत्र (Pastoral Letter) पढ़ा जाता है, और

Gossner Mission

सरल नहीं था।

आँतोनोनी गॉसनर चर्च को एक संगठन की जरूरत होती है। सन् १९२० ई. के मार्च महीना में मंडलियों की सभा होती है और इसके निर्णयानुसार "सेन्ट्रल कमिटी" को "चर्च-कौंसिल" में बदल दिया गया। उत्तरदायी रखने वाले लोग अपने ऑफिस में रह जाते हैं। एक समिति चर्च के लिए एक संविधान बनाने के कार्य में लग जाती है और इस काम में अमरीकी मिशनरी रेव. हूपले बहुत मदद देते हैं। आँतोनोनी चर्च में हालसे पहली बार दो कंडिदातों को पादरी-पद का अभिषेक दिया जाता है।

Gossner Mission

बहुत से मंडली के सदस्य अब भी शंकित थे, और बीते दिनों का स्मरण करते थे। वे यह चाहते थे कि पुराने मिशनरी वापस आ जाएँ, अथवा उनकी यह भी आशा थी कि नयी अमरीकी सहायता फिर मिलेगी। यहां हमें एक विशेष बात देखने को मिलती है, भारतीय अगुवाई में मंडली-कार्य और आदिवासियों के मध्य मिशन का काम और खासकर जयपुर में काफी सुंदर ढंग से चलता है, लेकिन संगठन, स्कूल एवं धर्मशास्त्री के प्रशिक्षण के क्षेत्रों में आत्मशासन (autonomy) को सर्वत्र ले जाना

Gossner Mission

तीसरा अध्याय

गोसनरचर्च पुराने भारत में
(१९२० - १९५६ ई)

१. पहली चर्च कौंसिल के नेतृत्व में (१९२०-१९२४)

सन् १९१९ ई० के हलचल भरे महीनों के बाद लोगों के पास न समय और न ही कोई कारण था कि वे प्राप्त किए ओटोनोमी के लिए घमंड करें। १० जुलाई १९१९ ई० को एक कठिन मार्ग का आरम्भ होता है। चुने हुए व्यक्तियों में विशेषकर सेक्रेटरी पतरस हुराद एक विशेष लक्ष्य लेकर इस रास्ते में चल पड़ते हैं।

Gossner Mission

(Central Committee) निम्नलिखित धन्यवाद-

पत्र निकालती है : छोटानागपुर और

आसाम के लुथेरान चर्च की सेन्ट्रल कमिटी

~~कमिटि~~ विशप वेस्टकोट को ~~[illegible]~~ उनकी

अच्छी सेवा, सलाह और सहायता के लिए,

जिसे लुथेरान मसीहियों ने बीते चार वर्षों

में लौकिक और अलौकिक विषयों में

उनके हाथों से पाया हृदय से धन्यवाद

देती है। " इन सब बातों के होते हुए

भी प्रोटेस्टेन्ट और लुथेरान लोग एक

दूसरे से दूर रह जाते हैं, लेकिन उनका

सम्बन्ध सरल नहीं रहता है। चर्च की

एकता के बारे आने वाले वर्षों में किसी

प्रकार का बात विचार नहीं होता है।

Gossner Mission

ट्रस्टी बोर्ड का काम था मिशन के जायदाद की देखभाल और उसका शासन करना। दो अंग्रेज सरकारी व्यक्ति भी इस बोर्ड के सदस्य थे। यह बोर्ड यह आशा देती है कि जायदाद को बिना किसी प्रकार का परिवर्तन लाए ही चर्च को दे दिया जाएगा। ९ मई १९४० ई० को एक सरकारी हुकुम के अनुसार अंत में चर्च को यह जायदाद सदा के लिए दे दिया गया।

इसके साथ ही एंग्लिकन-विशप के सेवा-कार्य का अंत हो जाता है। अंतिम घटनाओं के कारण दोनों चर्चों के बीच कुछ तनाव आ गया था, लेकिन १८ अगस्त को केन्द्रीय समिति

Gossner Mission

कोई सहायता की आशा करना व्यर्थ था।

लेकिन तत्कालिन समय के

प्रेज़ीडेंट नोतरोत ने अपनी हिन्दी में लिखे

धार्मिक-पुस्तिकाओं (Occasional emoluments)

के नमूने पादरियों के लिए भेजा।

इसी वक्त नेशनल मिशन कौंसिल

ने उल्लिखित बोर्ड को इस बात के लिए

अधिकृत किया कि वह चर्च के केन्द्रीय-

समिति को सलाह वगैरह दे। बुधेराम-

अमेरिकन रेव० जी० ए० रुपले (Rev. G.A. Rupley,

इसके सेक्रेटरी बनते हैं और अब वे

रांची ही में रहने लगते हैं। वे विशेषकर

शिक्षात्मक कार्यों पर अधिक ध्यान

देते हैं।

Gossner Mission

पर पतरस हुराद ने इन्हें गोसनर-मिशन की छत्रछाया में लाने का प्रयत्न किया लेकिन उसमें वे सफलीभूत नहीं न हो पाए।

लर्बिन के क्यूरोटोरियम सन् १९१९ ई. के इस महत्वपूर्ण निर्णयात्मक वर्ष में साथ दे नहीं सकी, लेकिन उसे जब यह समाचार मालूम हुई तो उसके आनन्द की सीमा न रही और नवविकसित चर्च को अपना आशिर्वाद और शुभकामनाएं इस प्रतिज्ञा के साथ भेजी कि वह नए चर्च को अपने कामों और विचारों से सहायता देगी (22 जनवरी १९20)। जर्मनी युद्ध में हार गया था, इस कारण वहां से किसी प्रकार की

Gossner Mission

भी देने की आशा दिलाया। साहस और बुद्धिमानी इस बात से भी दिखलाई पड़ती है कि आसाम की लुषेराम मंडलियाँ आरम्भ से ही स्वतंत्रता-घोषणा (Autonomy Declaration) से शामिल थी। और इस कारण इसका सम्बंध गोसनर-चर्च से विधिपूर्ण और गहरा होता गया। कुछ छोटी मंडलियों की नींव गंगा नदी के पार और मुजफ्फरपुर के इलाके में गोसनर मिशन द्वारा डाली गयी थी, लेकिन ये गोसनर मिशन के अधीन नहीं रह सके, क्योंकि ये मंडलियां इस बीच मेथोडिस्ट और प्रेसबिटेरियनों के कार्य-क्षेत्र में चले गए। ईश्वी सन् १९२० में

Gossner Mission

रुपया जमा करने का प्रयत्न करेगी।

यहीं एक स्वतंत्र (autonomous) एवं आत्मशासित गोसनर एवंजेलिकल लुथेरान चर्च का जन्म हुआ। मंडलियों में लोगों का लुथेरान विश्वास इतना दृढ़ था कि वे "युनियन-चर्च" के बाहरी और तौर से लाभदायक प्रस्ताव को भी अस्वीकार कर दिए। यह निर्णय तो सन् १९१२ ई. की मूरबगरी के बाद बुजुर्गों ने किया, ऐसा विचार किसी घमंड अथवा आत्म-रक्षा की प्राप्ति के लिए नहीं किया गया, परन्तु इस संकट की घड़ी ने बुद्धिमानी के साथ ऐसे मार्ग में जाने का उपाय दिखलाया और साथ में बाहरी सहायता

छोटानागपुर और आसाम के लुथेरानों के हित को सामने रख कर जमीन-जायदाद का देख-भाल करेगी,

ख) कि नेशनल मिशनरी कौंसिल एक छोटानागपुर लुथेरान एडुकेशनल एडवेंडारी बोर्ड कायम करेगी जो इन संस्थाओं के ~~प्रति~~ निमित सरकार के प्रति उत्तरदायी होगी

ग) कि सेन्ट्रल कमिटी की कार्यकारिणी सभा (Executive) शिक्षा देने वाली संस्थाओं का निरीक्षण उल्लिखित बोर्ड के विचार-विमर्श और अगुवाई में करे

घ) यह बोर्ड, यदि इन संस्थाओं को कभी आर्थिक सहायता की आवश्यकता पड़ जाए तो अपनी सारी योग्यता के साथ अधिक-से-अधिक

Gossner Mission

सबसे विषम समस्या को सुलझाने के लिए तैयार हैं और यह घोषित करते हैं कि हम इस चर्च के शासन कार्यों में

ओटोनोमी

का बहुत भारी उत्तरदायित्व अनुग्रहमयी सरकार के पिता तुल्य देखरेख में इस बड़े विश्वास और आशा से अपने हाथों में लेते हैं कि वह हमारी शिक्षात्मक-संस्थाओं को आर्थिक-सहायता उस समय तक देगी जब तक हमारी स्थिति इस भारी बोझ को अपने कंधों पर उठाने के योग्य न हो जाए, और हमारी ये शर्तें हैं :-

क) कि ट्रस्टी (Trustee), जिसकी नियुक्ति इसके बाद होगी सिर्फ

Gossner Mission

एवंजेलिकल लुथेरान मिशन के बिहार और उड़ीसा प्रांत में पड़े जमीनजायदाद एक ऐसे मिशन को मिले जिसमें औरों की संख्या अंग्रेजों से अधिक हो अथवा ऐसे कार्यक उसका संचालन करते हों जो अंग्रेज नहीं हैं। हमने अंग्रेजों के मध्य लुथेरान मिशन ढूंढ़ा और नहीं पाया, इसलिए हम सब सेन्ट्रल कमिटी के सदस्य तथा लुथेरान चर्च, छोटानागपुर और आसाम के सभी प्रतिनिधि मिलकर यह निवेदन करते हैं कि यह अमूल्य लुथेरान-विश्वास जो हमें अपने पूर्वजों से मिला है कि रक्षा तथा छोटानागपुर के लुथेरान चर्च मिशन के इतिहास में आप उसके भविष्य के

Gossner Mission

१० वीं जुलाई के दूसरे प्रहर को जाँच-कमिशन तीसरी बार सिनोद के साथ बैठी। वहाँ पतरस हुराद ने पचासी व्यक्तियों से हस्ताक्षर किया हुआ एक प्रमाणपत्र (document) पढ़ा। ~~[illegible]~~

यह पत्र "गोसनर चर्च, छोटानागपुर और आसाम के प्रतिनिधियों का निर्णय" से प्रसिद्ध हुआ। इसमें निम्नांकित बातें थी :-

ईश्वर के अनुग्रह से।

क्योंकि जाँच-कमिशन ने हमें यह सूचित किया है कि राजप्रतिनिधि (Governor-General in Council) किसी भी परिस्थिति में ऐसी अनुमति न देगी जिसे गोसनर

Gossner Mission

बना रहेगा, कोई भी बुद्धिमान मनुष्य के
मन में यह विचार नहीं आएगा जो हमें
इस बात के लिए आभार अथवा बल
प्रयोग करे कि हम अपने वार्ता-चर्च को,—
यदि वह जीवित रहेगा और हमारी सेवा
के लिए तैयार रहेगा, त्याग दें।"
यह प्रमाण-पत्र पादरी हनुक दत्तो एवं
पतरस हुसाद द्वारा हस्ताक्षर किया गया
था। कुछ ही समय के वाद-विवाद
के पश्चात् सभा का भंग कर दी
गयी और महासभा इस अवसर में
और भी परामर्श करना चाहती थी,
क्योंकि जांच कमिशन ने कुछ
नए प्रस्ताव पेश किया था।

Gossner Mission

लुथेरानों के विरुद्ध था।

परिस्थिति में परिवर्तन आ जाने के कारण महासभा को फिर से विचार करना पड़ा। ६ जुलाई को महासभा ने एक नया प्रस्ताव सन्मुख रखा। तदनुसार चर्च का कार्य नेशनल क्रिश्चियन कौंसिल के हाथ छोड़ दिया गया। लेकिन उसमें एक विशेष पाबन्दी रखी गयी कि चाहे किसी प्रकार का भी निर्णय हो मिशन-कार्य करने का लुथेरानी-ढंग सदैव बना रहे।[66] ये हमारा बाता-चर्च है। जब तक यह भारत और इस संसार में बना रहेगा — और यह हमारा दृढ़ विश्वास है कि यह दुनियां के अंत लोग

इसी बीच जाँच कमिशन ने एक पत्र निकाला। भारत-सरकार ने यह पत्र बिहार और उड़ीसा-सरकार को लिखा था, इस पत्र को वहां से ४ जुलाई को आगे बढ़ाया गया। इसमें कहा गया, गोसनर मिशन का जमीन-जायदाद संभवतः एक ऐसे मिशन को सुपुर्द किया जाए जो छोटानागपुर में पहले से ही काम करता आया हो। सरकार ऐसी अनुमति देने के लिए कभी तैयार नहीं होगी जिसे जमीन-जायदाद एक ऐसी मिशन सोसाईटी को मिले जिसमें औरों की संख्या अंग्रेजों से अधिक हो। इस नियम का प्रस्ताव रांची में सरकारी अफसरों ने किया था और यह अमेरिका

Gossner Mission

इस स्मरण-पत्र में नेशनल क्रिश्चियन कौंसिल के सामने निम्नांकित तीन बातें रखी जाती हैं:-

क) मंडलियों की आत्मनिर्भरता अभी तक संभव नहीं

ख) चर्चों का भविष्य जब तक ठीक न हो तब तक एंग्लिकन चर्च के साथ मिल जाने के प्रश्न पर वाद-विवाद न हो। यह सब काम भविष्य के हाथों में छोड़ दिया जाए।

ग) अमरीकी लुथरनों को यह अनुमति दी जाए कि वे आगे भी आदमी और आर्थिक सहायता देकर उनके मध्य मिशन का काम करें।

Gossner Mission

गोसनर चर्च की पहली महासभा कहा जा सकता है। बाद में विरोधियों का यह सोचना कि पादरियों ने मंडलियों से केवल उन बातों को सभा में लाया जिनका आचार-विचार उनसे मिलता-जुलता था निराधार है। वास्तविकता कुछ और ही है। सन् १९१९ ई. के २, ३ और १० वीं जुलाई को जो प्रस्ताव पास किया गया वह ठीक उन परिणामों के समतुल्य है जिसे जाँच-कमिशन मंडलियों की इच्छा कहती है। २ जुलाई को जाँच-कमिशन को एक स्मृति-पत्र (Memorandum) मिलता है, जिसमें सेन्ट्रल कमिटी के सदस्यों तथा सत्तासी प्रतिनिधियों ने हस्ताक्षर किया था।

Gossner Mission

"हमारे सामने चतुरता बुद्धिमानी के साथ कुछ तीक्ष्ण सवाल रखे गए और पूछने वाले मंडली के बहुत ही साधारण सदस्य थे," ऐसी बातें विवरण में हम देख सकते हैं।

जुलाई महीना के आरम्भ में जाँच-कमिशन सभी मंडलियों के प्रतिनिधियों - पादरियों और सदस्यों को एक सभा के लिए निमंत्रित करती है।

3 स्वतंत्रता (autonomy) की घोषणा

इस सभा में छह मंडलियों के सभी प्रतिनिधियों ने भाग लिया। तथापि इन प्रतिनिधियों का चुनाव नियमानुसार नहीं हुआ था तथापि इस सभा को

Gossner Mission

करना तथा बहुत से क्षेत्रों में ~~सहयोग~~ मिलकर काम करने के लिए प्रोत्साहन देना।

इस बीच आयरीकी लुथेरानों ने गोसनर-चर्च को बहुत ही सहायता दिया, और यह खुशी की बात है कि अब इसका फल प्रकट होने लगा। बोर्ड के सेक्रेटरी रेव० स्पले के प्रयत्नों के फलस्वरूप मकानों के देखभाल और मरम्मति के लिए बहुत रुपया मिला और खर्च किया गया। स्कूल के कामों के विषय में भी वे शीघ्र ही सरकारी पदाधिकारियों ~~का~~ के विश्वासपात्र बन जाते हैं, फलतः सरकारी सहायता

Gossner Mission

भविष्य में भी मिलती है। डॉ० रेव० स्पाले की जगह रेव० कन्नाडे (Rev. Cannaday) आते हैं तो 222 स्कूलों की दशा अच्छी थी। उनकी संख्या में इसलिए कमी आ गयी थी, क्योंकि तीन वर्षों में कुछ ग्रामीण-स्कूलों को बन्द कर दिया गया था। एक दूसरे अमरीकी मिशनरी श्री स्पेंगलर (Mr. Spangler) सफलतापूर्वक स्कूलों के स्तर को ऊँचा उठाने का प्रयत्न किया। गोसनर-चर्च के पद्रह नवयुवक मसीहियों को ऊँची शिक्षा प्राप्त करने के लिए छात्रवृत्ति मिलती है, उनमें चार छात्रों को अमेरिका जाना पड़ता है। सबसे पहले छात्रवृत्ति पाने वाले

Gossner Mission

विद्यार्थियों में श्री जुस्त लकड़ा, जो उस समय गोसनर हाई स्कूल में अध्यापक थे, सन् १९२३ई. को मेफुड (Maywood/Illinois) के नुथेरान सेमिनारी में चले जाते हैं। तदुपरान्त उसके पीछे जाने वालों में जे. जे. पी. तिग्गा, जे. बरला और सुश्री सोके थे। रांची बोटोलोजिकल सेमिनारी का सन् १९२०ई. में फिर से खोला जाना एक आनन्द की बात है।

इन वर्षों में छोटानागपुर में मंहगी की छाया फैली रहती है। खेतों की उपज भी खास अच्छी नहीं थी। इन कारणों के कारण बहुत प्रयास करने और अधिक चंदा देने के बावजूद भी गोसनर चर्च को आर्थिक - कि आत्मनिर्भरता

(financial autonomy) भी मिल पाती है।

सन् १९२१ ई. में कुल खर्च १२५,०००) रु. था उसमें ७३,०००) रु सिर्फ स्कूल के कामों में खर्च हुआ। इनकी ~~आमदनी~~ अपनी कुल आमदनी ३०,०००) रु थी, और यह एक विशेष बात है, क्योंकि सन् १९१४ ई. की आमदनी से यह दस प्रतिशत अधिक थी। अमरीकी लुथरानों की सद्भावना और सहायता से बड़ी-बड़ी कठिनाईयों का सामना करना आसान हो जाता है। दुख की बात है कि यह नियम कि मंडलियों की आमदनी का पाँच प्रतिशत समूचे चर्च के कार्य के लिए दिया जाए व्यवहार में नहीं लाया जा सका।

Gossner Mission

देहात की मंडलियां अभी तक अपना अस्तित्व कि उन्हें गांव के बाहर भी काम करना है, ठीक से पहचान नहीं पाते हैं। इन उल्लिखित कारणों से घरबन्धु का प्रकाशन भी कुछ समय के लिए बंद कर दिया गया।

सन् १९२४ ई० के अप्रेल महीना में महासभा द्वारा एक नए चर्च कौंसिल का निर्वाचन हुआ। फलस्वरूप रेव० मोहन तोपनो नए प्रेसीडेंट, श्री हेन्ड्रामिन सिंह नए सेक्रेटरी तथा श्री निर्मल सोय खजांची हो जाते हैं। लेकिन कुछ ही समय के बाद श्री पतरस कुजूर सेक्रेटरी का पद अपने हाथों में ले लेते हैं।

Gossner Mission

2. मिशनरियों का वापस लौटना (१९२५)

गोसनर चर्च का संगठन पहले जैसा ही असंतोषजनक था। चर्च कौंसिल का अधिकार कुछ जगहों में ग्रहण नहीं किया जाता है और लड़ाई-झगड़े वैसे ही रह जाते हैं। इस असंतोषजनक स्थिति का प्रमाण ईश्वरी सन् १९२४ की महासभा के मूल-पत्र (Protocol) से मिलता है। प्रेसीडेंट मंडलियों में चर्च के नियमों (church discipline) को पूर्ण रूप से पालन नहीं किए जाने के विरुद्ध शिकायत करते हैं, खजांची के हिसाब-किताब में गलतियाँ

Gossner Mission

पायी जाती हैं। चौदह कार्य समितियों में (Standing Committees) से कोई भी समिति महासभा के सामने अपना कार्य-विवरण पेश नहीं करती है।

चर्च के अगुवों का कर्तव्य और उत्तरदायित्व मंडली में बढ़ते हुए असंतोष के कारण और भी भारी होने लगा। लोग रह रह कर यही इच्छा प्रकट करते हैं कि जर्मन मिशनरी वापस ~~आ~~ आना चाहते हैं। गोसनर चर्च के सामने बर्लिन-कन्सिस्टोरियम का एक विनयपत्र बहुत दिनों से पड़ा हुआ था। जिसमें कन्सिस्टोरियम यह निवेदन करती है कि गोसनर चर्च ऐसा कदम उठाए जिससे

Gossner Mission

जर्मन- मिशनरियों को वापस लौटने की अनुमति मिले। कुछ सदस्यों को छोड़कर चर्च के अगुवे इस निवेदन को अस्वीकार करने के पक्ष में नहीं थे। लेकिन जब क्लुरोटोरियम आत्मशासन (autonomy) को स्पष्ट रूप से मान लेती है और जर्मन मिशनरियों को भारतीय चर्च कौंसिल के अधीन काम करवाने की इच्छा भी प्रकट करती है तो उनको वापस नहीं बुलाने की भावना मिट जाती है। सन् १९२२ ई. को महासभा के प्रस्ताव के अनुसार गोसनर चर्च सात विशेष मिशनरियों और तीन सिस्टरों को वापस आने की अनुमति के लिए सरकार से

Gossner Mission

बातचीत करने के लिए तैयार होती है।
लेकिन अनुमति मिलने में काफी विलम्ब
होता है। अंततः सन् १९२५ ई. के अक्टोबर
अक्टोबर महीने में प्रेइस स्तोश
(Präses Stosch) और मिशनरी जोन
(John) रांची पहुंचते हैं। वे वहां इस
बात का जांच-पड़ताल करते हैं कि
किस प्रकार इस बदले हुए परिस्थिति
में जर्मन-मिशनरियों से काम लिया जाए।
मंडलियों में आनन्द की सीमा न रही।
सरकार के प्रति लोगों के मन में जो
आशंका की निरर्थक निकली।
महासभा की मंजूरी से चर्च और
क्युरोटोरियम के बीच दिसम्बर

Gossner Mission

महीना में एक समझौता (Agreement) हुआ। मिशनरियों और ओटोनोमी चर्च का सम्बंध इस प्रकार बनाया गया कि चर्च के निमंत्रण पर ही मिशनरी भेजे जा सकते हैं। मिशनरी सब इस नियम को एक कर्तव्य की तरह मान लेते हैं एवं चर्च के और आदरणीय अंग बन जाते हैं। चर्च कौंसिल के सदस्य के तौर पर अधिक-से-अधिक चार मिशनरी एवं चर्च कौंसिल के कार्यकारिणी समिति (Executive) में सिर्फ दो मिशनरी चुने जा सकते थे। इस नियम का स्वागत बोर्ड के सदस्यों और अमरीकी मित्रों ने

Gossner Mission

रखुबे मन से किया। लेकिन कुछ ही वर्षों के बाद यह नियम मतभेद और आशंका का कारण बन गया जाता है। तथा शीघ्र ही ये मिशनरी चर्च कौंसिल में काम करने लगे क्योंकि वे आदरणीय और परिश्रमी थे। निर्वाचित सदस्य होने के कारण वे उत्तरदायित्व का बोझ अपने कंधों पर उठा लेते हैं एवं चर्च की बाहरी और भीतरी स्थिति में सुधार लाने के लिए अपना कर्तव्य का पालन अच्छी प्रकार करते हैं जैसा कि उनसे आशा की जाती है। जहां आवश्यकता पड़ती थी वहां वे समालोचना भी किया करते थे।

Gossner Mission

ये मिशनरी ओटोनोमी को मान लेते हैं, लेकिन उनकी दृष्टि में ओटोनोमी एक अपूर्ण वस्तु थी, इसलिए लोगों को ओटोनोमी के बारे बात-चीत करने के बदले चाहिए कि वे प्रतिदिन नयी-नयी समस्याओं का सामना करें और उसमें सुधार लावें।

सभी जगहों में काम बहुत आदि करना था अतएव मिशनरियों की सहायता ग्रहण करने में लोगों को किसी प्रकार की हिचकिचाहट नहीं होती है। ~~किंकि~~ किंकेल, रांची, राजगंगपुर और तदुपरान्त चांदपुर, बंबा गंगा, गुमला, घुरतिया और तकारमा में मिशनरी आ पहुंचे। आरम्भ में जितने मिशनरियों की

की जरूरत थी अंततः उनकी संख्या सन् १९३१ ई. में पूर्ण हो जाती है।

अमरीकी मिशनरी रेव. कन्नोड सन् १९२२ ई. में रांची छोड़कर चले जाते हैं। जब तक वे थे अमरीकी मित्रों की सहायता गोसनर-चर्च ने बड़े धन्यवाद के साथ ग्रहण किया, अब जब वे चले गए तो जर्मन मित्रों के कंधों पर आर्थिक-सहायता देने का भार फिर से आ पड़ा। गोसनर-चर्च अब तक इस स्थिति में नहीं थी कि वह कुल खर्च का दो तिहाई भाग स्वयं जमा कर सके। सरकारी

Gossner Mission

सहायता भविष्य में भी मिलती रहे, इसके लिए स्कूलों की दशा चर्च को ठीक से रखनी पड़ती थी और इसमें काफी खर्च करना पड़ता था। इसके अतिरिक्त और भी बहुत से विशेष काम थे लेकिन रुपये की कमी के कारण ये काम अधूरे पड़े हुए थे। केवल कुछ ही समय के लिए थेयोलोजिकल - सेमीनार के पढ़ाई-लिखाई का कार्य ठीक से चलाया जा सका। पादरियों और प्रचारकों की हालत बहुत बुरी थी क्योंकि उन्हें वर्षों से उनके वेतन का आधा या एक चौथाई अंश मिल सका था, कुछ महीनों से

Gossner Mission

उन्हें वेतन मिलना एकदम बंद हो गया था। परिस्थिति और भी बुरी हो गयी जब सन् १९३२ ई. से भीषण आर्थिक-संकट देश-देशान्तर में फैल गया। जर्मनी से भी आर्थिक सहायता मिलनी बंद हो गयी। पादरियों में उत्साह नहीं रह गया। वे परेशानियों से थक गए थे। मसीही लोग अधिक चंदा देने में आनाकानी करने लगे क्योंकि कठिनाईयों के कारण उनका विश्वास पादरियों के प्रति घटता जा रहा था। ऐसी हालत में चर्च के प्रेसीडेंट जोहन तोपानो बड़े उत्साह, आशा और साहस के साथ मंडलियों

Gossner Mission

में भ्रमण करते हैं और मसीही-भाईयों को इस बात की प्रेरणा देते हैं कि वे अधिक-से-अधिक चंदा देवें।

शिक्षकों की परिस्थिति कुछ समय के लिए काफी अच्छी रहती है क्योंकि उन्हें नियमित रूप से वेतन मिलता है। स्कूलों के देखभाल में काफी खर्च बढ़ता ही जाता है और चर्च के लिए यह बोझ इस प्रकार असहना हो उठता है कि सन् १९३१ ई० के महासभा में इस विषय पर विचार-विमर्श होता है कि क्या स्कूलों को छोड़ दिया जाए। वे इस प्रकार के विचार से सहमत नहीं होते हैं, लेकिन

Gossner Mission

उन्हें ये बात मान लेना पड़ता है कि गाँव के एक सौ स्कूलों को, जिसे उन्होंने सरकार के हाथों में दो वर्षों के लिए दे दिया था आर्थिक-सहायता देने में बिलकुल असमर्थ हैं।

इसी समय नए मिशन-क्षेत्र लोगों को दिखाई पड़ते हैं। जमशेदपुर और धनबाद जैसे शीघ्र बढ़ने वाले औद्योगिक क्षेत्रों तथा पश्चिम में जयपुर, उदयपुर और बमड़ा में भी मिशन-कार्य के लिए दरवाजे खुले नजर पड़ते हैं। सुरगुजा के उराँव लोग क्रिस्तान होना चाहते हैं। लेकिन वहाँ के राजा सब प्रकार के मिशन-कार्यों में कड़ी पाबंदी

Gossner Mission

लगा देते हैं। इससे अधिक अच्छा अवसर पालामु जिला में मिलता है। आसाम में भी मंडलियाँ बढ़ने लगती हैं। वहाँ लोगों के बीच गहरी दरारें नहीं थी, क्योंकि वहाँ के चाय-बगानों में काम करके जीविका कमाने की काफी सुविधा थी।

सन् १९१२ में दक्षिण-भारत के लुथेरानों से जो सम्बन्ध स्थापित किया गया था अब वह और दृढ़ होने लगा जब नेशनल क्रिश्चियन कौंसिल की एक लुथेरान-समिति को इस काम का भार दिया गया कि वह करसुरवदा (उड़ीसा) में अपना मिशन-कार्य जिसका

Gossner Mission

आरम्भ युद्ध के समय हुआ था फिर से प्रारम्भ कर सकती है।

इसी बीच सन् १९२९ ई. के अंत में राजमुन्दरी में "फेडरेशन ऑफ लुथेरान चर्चेस इन इंडिया" की नींव डाली गयी। गोसनर चर्च के पांच प्रतिनिधि नींव डालने की सभा में भाग लेते हैं। बीच इसके एक वर्ष बाद गोसनर-चर्च को हांगी में लुथेरान चर्चों और मिशनों के प्रतिनिधियों की सभा में आतिथ्य के रूप में सेवा करने का मौका मिलता है। अतिथिगण इस बड़ी मंडली को देखकर एवं पादरी डुरन्त लकड़ा के "Autonomous Church, today" के

Gossner Mission

उपर भाषण सुनकर बहुत ही प्रभावित हुए।

इस घटना के बाद गोसनर-चर्च की ओर

भारत के अन्य भागों के बहुत से ईसाईयों

का ध्यान केन्द्रित हो गया।

१० जुलाई १९२९ ई० को अर्थात्

ओटोनोनी के दश वार्षीय जुबिली के

अवसर में प्रेसीडेंट तोयोमो ने परबन्धु

पत्रिका में निम्नलिखित संदेश का

प्रकाशन किया: "यह अवश्य है

कि हम इस आत्मस्वतंत्रता को ईश्वर

का विशेष वरदान समझें, ईश्वर को

उसके लिए धन्यवाद दें कि वह हमें

उसके लिए तैयार करे और हमें हमेशा

उसी में बढ़ने का प्रयास करना चाहिए।"

Gossner Mission

वे प्रार्थना के सामर्थ्य के बारे लोगों को बतलाते हैं तथा पवित्रता के दानों के लिए धन्यवाद देते हैं।

इस बार की चर्च कौंसिल एक लम्बी अवधि तक आस्थित में रहती है। अंत में सन् १९३२ ई को फिर से चुनाव होता है, लेकिन इस बार मिस्टर प्रेम (Prem) सचिव चुनते हैं और १९३२ ई. में भी वे इस पद को संभालते हैं। सन् १९३० ई. के ११ वीं जुलाई को माननीय वृद्ध प्रेसीडेंट हनुक दत्ता लकड़ा का देहान्त हो जाता है।

इन वर्षों में चर्च के दो स्थानों — गुमला और रांची में बहुत लोगों की

Gossner Mission

अशांति छा जाती है। गुमला में जुलियुस तिग्गा बसीही-साधु बनकर बहुत लोगों को अपनी ओर खींच लेते हैं। अपने विद्यार्थी जीवन में उसे साधु सुन्दर सिंह का उपदेश रांची के क्रिस्त गिर्जा में सुनने का अवसर मिला था और वह उसे काफी प्रभावित हुआ। साधु सुन्दर सिंह बाद में हिमालय की ओर चले गए जहां से वे कभी ~~लौटे~~ न लौटे। श्री जे. तिग्गा कलकत्ते में दर्शन-शास्त्र का अध्ययन समाप्त करने के बाद घर लौट रहे थे, उसी वक्त रास्ते में उन्हें एक दर्शन मिला और वे साधु बन गए। तदुपरान्त

वह गाँवों में घूम-घूम कर प्रचार करने लगा और बहुत लोग उसे मानने भी लगे। शीघ्र ही वे हिन्दू रीत-रिवाजों को अपनी शिक्षा में जगह देने लगे। वह अपना अलग गिर्जा भी करने लगा जिससे गुमला की मंडली में फूटों की गड़बड़ी आ जाती है। वहाँ के पादरी डॉ० लिग्गा के प्रति उन्हें भी सहानुभूति वा सहायक नहीं दिखलाते हैं। चर्च कौंसिल बहुत ही धीरज के साथ इस झगड़े को तय करने में मध्यस्था का काम करती है लेकिन उसे सफलता नहीं मिलती है। जब डुलिचुस लिग्गा को गुमला की मंडली से निकाल दिया जाता है तो अशांति

और भी तेज जाती है। वहां की अशांति कुछ घट जाती है जब वहां के व पादरी को बदल दिया जाता।

इस तक रांची में भी अशांति के बादल मंडराने लगते हैं। वहां के हाई स्कूल में कुछ इस प्रकार की अनोखी घटनाएं हो जाती हैं जिसे सबों का ध्यान कुछ समय के लिए वहां केन्द्रित हो जाता है।

३. <u>सन् १९३५ ई. में स्कूल का झगड़ा एवं उसका परिणाम।</u>

इस झगड़े में हाई-स्कूल दोनों दलों के बीच अज्ञानता से भरे एक बड़े

Gossner Mission

मतभेद के आरम्भ होने का कारण था। दोनों दलों में गहरी अनबन थी, लेकिन दोनों ही गोसनर चर्च कैथोलिक के बारे चिन्तित थे। इस झगड़े में लार्कमान तथा जी तथा ने इस तरह मिला दिए गए कि झगड़ा और भी जटिल होने लगा। कुछ वर्षों से कुछ अल्पसंख्यक लोग (minority) एक चिन्ता में पड़ गए थे क्योंकि मिशनरियों का प्रभाव बढ़ने लगा और हिन्दुस्तानी अगुवों के उत्तरदायित्व की भावना घटने लगी। इसके विपरीत मिशनरी सब अपने को चर्च के निर्देशात्मक कार्यों में हस्तक्षेप करने में

Gossner Mission

असमर्थ पाते थे, क्योंकि १९२५ ई० के समझौता के अनुसार उनकी डाराह चर्च के सत्ताकारिणी समिति में नहीं वरन् कार्य-कारिणी समिति (Executive) में थी।

हाई-स्कूल के स्तर तथा कार्यों में लोगों को स्पष्ट त्रुटियाँ दिखाई पड़ती हैं। एक समय था जब यह एक आदर्श मध्य स्कूल के नाम से चारों ओर प्रसिद्ध था, लेकिन अब यह धीरे-धीरे लोगों की नजरों में गिरने लगा। सन् १९३२ ई० में इसकी आंतरिक अवस्था बहुत ही शोचनीय हो गयी थी जब डार्मनी से किसी प्रकार की सहायता नहीं मिलती है। १९३२ ई० में ~~छत्तीस~~ छत्तीस

विद्यार्थियों में केवल एक विद्यार्थी मैट्रिक की परीक्षा में उत्तीर्ण होता है। दो वर्षों तक महासभा हाई-स्कूल की समस्या पर विचार विमर्श करती है, लेकिन स्कूल की दुर्दशा में किसी प्रकार का सुधार नहीं लाया जा सका। स्कूल के प्रधानाध्यापक (Principal) को व्यक्तिशः से दोषीदार ठहराने की कोशिश की जाती है। वे एक सादगी और सच्चा ही ज्योतोनोमी को बनाए रखने में बहुत ही जोर देने वाले व्यक्ति थे। जिसके कारण इसको मानने वाले लोग अन्दर-ही-अन्दर यह डरते थे कि मिशनरी लोग हाई-स्कूल का नेतृत्व एक भारतीय के हाथ से

Gossner Mission

लेकर एक डायन-हानि को दे देंगे, और ऐसा करने का सार्वा या चर्च की पूरी स्वतंत्रता के मार्ग में एक बाधा उत्पन्न करना। और ऐसे षड्यंत्रों के विरुद्ध आवाज़ उठाना बहुत ही आवश्यक है यद्यपि की चर्च के अधिक-संख्यक लोगों (Majority) को इस खतरे को ~~कहे~~ नहीं पहचान पाते हैं। इसके अतिरिक्त चर्च-चर्च और स्कूल के पारस्परिक सम्बंध में एक विरोधात्मक भावना जड़ पकड़ने लगी, क्योंकि स्कूल अब अपने को एक अलग संस्था समझने लगी और उसके लिए यह सहनीय नहीं था कि स्कूल के मामलों

में सभी प्रकार के अधिकार फैसला चर्च ही करे। इस विषय में स्कूल को सरकारी-सहायता भी मिलती है।

सन् १९३४ ई० के अप्रेल महीना में महासभा चर्च कौंसिल को स्कूल की समस्याओं को तुरंत सुलझाने के लिए पूर्णाधिकार देती है। और उसके थोड़े ही दिनों के बाद एक निर्णयानुसार वर्ष के अंत में उनव तक के प्रिंसिपल को अपने पद से हटा दिया जाता है।

अगले डेढ़ वर्षों में चर्च को बहुत ही कठिन संकटों के मार्ग से गुजरना पड़ता है। कुछ ऐसे पादरी, शिक्षक और व्यक्ति जो चर्च कौंसिल के इस

Gossner Mission

निर्णय से असहमत थे अपना एक दल बनाने तथा ओटोनोमी की सुरक्षा (Protection of Autonomy) के लिए एक संगठन कायम किया। उन्होंने एक तार इस मांग के साथ वर्तिन भेजा कि तीन मिशनरियों को वापस बुला लिया जाए। बाद में उन्होंने एक निम्नलिखित अभियोग-पत्र भी अपनी इन मांगों के प्रमाणार्थ भेजा कि "मिशनरियों का ख्याल ओटोनोमी के प्रति एक मित्र की तरह है नहीं है, वे पक्षपाती हैं और इस कारण कुण्डा एवं उरांव लोगों के बीच मत-भेद को बढ़ाते हैं; उन्हें यह मालूम नहीं कि भिन्न भारतीय-रियासतों के साथ किस प्रकार पेश आना चाहिए।"

Gossner Mission

चर्च को नाश करने के सिलसिले में यह एक पहला कदम था, और साथ ही दोनों दलों के बीच तनाव और भी बढ़ गयी। सन् १९३४ ई० के अंत में प्रेसीडेंट विरोधी दल से मिल गए, फलतः चर्च कौंसिल ने उसे प्रेसीडेंट-पद से हटा दिया। १९३५ ई० के अप्रेल महीना में महासभा की बैठकी हुई जिसे गोसनर चर्च के इतिहास में एक बहुत ही अशांति भरी महासभा कहा जा सकता है, क्योंकि यहां मसीही-भाईयों ने एक दूसरे को खुले आम शिकायत भरी ~~आलिशान~~ गालियां सुनाया तथा एक दूसरे को कलंकित करने

Gossner Mission

से भी पीछे नहीं हटे। चर्च कौंसिल के निर्णय को दो-तिहाई सदस्यों की सहमति से मान लिया जाता है तथा मिशनरी केरशिस (Kerschis) प्रेसीडेन्ट पद के लिए चुने गए। इसके अतिरिक्त, चर्च कौंसिल द्वारा पास किए गए और दो निर्णय काफी ध्यान देने योग्य हैं: प्रथम, गोसनर मिशन के क्युरोटोरियम से निवेदन किया गया कि प्रेज़ेस स्तोश को जिसपर दोनों दलों का विश्वास था गोसनर चर्च की परिस्थिति देखने के लिए भेजा गए। द्वितीय, फेडरेशन ऑफ लूथरन चर्चेस इन इंडिया एक जाँच कमिशन भेजे

Gossner Mission

रांची गये। सन् १९३५ ई. के शरद् ऋतु में ये बातें कार्यान्वित की गयीं। प्रेड़ास स्तोत्रा बहुत सी मंडलियों में भ्रमण करते हैं तथा लोगों से बात-चीत करके बिगड़ी हुई हालत के बारे एक विवरण तैयार करते हैं। तदुपरान्त पादरियों और ~~[illegible]~~ कन्डिदातों के लिए तीन साप्ताहिक 'रिफ्रेशर कोर्स' करते हैं। ईश्वर का वचन झगड़ा करने वाले लोगों के हृदयों में तीर की तरह घुस गया और वे आपस में सुलह करने के लिए तैयार होने लगे। बंबल अध्यक्ष के समय जब १ कोरिन्थियों की पत्री लागू थी तो आग लेने

बातों की करतूत उनके सामने झलक उठी। कोरिन्थ मंडली के भाईयों का आपसी-झगड़ा, उनका प्रेमरहित होना, तथा उनसे प्रतिशोध लेने की भावना गोलगत-चर्च के आंतरिक परिस्थिति को दिखलाते हैं। सभी पादरी वहां उपस्थित थे और वे ईश्वर के वचन के सामने झुक जाते हैं। एक दूसरे से अब वे फिर से बातें करने लगे। उन्होंने अपना दोष मान लिया एवं अब एक दूसरे को ठीक से समझने की कोशिश करने लगे।

बीक इतिबीच फेडरेशन द्वारा

बिशप सेंडग्रीन (Bishop Sandgreen)

Gossner Mission

के नेतृत्व में न्याय के लिए नियुक्त किए गए जाँच-कमिशन ने अपना निरीक्षण का काम समाप्त किया। विशेष के अतिरिक्त इस कमिशन के सदस्य दो भारतीय, एक नोरवेज़ीयन, एक अमेरिकन तथा डा० कन्नाडे थे। जाँच कमिशन का फैसला एकदम गुप्त रखा जाता है। १७ दिसम्बर १९३५ ई० को बहुत ही नाज़ुक स्थिति में असाधारण महासभा (Extraordinary Mahasabha) की तैयारी शुरू होती है। इस सभा के चौथे प्रेज़ीडेंट स्तोश बनते हैं। सभा का आरम्भ प्रभुभोज के साथ शुरू होता है और तीन दिनों तक चलती है।

Gossner Mission

तदुपरान्त कमिशन का फैसला पढ़कर सुनाया जाता है। लुथेरान-चर्च में जो वर्तमान फूट है उसके लिए सभी आपराधी हैं। भिन्न मतावलम्बियों (dissenters) को चर्च के नियमों को पालन करने का आदेश दिया जाए। एक नयी चर्च-कौंसिल का निर्वाचन हो और वह व्यक्ति उसका सदस्य नहीं हो सकता है जो छः वर्षों से अधिक उसका सदस्य रह चुका हो। सेक्रेटरी पतरुस कुरुद पर इसका खास असर पड़ा। वह प्रेसीडेंट को पेंसन दे दिया जाए। जूरल लकड़ा कुछ वर्षों के लिए भारत के किसी अन्य जगह में कोई पद संभाले।

Gossner Mission

भविष्य में प्रेसीडेंट और सेक्रेटरी केवल भारतीय ही हो सकते हैं। प्रेज़ेस इनोश यह सिफारिश करते हैं कि फैसला बिना वाद-विवाद के ग्रहण कर लिया जाए।

प्रेसीडेंट तोपानो और पतरस हुराह इसे संतुष्ट नहीं थे लेकिन तिरा भी ऐसा होकर ही रहा।

अंत में नया चुनाव होता है। डेविड लुडूर प्रेसीडेंट, पौलुस कन्डुलना सेक्रेटरी तथा मिशनरी रडसिक (Radsick) खजांची बनते हैं। लेकिन उनके पहले भविष्य में मिशनरियों का स्थान चर्च में क्या हो ~~[illegible]~~ उसके बारे महासभा में काफी वाद-विवाद हुआ।

Gossner Mission

प्रेज़ेस स्तीश एक नया प्रस्ताव पेश करते हैं जिसके अनुसार मिशनरी लोग चर्च के सलाहकार तो रह सकते हैं लेकिन बिना मतदान अधिकार के। महासभा के अधिक-संख्यक सदस्य इसका विरोध करते हैं, लेकिन सम्मतिदान नहीं हो पाता है। इस प्रकार सन् १६२५ ई. के समझौता में कोई खास परिवर्तन नहीं लाया गया।

शांति और एकता चर्च में फिर से आ गयी। न्याय कमिशन का फैसला कठिन और अनुचित नहीं था। झगड़े के मूल कारण सर्वप्रथम दूर हटा दिए गए,

Gossner Mission

लेकिन चर्च के ऑटोनोमी को कैसे मजबूत बनाया जाए, यह सवाल लोगों के सामने बना ही रहता है। यह सच्चा है कि प्रत्येक व्यक्ति का हृदय गोसनर-चर्च के प्रति तीव्र प्रेम से परिपूर्ण रहता है। चिन्ता केवल इस बात के लिए रह जाती है कि सच्चाई और आदर्श को कैसे साथ में लाया जाए। चर्च कौंसिल और महासभा का प्रजातंत्रात्मक ढंग से काम करने का नियम बहुतों की दृष्टि में असफल रह गया था इसलिए चर्च के शासनार्थ वे एक शक्तिशाली व्यक्ति चाहते थे। और पहले-पहल इन वर्षों में एक प्रस्ताव

Gossner Mission

पेश किया जाता है कि गोसनर चर्च को एक विशेष चाहिए अथवा नहीं।

यह एक साफ बात है कि एक विशेष भी गोसनर-चर्च के इस विषम आर्थिक कठिनाई को सुधार नहीं सकता था। जर्मनी जब हिटलर के नेतृत्व में था तो गोसनर-मिशन पर १९३७ ई. से एक प्रतिबंध लगा दिया गया कि वह किसी प्रकार की सहायता भारत भेज नहीं सकती है। बीते वर्षों में भी गोसनर-चर्च को कुछ खास सहायता नहीं मिली थी। गोसनर चर्च के मसीहियों की यह धारणा कि ~~मिशनरी~~ मिशनरियों

Gossner Mission

के लौटने से चर्च की आर्थिक-स्थिति में कुछ सुधार आ गया, बेकार साबित हुई। लेकिन चर्च में अशांति आने का यही अंतिम कारण नहीं था।

१९३७ ई० में मिशनरी लोग रांची के हाई-स्कूल के आंतरिक राजनीति में भाग लेते हैं जो उनके लिए न तो ठीक ही था और न ही ऐसा करना उनके अधिकार में था। हाई-स्कूल के प्रिंसिपल इस बीच डा० वोल्फ (Dr. Wolff) हो गए थे और स्कूल की स्थिति काफी सुधर गयी थी। लेकिन तिराजर की दोनों के बहाने कुश्ती फिर से आ गयी। एक दल फेडरेशन के पास पहले ही यह निवेदनपत्र भेजता है कि पादरी डुरेल लकड़ा वापस

बुलाया जाए।

सन् १९३७ ई. को फेडरेशन ने चर्च कौंसिल के साथ बात-चीत आरम्भ किया। इस समय बिशप सेंडग्रीन (Sandgreen) फेडरेशन के चेयरमेन थे। इस बार अमरीकी लुथेरान लोग फिर से गोसनर-चर्च को इस शर्त पर आर्थिक-सहायता देने के लिए तैयार होते हैं कि अब तक शासन से सम्बन्धित विषयों में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं लाया जाएगा। बिशप सेंडग्रीन प्रस्ताव करते हैं कि प्रेज़ेस स्तोश पांच वर्षों के लिए रांची आवें एवं फेडरेशन के स्थायी प्रतिनिधि के रूप में गोसनर चर्च

Gossner Mission

का नेतृत्व करें। १९३७ ई० के अप्रैल महीने में महासभा की बैठकी होती है। इस बार दक्षिणी-भारत के प्रो० आसिर्वादम (Prof. Asirvadam) भी उपस्थित रहते हैं। इस प्रस्ताव को महासभा मान लेती है और मिशनरी लोग भी इसे सहमत रहते हैं।

सन् १९३८ ई० के आरम्भ में प्रेड्रेस स्तोश भारत वापस आते हैं और मार्च महीना से गोसनर-चर्च के प्रसीडेंट बन जाते हैं। लोगों के लिए यह विकास अफ़सोसजनक हो सकता है, क्योंकि यह फैसला १९३२ ई० के समझौता के विरुद्ध था। स्वतंत्र विचार रखने वाले प्रतिनिधियों

Gossner Mission

की कि स्मृति में यह एक कड़ी ऊँचोट की।
लेकिन इस पर भी महासभा में किसी प्रकार
की गड़बड़ी नहीं होती है। महासभा के
लिए यह एक कठिन निर्णय था। यह
इस बात का साफ प्रमाण है कि उनके
सामने इसके अतिरिक्त और कोई दूसरा
उपाय नहीं था। राजनैतिक-जीवन
में जिस प्रकार की संकट-कालिन-
अवस्था (State of Emergency)
की घोषणा होती है, उसी प्रकार
गोलार-चर्चा में भी कुछ समय के
लिए एक ऐसी स्थिति आ गयी कि
कुछ समय के लिए संविधान की
कानूनी विशेषता अर्थ घोषित कर

Gossner Mission

दी गयी।

नए प्रेसीडेंट बुद्धिमत्ता और अपने प्रभुत्व के साथ आरम्भ की कठिनाईयों पर विजय प्राप्त करते हैं। एक शिक्षक की तरह वे इस पद को संभालते हैं। स्वयं नहीं वरन् उनके द्वारा दिए गए सुसमाचार के उपदेश चर्च के भीतरी पापों के लिए आरोग्यपन का कारण हो। सन् १९३९ ई. में द्वितीय विश्व-युद्ध का आरम्भ होता है। सन् १९४२ ई. में उन्हें प्रेसीडेंट-पद छोड़ना पड़ता है क्योंकि जर्मन नागरिक होने की वजह से उनको नजरबंद कर दिया जाता है। उनके उनलावे और सात

Gossner Mission

मिशनरियों एवं चार मिशन-सिस्टरों को भी अंग्रेजों ने कैद कर लिया। ठीक इसी वर्ष के मार्च महीना में रांची के बड़े चर्च-हाता (Compound) को मिलिट्री-सरकार ने अपने कब्जा में ले लिया। ईस्टर्न कमान्ड (Eastern Command) ने इसे अपना केन्द्र स्थान (Head Quarter) बना दिया। केवल छापा-खाना और माइनरी स्कूल अपना कार्य आगे कर सकते थे। थेओलोजी-सेमिनार और लेबोराटरी हाई स्कूल गोविन्दपुर चले गए तथा गोसनर हाई-स्कूल की पढ़ाई लिरवाई जिला स्कूल के मकान में किया जाने लगा।

Gossner Mission

४ भारत का स्वतंत्र होना

स्वतंत्र लुथेरान चर्च, छोटानागपुर और आसाम की नींव दृढ़ करने का प्रयत्न भारत के बड़े राष्ट्रीय-क्रान्ति के साथ में ठीक से लगाया जा सकता है। उन्हीं वर्षों में, जब रांची के आस-पास नयी-नयी मसीही-मंडलियाँ स्थापित की जा रही थीं भारत के राजनैतिक स्वतंत्रता की लड़ाई और भी जोर पकड़ती जा रही थी। सन् १८५७ ई० का सिपाही विद्रोह एक संकेत था, और सन् १८८५ ई० में इंडियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना उसका फल था। ये दोनों विश्व

कुछ स्वतंत्र लुथेरान चर्च और अस्वतंत्र भारत को एक कदम आगे ले आते हैं। स्पष्ट है कि गोस्पनर-चर्च को औपनिवेशी बिना कुछ के, हाँ — इच्छा के विरुद्ध कठिनाईयों के सामने रहते हुए भी अपने हाथों में लेना पड़ा। हिन्दुस्तान को खून और आँसू में लीगी हुई आजादी ~~मिलीथी~~ मिलती है। देश के अंदर आपसी ~~लड़ाई~~ मत-भेद की लड़ाई में उसे जलना पड़ता है। हाँ, बड़े उत्साह के साथ ~~अब~~ स्वतंत्रता को भी भारत ने अपने हाथों में लिया, लेकिन उसे यह मालूम नहीं था कि कितनी बड़ी-बड़ी कठिनाईयों का बाद में

Gossner Mission

सामना करना पड़ेगा।

गोसनर मसीहियों को इस प्रकार की कठिनाईयों का अनुभव चर्च के विषय में हो चुका था। उनको यह घमंड है और इसका घमंड रहेगा कि भारत के राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने के सत्ताईस वर्ष पहले ही उन्हें चर्च की ओतोनोमी मिल चुकी थी।

भारत में आदिवासियों और भारत के राष्ट्रीय-क्रांति में कोई सीधा सरतंधा नहीं था। यह छोटानागपुर में मिशनरियों के प्रभाव का कारण नहीं था और नहीं न ही ईसाई धर्म यद्यपि कि यह पूर्ण व्यवहारिक दृष्टि से क्रांतिकारी विचारों से भरा पड़ा है

तथा समाज में सुधार चाहता है। नहीं,
शुरुआत के साथ-साथ सामाजिक कारणों की।
आरंभ में राष्ट्रीय कांग्रेस (National Congress)
शिक्षित लोगों की क्रांति की और जन समूह
उनके अभिप्राय को समझने में असमर्थ
था। इस स्थिति में परिवर्तन आने में
देर नहीं लगी जब महात्मा गांधी गांवों
में भी भ्रमण करते हैं। सन् १९३४ ई०
के जाड़े महीने में वे रांची पधारे।
वे मिशन-कार्य के कोई खास बड़े
मित्र नहीं थे, लेकिन फिर भी
अपने इस आगमन के अवसर पर
बहुत से ईसाईयों से उनका वार्तालाप
हुआ। कुछ ही दिनों के पश्चात्

Gossner Mission

जब उनका पदार्पण जमशेदपुर में हुआ तो लोगों ने उनसे यह आग्रह किया कि ईसाईयों के बीच काम करने वाले हिन्दु-मिशन की स्थापना और सहायता करें। लोगों को आश्चर्य होता है जब वे निम्नांकित बातें कुछ कहते हुए इस विनय को अस्वीकार कर देते हैं: भारत में दो प्रकार के ईसाई देखने को मिलते हैं, एक वे जो मिशनरियों के गुलाम हैं और उसी में मगन होकर सरलता से जीवन-यापन की चाह रखते हैं, और दूसरे वे हैं जो विश्वस्त और दृढ़-विश्वासी हैं और ऐसे ईसाईयों से उनकी मुलाकात रांची में हुई।

Gossner Mission

ऐसे लोगों से उनका ख्रिस्तानी-विश्वास छीन लेना अनुचित है, नकली ख्रिस्तान अपना विश्वास स्वयं ही खो देंगे।

कारण से परिपूर्ण भूत और वर्तमान-काल आदिवासियों के ~~राष्ट्रीय~~ राष्ट्रीय-उत्साह में काफी बाधा डालते हैं। अपने ही स्वदेशी भारतीय लोगों द्वारा उनका किए गए धोखेबाजी और अन्याय से लोग इस तरह परेशान और अविश्वस्त हो जाते हैं कि इस प्रकार की भावनाओं को सिर्फ धीरे-धीरे दूर किया जा सकता है। इस प्रकार यह समझा जा सकता है कि ठीक उसी समय जब राष्ट्रीय-क्रांति देश के राजनैतिक-जीवन में

हल-चल पैदा कर रही थी छोटानागपुर के आदिवासी आत्मशासन एवं महत्त्वपूर्ण निर्णयों के विषयों में मतदान देने के अधिकार के लिए लड़ रहे थे। सरदारों के समान जिन सुविधाओं को बिना सुलझाए छोड़ दिया गया था फिर आ खड़े हुए। सच है कि इस बीच राजनैतिक-खेल के नियमों में बदलाहट आ गयी थी। एक दो घटनाओं को छोड़कर आदिवासी लोग अपने राजनैतिक-लक्ष्य की प्राप्ति के लिए बल-प्रयोग नहीं करते हैं। इसके लिए वे एक राजनैतिक-पार्टी की नींव डालते हैं

और पार्लियामेंट में दबाव डालने की कोशिश करते हैं। झारखण्ड-राज के स्वप्न का अंत अभी तक नहीं हुआ है लेकिन १९ वीं शताब्दी की तुलना में अब छोटानागपुर बहुत बदल गया है। यह देश अब केवल आदिवासियों के लिए नहीं रह गया है। देश का औद्योगिकरण एवं आर्थिक उन्नति आदिवासियों से चाहते हैं कि वे भिन्न-भिन्न जाति और वर्गों के लोगों के साथ जीवन-यापन करें।

मसीही-मंडलियाँ सबों के लिए एक आदर्श के ~~एक~~ द्योतक हैं, क्योंकि यहां विभिन्न संस्कारों और

Gossner Mission

रीत-रिवाज को मानने वाले साथ रहते हैं। मसीही विश्वास लोगों को इस बात के लिए योग्य बनाता है। गोसनर-चर्च का इतिहास इस बात का द्योतक है कि चर्च में अभी समय झगड़ा और अशांति का राज आता है जब सुसमाचार के बताना नुसार लोग चलना छोड़कर सांसारिक बातों पर अधिक जोर देते हैं। शांति और एकता का दान चर्च को मिलता है, जब ईश्वर के बचन के सामने शीश नवाते हैं। स्कूल के झगड़ा के समय बारम्बार चर्च के लोग विभिन्न दलों में बंट गए। गोसनर-चर्च में कुण्डाओं

Gossner Mission

की संख्या अधिक है और उनका यह भूल है कि वे अधिक-संख्यक होने का फायदा एक बड़े दल के रूप में उठाते हैं। उसे अल्प-संख्यक हैं, और उनकी यह गलती है कि वे बार-बार अलग होने की कोशिश करते हैं।

गोस्पल-चर्च में जिस प्रकार साथ रहने का अभ्यास किया जाता है ठीक वही हाल बड़े राष्ट्र भारत में भी है। लोगों को एक ओर जहां कभी-कभी दर्द भरे अनुभव होते हैं एवं निराशाएं होती हैं, वहीं दूसरी ओर आनन्द के चिन्ह भी दिखाई पड़ते हैं। भारत का संविधान वैसे

Gossner Mission

चिन्हों में भी एक है जो २६ नवंबर १९४९ ई० को संविधान बनाने वाली राष्ट्रीय-सभा द्वारा ग्रहण किया गया तथा इसे कुछ ही महीनों के बाद वैधानिक रूप सिद्ध दे दिया जाता है। संविधान के २५-२८ धारा में भारत के प्रत्येक नागरिक को सोच-विचार करने की स्वतंत्रता दी गयी है। २५ वी धारा को उदाहरणार्थ लिया जा सकता है "प्रत्येक व्यक्ति को एक समान सोच-विचार करने की स्वतंत्रता है तथा किसी भी धर्म को अपनाना, मानना और उसे फैलाने का अधिकार है।

Gossner Mission

गोसनर चर्च के सदस्य भी इस संविधान में निहित अधिकारों का शरण लेते हैं जब अहिन्दुस्तान कट्टर धर्मपरायण जैसे जनसंघ पार्टी अथवा आर्य-समाजी हिन्दुओं के विरुद्ध राजनीतिक दृष्टिकोणों से लड़ते हैं और उन पर अविश्वासी नागरिक होने का दोष लगाते हैं। जब सन् १९६७/६८ ई. को उड़ीसा और मध्य प्रदेश ने ऐसे कानून बनाए और छोड़ दिए गए जिसे हिन्दुस्तानों को अलग दृष्टि से देखा जाने लगा तो न केवल गोसनर चर्च ही वरन् अन्य चर्चों ने भी इसके विरुद्ध प्रजातंत्र भारत के राष्ट्रपति के पास आवाज़ उठायी। इन उल्लिखित कानूनों की नज़र में किसी को जबरदस्त अथवा

Gossner Mission

बहका कर हिन्दुस्तान बनाना एक बड़ा भारी अपराध था। लेकिन यहाँ यह शब्द 'बहकाना' का अर्थ इतना व्यापक है कि कोई भी व्यक्ति इसका मतलब सहज से ही अपनी इच्छानुसार लगा सकता है।

ऐसी घटनाएं यह दिखलाती हैं कि ईसाईयों का यह कर्तव्य है और अधिकार है कि वे वर्तमान राजनीतिक पार्टियों में साथ-साथ काम करें और देश के राजनैतिक-जीवन में अगत-चेत लाने के लिए भाग लेवें।

Gossner Mission

चौथा अध्याय

गोसनर चर्च नये भारत में
(१९४७ - १९६०)

१. एक नया आरम्भ

प्रेज़ेस स्तोत्रा की ~~नजरबंद~~ नजरबंदी के बाद महासभा की बैठकी कुड़डू में हुई। जहां नए चर्च कौंसिल का निर्वाचन हुआ। पादरी ज़ुएल लकड़ा जो दक्षिण भारत से वापस लौट गए थे प्रेसीडेंट हुए। थेयो सुरिन सेक्रेटरी और पादरी लूथर जोजोबार खजांची बने। कार्यकारिणी समिति (Executive) के सदस्य १९२८ ई० की तरह सिर्फ भारतीय लोग थे। लेकिन

Gossner Mission

नए चर्च कौंसिल के प्रति लोगों का विश्वास
उस प्रकार नहीं रहता है जैसा की होना चाहिए।
कुछ पादरियों की योग्यता के विरुद्ध
शिकायतें की जाती हैं। उन वर्षों में
जन आर्थिक-स्थिति बहुत खराब थी
प्रशिक्षण के कामों में काफी त्रुटियाँ
आ गयी थी। इस समय कुछ लोग यह
चाहते थे कि चर्च का विभाजन झुंड
और उपदेश चर्च में हो जाना चाहिए।
लेकिन प्रेस्बेस स्तोश्रा जो १९४६ ई. में
कैद से वापस आ गए थे दोनों दलों
के बीच मध्यस्था का काम करते हैं,
और चर्च का बंटवारा नहीं हो सका।
चर्च को दो भागों में अलग करने की

आवश्यकता भी नहीं होती है, क्योंकि डा० स्ट्रोक (Dr. Stroek) जो एक अमरीकी वासी तथा फेडरेशन के प्रतिनिधि थे रांची आए हुए थे और वे चर्च के केन्द्रीय-शासन की जगह स्थानिक शासन का प्रस्ताव डालते हैं। एक कमिशन द्वारा चर्च के संविधान में आवश्यक सुधार लाया गया और १९५० ई० को इस संविधान को वैधता (legality) दे दी गयी। इसी समय से गोसनर चर्च बारह सिनोदों में बाँट दिया गया। ये सिनोद आर्थिक और शासन का काम स्वयं करते हैं। इसके कारण बहुत-सी ऐसी बातें जिसे

Gossner Mission

झगड़ा उत्पन्न होने की संभावना की,
मिट गयी। लेकिन ~~[illegible]~~ मतभेद का
मूल कारण रह ही गया। अब साथ
में रहने की जगह लोग एक दूसरे से
अलग रहने लगे तथा कुछ ही वर्षों
के बाद पुराना घाव फिर से हरा हो उठा।

प्रेज़ेस स्तोश सन् १९४७ ई. के
शरद् ऋतु ~~[illegible]~~ तक नार्न. कौंसिल के एक
मित्र ~~[illegible]~~ और सलाहकार की
तरह रहते हैं। जर्मनी वापस आने
के पहले तक वे कोंग्रोलोजी-सेमिनार
में शिक्षक ~~[illegible]~~ का काम
किए। इसके अतिरिक्त वे साहित्यिक-कामों
में काफी अभिरुचि दिखलाए। इस

बीच दो मिशनरी क्लिमकाईट (Klimkeit) और बरुवा (Baruwa) तथा दो मिशन-सिस्टर डिलर (Diller) और स्मिथ (Schmith गोसनर-चर्च में वापस आ गए। उनको चर्च-कौंसिल और महासभा में किसी प्रकार का मतदान देने का अधिकार नहीं दिया गया।

कुछ बाहरी कठिनाईयों के होते हुए भी सदस्यों की वृद्धि होती है और बहुत से भागों से यह निवेदन आता है कि मिशन-कार्य फिर से शुरू किया जाए। भारत के स्वतंत्र होने के बाद राजाओं की शक्ति खतम हो गयी थी, और

Gossner Mission

अब तक जो दरवाजाएँ छोटानागपुर के पश्चिमी एवं ~~दक्षिणी~~ पश्चिमी भाग में बंद थीं ~~अब~~ खुल गए। लेकिन अफसोस है कि और समय की तरह ही प्रचारकों और रुपया-पैसा की तंगी बनी रहती है।

यहां सुरगुजा में मिशन काम का शुरु किया जाना एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात है। अम्बिकापुर के आस-पास रहने वाले बहुत से उरांव ख्रिस्तान होना चाहते हैं। छोटानागपुर में पादरियों और प्रचारकों की बहुत आवश्यकता रहने पर भी गोसनर-चर्च वहां इन्हें भेजती है। सुसमाचार का प्रचार

Gossner Mission

होना ही चाहिए। पादरी उरबानुस कुडूर का अश्रान्त कार्य इस विषय में चिर-स्मरणीय रहेगा। अख्रिस्तान लोगों ने बाद में उसके कब्र का अपमान किया। सुरगुजा के नए मिशन-कार्य का आर्थिक भार अमरीकी लोग संभालते हैं।

छोटानागपुर के बाहर एक और अन्य जगह में भी इस प्रकार के काम की बहुत जरूरी थी। काम की खोज में बहुत-से उरांव उत्तर की ओर चले गए और दार्जिलिंग के दक्षिण कुअर्स (Kuars) नाम की जगह में बस गए। ईश्वरीय

Gossner Mission

वचन के प्रचार के लिए यहां भी प्रचारक भेजे जाते हैं। सिंहभूम जिला और उत्तरी उड़ीसा में नयी मंडलियों की नींव डाली जाती है। गोसनर चर्च और गोसनर-मिशन के बीच सन् १९५२ ई. में हुए समझौता के अनुसार इस भाग को जोईंट मिशन फिल्ड का अस्तित्व दे दिया गया है, इसका मतलब यह है कि भारतीय और जर्मन दोनों मिलकर मिशन कार्य करने का उत्तरदायित्व संभालेंगे। और ठीक बगड़ा इलाका की तरह सिंहभूम के हो (Ho) और जुआंग (Juang) लोग भी ईश्वरीय वचन को ग्रहण करते हैं।

Gossner Mission

इस काम का नेतृत्व जर्मन मिशनरी करता करते हैं।

स्कूल के कामों में इन वर्षों के भीतर काफी उन्नति होती है। तन-मन से नए सिरोद नये-नये स्कूलों के खोले जाने में लग जाते हैं। भारत की नयी सरकार इस विषय में चर्च की सेवा की महत्ता को समझती है, और इसलिए उसकी सहायता लेने में उसे कोई हिचकिचाहट नहीं होती है। वह स्कूलों को सरकारी-सहायता देती है तथा विशेषकर आदिवासी बच्चों को पढाई-लिखाई के लिए मदद भी देती है। कुछ ही समय के अंदर रांची के गोसनर-हाई-स्कूल और

Gossner Mission

और लेबेसदा हाई-स्कूल के अतिरिक्त

लकरा, गोविन्दपुर, किंकेल, चौनपुर,

कोरोंडो, लोहरदगा और लाह में खुंटीटोली

एवं गुमला में नए हाई स्कूलों की

नींव डाली जाती है। स्पष्ट है कि सिनोदों

को इसके कारण काफी आर्थिक-बोझ

उठाना पड़ता है, और कभी-कभार स्कूलों

की शिक्षा का स्तर भी गिर जाता है।

लड़कियों की प्रशिक्षण पर अब तक

कोई ध्यान नहीं दिया गया था लेकिन

चर्च अब यहां भी अपना कर्तव्य

देखती है। सन् १९४८ ई० को रांची में

शिक्षिकाओं के प्रशिक्षण के लिए

एक टीचर्स-सेमिनार की स्थापना हुई,

Gossner Mission

जहां प्राइमरी-स्कूलों में पढ़ाने के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है। सन् १९३३ ई. में दो जर्मन मिशन-सिस्टरों ने महिलाओं के लिए एक बंगला-स्कूल खोला था। अब यह काम बुड़जू और तब गोविन्दपुर के जिले से आरम्भ किया जाता है। तबिथा-बंगला स्कूल चर्च की एक केन्द्रीय-संस्था मानी जाती है। इस स्कूल में नवयुवतियों को ख्रिस्तानी-जीवन, बंगला और घरेलू-विषयों की शिक्षा दी जाती है। यहां से निकलने के बाद कुछ लड़कियां प्रचारिकाओं अथवा महिला-संस्थाओं में काम करती हैं। जब से जर्मन-सिस्टर

Gossner Mission

स्वदेश चले गए तब से यहाँ का नेतृत्व भारतीय हाथों में है।

१९४९ ई० में चर्च कौंसिल के एक निर्णयानुसार पुराना प्रचारक-सेमिनार जहाँ युग-युग से गोसनर-चर्च के पादरियों को प्रशिक्षण दिया जाता था ~~थेयोलोजि-~~ ~~कल~~ थेयोलोजिकल कॉलेज में बदल दिया गया तथा सिरामपुर युनिवर्सिटी से मिला दिया गया। ऐसा करके एक ओर तो थेयोलोजिकल-प्रशिक्षण का स्तर ऊँचा उठाने का प्रयत्न किया गया और दूसरी ओर पादरियों के परीक्षा के नियम भारत के दूसरे चर्चों में प्रचलित नियमों की तरह बना दिए गए।

Gossner Mission

२ विदेशी मित्र

गोस्नर-चर्च में दुर्दशा के दिन कठिनाई ही उत्पन्न किए ऐसी बात नहीं है वरन् ऐसे समय में चर्च को बहुत विदेशी मित्र भी मिले। पुराने जर्मन-दोस्तों के बाद ही में जब तकलीफ बहुत बढ़ गयी तो वे शुरू में मिशनरी और बाद में किसी प्रकार की आर्थिक-सहायता भेजने में भी असमर्थ हो गए। ऐसी स्थिति में इस कमी को पूरा करने के लिए नए मित्र सामने आ खड़े हुए। ये मित्र अमरीकी-लुथेरान लोग हैं। गोस्नर-चर्च को इन्होंने नियमित रूप से वर्षों से

Gossner Mission

आर्थिक-सहायता दी। भारत में चर्च को यह सहायता सीधे अमेरिका से और द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् वर्ल्ड-लुथेरान फेडरेशन के जरीए मिलती है। यह फेडरेशन लुथेरान चर्चों के जरीए यूरोप के बहुत से देशों और अमेरिका में रुपया-पैसा इक्ठा करके एशिया और अफ्रिका के चर्चों की सेवा एवं सहायता करती है। इसके अतिरिक्त अमेरिकन लुथेरान लोग गुंटूर-मिशन (आन्ध्र एवंजेलिकल लुथेरान चर्च) से बराबर रांची आते ही रहते हैं और अच्छे सलाह देकर गोस्नर चर्च की सहायता करते हैं। इस विषय में

Gossner Mission

एल० कन्नाडे और डा० स्ट्रोक जो सन् १९२० ई० में चले जाते हैं क्या नाम स्मरणीय रहेगा।

सन् १९४७ ई० से गोसनर चर्च का सम्बन्ध देश-विदेश के अन्य जातियों के मिशनरियों से काफी बढ़ने लगता है। गोसनर चर्च का नाम प्रसिद्ध होने लगा, उसके कार्य आनन्द और कदर में देश-विदेश के मित्र सहयोग देने लगे। वर्ल्ड लुथेरान फेडरेशन वास्तव में विश्व के लुथेरान चर्चों का एक परिवार है। जब इसकी इसकी पहली बैठकी १९४७ ई० को लुन्ड (Lund) में हुई तो गोसनर

Gossner Mission

चर्च के प्रेसीडेंट रेव० डूपल लकड़ा भी इसमें भाग लेते हैं, और वे हिशाचाई - लुथेरानों के प्रतिनिधि के रूप में "एक्सीक्यूटिव" के सदस्य चुन लिए जाते हैं।

इस बैठकी के खत्म होते ही कम्युनिटोरियम के नियन्त्रण पर उनका आगमन जर्मनी में होता है। यह गोसनर-मिशन एवं वहाँ के बहुत से क्रिश्चन-मंडलियों के लिए एक बहुत बड़ी घटना थी। पहली बार जर्मन के मित्रों ने विश्वास किया और अपनी आंखों से एक भारतीय भाई को देखा जो उनके सामने गोसनर चर्च के प्रतिनिधि के रूप में खड़े थे — जिसके लिए

Gossner Mission

उन्होंने युग-युग से प्रार्थना और ज्ञान की लौ लगाकर काम किया था। सबों के आनन्द की कोई सीमा नहीं। रेम० लकड़ी विह्वल हो उठते हैं जब वे गोसनर-चर्च के प्रति धन्यवाद के शब्द बोलते हैं। कुछ ने पूर्णतः विध्वंस वर्तिन में वे गोसनर मिशन-हाउस के खंडहर और जोहन स्वेगलिस्ता गोसनर के कब्र के सामने खड़े होते हैं। बाद में वे क्युरोवोरियम को बीते वर्षों के मिशन एवं स्कूल के कार्यों का विवरण सुनाते हैं। मिशनरियों को बाहर भेजने के लिए नए सम्भावनों पर विचार नहीं किया जा सका, क्योंकि

Gossner Mission

जर्मनी में लगाए गए युद्ध के शर्त अभी तक उठाए नहीं गए थे।

यहां क्यूरोतोरिया एक प्रस्ताव पेश करती है जिसके अनुसार युद्ध नवयुवक हिन्दुस्तानी विद्यार्थियों को जर्मन विश्वविद्यालय में थेयोलोजी के अध्ययन का अवसर दिए जाने की बात हुई। इस प्रस्ताव को प्रेसीडेंट और बाद में चर्च-कौंसिल भी सहर्ष स्वीकार कर लेते हैं।

एक वर्ष बाद होलेंड के अमस्टरडम शहर में वर्ल्ड चर्च कन्फ्रेंस होती है। यहां भी गोसनर-चर्च का प्रतिनिधित्व रेग० डुस्चे तेकड़ा करते हैं।

Gossner Mission

साथ ही रेव० डॉ० डी० तिग्गा, जो अमेरिका में अपना अध्ययन समाप्त कर वापस आ रहे थे, यहां आ पहुंचते हैं। दोनों गोसनर-मिशन के लोगों से भेंट करते हैं और बीते वर्षों में छोड़े गए सम्बंध को और भी मजबूत करते हैं। नवयुवक कोचोलोजी के विद्यार्थियों का जर्मनी में अध्ययन की संभावना पर फिर से बातें होती हैं तथा साथ ही एक नया प्रस्ताव पेश किया गया, जिसके अनुसार गोसनर-चर्च के एक पादरी कुछ वर्षों के लिए जर्मन-चर्च में काम कर सकते थे। भारत से जर्मनी आने-जाने का क्रम बढ़ने

Gossner Mission

लगा। सुश्री सोके, लेथोसदा स्कूल रांची,
श्री डी. पी. कन्डुलना, चर्च के खजांची,
तथा श्री एन. ई. होरो, चर्च के सेक्रेटरी
और उनके अलावा सुश्री बोदरा, श्री. एम. टेटे
और श्री एन. मिंज जर्मनी का भ्रमण किए।
श्री एम. लागे और श्री एस. सुरिन सन्
१९२१ ई. को जर्मनी में अपना थेओलोजी
अध्ययन शुरु किए। उनका अध्ययन
अच्छी तरह सम्पन्न हुआ एवं सन् १९२६ ई.
में वे डिग्री लेकर भारत वापस लौटे।
ठीक उसी समय परस्वलेता रुपेस्स और
डेवी हेमरोम तथा बाद में सेलेंग
हपदगड़ा और बहालेन बागे जर्मनी के
बाद-जलसाफलेन (Bad Salzuflen) के

Gossner Mission

तौबत-स्कूल में काफी लड़के आई तक प्रशिक्षण प्राप्त किए। सन् १९५८ से १९६२ ई० के भीतर आठ नवयुवक भारतीय जर्मनी के विश्वविद्यालयों में अध्ययन के लिए आए जिनमें मोतन सिंह भी एक थे। पादरी एच० मिंज का जर्मन-रिश्तेदार कंडलियों में पाँच वर्षों तक घूम-घूम कर सुसमाचार प्रचार करने से लोग बहुत ही प्रभावित हुए होते हैं। इन सभी विभागों में लोगों को भाषा की कठिनाई पर विजय पाना पड़ता है। बाद के वर्षों में गोस्नर चर्च के बहुत से ~~प्रतिनिधियों~~ प्रतिनिधियों का आगमन ~~हुआ~~ जर्मनी में होता है जो

Gossner Mission

कुछ सप्ताह तक जर्मनी के रिश्तेदारी मंडलियों में भ्रमण किए तथा इन मंडलियों के मसीही-जीवन का अध्ययन कर वापस लौट गए।

विश्वयुद्ध के बाद भारत और जर्मनी का अंतर्राष्ट्रीय सम्बंध फिर से ठीक हो जाने पर जर्मन मिशनरियों को छोटानागपुर भेजने के विषय में काफी विचार-विमर्श हुआ। प्रारंभ में एक नया समझौता गोसनर-चर्च और गोसनर-मिशन के बीच होता है और पहली बार १९२०ई० में टर्म्स ऑफ रिफरेंस (Terms of Reference) के अंदर इस बात पर विचार होता है। चर्च के नियन्त्रण पर जर्मन-मिशनरी सलाहकार

Gossner Mission

और सहायक के रूप में आते हैं, लेकिन एकत्रीकरण से उन्हें कोई मतलब नहीं था। उम्मीद है कि भविष्य में भारतीय चर्च-कौंसिल और जर्मन सहकर्मियों के बीच किसी प्रकार का तनाव नहीं आएगा।

सन् १९५१ ई० में सुल्ट्ज़ (Lic. Schultz) जो बंगलोर डिवाइन कॉलेज में शिक्षक की हैसियत से अपना कार्य आरंभ करते हैं। १९५२ ई० से उसकी जगह पादरी क्लोस (Kloss) तथा १९६७ ई० से डा० डेल (Dr. Dell) काम करते हैं। १९५३ ई० में चर्च सिस्टर ईल्जे मार्टिन (Ilse Martin) को रोगियों की वैद्य-सेवा के लिए बुलाती है।

Gossner Mission

'टर्म्स ऑफ रिफरेंस' में यह निर्देश भी दिया गया है कि गोसनर चर्च गोसनर मिशन के अलावा विश्व के सभी लुथेरान चर्चों से आवश्यकता होने पर सहकर्मी भेजने के लिए निवेदन कर सकती है। इसके विपरीत यह एक आनन्द की बात होगी यदि भारत के भ्रातृ-चर्चों (Brother Churches) गोसनर चर्च के सहकर्मियों को अपने यहां काम करने का निमंत्रण देंगे। गोसनर मिशन का सम्बंध गोसनर-चर्च से उसी प्रकार का है जैसा एक माँ का बेटी से। सन् १९५४-५५ ई० में मिशन डाइरेक्टर लोकिस (Lokies) का

के छोटानागपुर आने से दोनों के बीच का स्नेहपूर्ण सम्बंध और भी गहरा हो जाता है।

3 चर्च की एकता

सन् 1878 ई० को महासभा अपनी मंजूरी दे देती है जब रेव० डी० लकड़ा प्रेसीडेंट और श्री एन० ई० होरो सेक्रेटरी के पद के लिए निर्वाचित किए जाते हैं। अब तक चारों ओर शांति छायी रहती है, कोई सामने के लिए पुराने मत-भेदों का कोई पता नहीं चलता है हालांकि वे पूर्ण रूप से मिटे नहीं है। लेकिन कब तक? शीघ्र ही

आँधी चल पड़ती है और इसका असर सन् १९५५ ई० के अप्रैल महीना के महासभा में बुरी तरह पड़ता है। अधिक-संख्यक लोग चर्च के नेतृत्व से असंतुष्ट होकर सभा छोड़ देते हैं और अपने बीच एक नयी चर्च कौंसिल का चुनाव करते हैं; प्रेसीडेंट को अपने पद से कुछ समय के पहले ही हटा दिया जाता है। लोगों के बातचीत की कोई सीमा नहीं थी। यद्यपि नये चर्च कौंसिल का चुनाव अधिक-संख्यक सदस्यों द्वारा हुआ था तथापि उसे ~~जायज~~ जायज नहीं कहा जा सकता है। इसलिए १९२२ ई०

Gossner Mission

के अक्टोबर महीना में एक असाधारण महासभा (Extraordinary Maha Sabha) बुलाई जाती है। सदस्यों को यह महसूस होता है कि यदि वे गंभीरता और साहस के साथ अपने इस उत्तरदायित्व को नहीं निभायेंगे तो चर्च की एकता एवं अखण्डता भयंकर खतरे में पड़ जायेंगे। ईश्वर के सामने प्रार्थना के साथ दोष मान लिए जाते हैं। सब कार्यों का निपटारा शांतिपूर्वक होता है, एवं नियमानुसार निर्वाचन भी होता है। सेक्रेटरी और खजांची फिर से चुने जाते हैं। चर्च के नए प्रेसीडेंट डी. डी. पी. तिग्गा बनते हैं। शांतिपूर्वक

Gossner Mission

यहाँ सभा समाप्त होती है, लेकिन उत्तरी-सिनोद के सदस्यों का एक दल भूतपूर्व प्रेसीडेंट की अगुवाई में इस परिणाम को मानने से इंकार कर देता है और नोर्वजीन के साथ शामिल हो जाता है। इस प्रकार एक बहुत ही हानिकारक झगड़ा का आरम्भ होता है जो वर्षों तक चलता है। अफ़सोस है कि इस संकट की शुरुआत उन्हीं व्यक्तियों ने किया जिन्होंने भूतपूर्व दिनों में चर्च की स्वतंत्रता के लिए अपना तन-मन लगा दिया था। गोसनर चर्च के सर्वनाश के लिए क्या यही उनका दान है? अन्याय और कुटिलता से भरे

Gossner Mission

युक्तियों के कारण आने वाले दिनों में चर्च
कौंसिल की कठिनाईयां और भी बढ़ गयी।
प्रेम और धैर्य आत्मा के फल हैं। सवाल
है, क्या एरे चर्च ने पवित्रात्मा खो दिया,
क्या ईश्वर ने उसे अपना मुँह मोड़ लिया?
यह विश्वास और धर्म की लड़ाई नहीं
थी, और न ही उरांव और मुंडा
जातियों के बीच की लड़ाई थी, क्योंकि
इसके लिए कुछ विशेष प्रमाण भी नहीं
मिलता है। दिन-प्रतिदिन के राजनीतिक
भेद-भाव, सामिगत शत्रुता, अनुशासन
की कमी एवं दुर्जय अविश्वास की
भावनाएं इस लड़ाई के चरित्र को
बतलाते हैं तथा समाज की दौड़ के

Gossner Mission

साथ चर्च की दुर्दशा बढ़ती ही जाती है। बहुधा मंडलियों को यह मालूम भी नहीं रहता है कि झगड़ा के कारण क्या है और अभिज्ञ अपने अगुओं के पीछे चल पड़ते हैं। इस रोग ने चर्च को एक तेज कुल्हाड़ की तरह झकझोड़ कर रख दिया।

नोर्थ ज़ोन सन् १९५६ ई० के मार्च महीना में होने वाले महासभा में कोई भाग नहीं लेती है। वह गोस्पल-चर्च के दो स्वतंत्र चर्चों में बंट जाने की घोषणा करती है तथा उसके लिए एक नये संविधान की मांग पेश करती है। भारतीय लुथेरान

Gossner Mission

चर्चों के फेडरेशन के चेयरमेन विशप मानिक्कम (Manikam) सन् १९५७ ई० के जून महीना में भेद-भाव को हटाने की कोशिश करते हैं। एक समझौता करवाने में उन्हें सफलता मिली। तदनुसार चर्च कौंसिल नौकर-ज़ोन के विरुद्ध चलाए सभी नीतियों को वापस ले लेती है। विरोधी-दल चर्च के बोर्ड-चर्च के प्रति आज्ञा पालन करने की प्रतिज्ञा करता है। दोनों ओर से एक नये ~~निस्सम्बन्धी~~ संविधान बनाने के लिए एक कमिशन नियुक्त की जाती है जिसमें गोसनर-मिशन के क्यूरोटोरियम का भाग लेना

Gossner Mission

आवश्यक समझा जाता है। वर्लिन से शांति की प्रस्तावनाएं (अक्टोबर १९५७) आती हैं, लेकिन छोटानागपुर में एकता की कोई संभावना दिखाई नहीं पड़ती है। दोनो दलों के बीच का दरार बढ़ता ही जाता है और दूसरी-दूसरी संस्थाओं में भी गहरी अशांति फैल जाती है। दोनों दल एक दूसरे के विरुद्ध सांसारिक कचहरी में लड़ते हैं। गोसनर चर्च अपनी इज्जत खो बैठता है, यहां तक कि की यह आपसी लड़ाई अन्य स्थानों के लिए भी एक परेशानी का कारण बन जाता है।

Gossner Mission

सन् १९५८ ई० के अप्रैल महीना में चर्च कौंसिल लुथेरान वर्ल्ड फेडरेशन को एक इकुमेनिकल कमिशन राँची भेजने के लिए निवेदन करती है। यह एक बड़ा की बात है कि गोसनर चर्च इस स्थिति में स्वयं शांति और एकता की स्थापना करने में असमर्थ होकर दूसरों से सहायता की माँग करती है। लुथेरान वर्ल्ड फेडरेशन अपनी सहायता देने के लिए तैयार हो जाती है और यह प्रस्ताव करती है कि इकुमेनिकल कमिशन के आने के पहले गोसनर मिशन के डाईरेक्टर हंस तोकिस एवं मिशनरी ~~[illegible]~~ ~~[illegible]~~

Gossner Mission

क्लिमकाईट गोसनर चर्च में प्रमाण करें।

इस प्रमाण के समय उनका कार्य था

पादरियों के एक कन्फ्रेंस द्वारा तथा

मंडलियों में घूम-घूम कर इकुमेनिकल

कमिशन के लिए एक विवरण तैयार

करना। सन् १९४४ ई० के जनवरी

और फरवरी महीने में वे भारत पहुंचते

हैं। झगड़े को तय करना बहुत

ही कठिन हो जाता है, क्योंकि दोनों

दल एक दूसरे को जबरदस्त गलत

प्रमाणित करने की कोशिश करते हैं।

नोर्वा डोन आठ दिनों तक शिकायतें

भरी दलीलें पेश करती है।

उनके संविधान की रूप-रेखा की

Gossner Mission

आलोचना जर्मन-अभ्यागतों ने खूब किया।
जो भाई को त्यागना चाहता है, वह न्याय
के विरुद्ध है। वैधानिक चर्च कौंसिल
प्रारंभ में अलग होने वाले दल से
बेशर्त चर्च कौंसिल की अधीनता
स्वीकार करने की माँग करती है,
लेकिन अंत में विरोधी दल के
साथ मिलकर सलाह-मशविरा
करने के लिए तैयार हो जाती है।
दोबल-पाठ के बाद साथ-सभा का
आरंभ होता है। शुरू में कुछ
कठिनाइयाँ होती हैं लेकिन साथ
ही बन्धु के कुछ करीब वे आ
जाते हैं। आपसी कुशलता के

Gossner Mission

बावजूद भी वे सभा में पवित्र-प्रभुभोज में भाग लेते हैं और अति शीघ्र शांति की आत्मा अपना काम शुरू कर देती है। बहुत-सी विशेष-विशेष बातों में दोनों सहमत हो जाते हैं और इस प्रकार सन् १९५५ ई. में महासभा बुलायी जाती है जो पहली बार से पाँच गुना तक बैठती है। इस महासभा में निम्नांकित विशेष निर्णय हुए: चर्च का विभाजन किसी भी शर्त में नहीं होगा। संविधान में सुधार लाना जरूरी है। १९५७ ई. में बनायी गयी कमियों को मंजूरी दे दी गयी और तुकेरान वर्ड

Gossner Mission

फेडरेशन के तीन प्रतिनिधियों को मिलाकर कमिशन के सदस्यों की संख्या बढ़ा दी गयी, और तीन सदस्यों में से एक कमिशन के चेयरमेन बनाए गए। यह कमिशन एक नये संविधान की रूप-रेखा तैयार करती है, और बाद में महासभा को उसके लिए अपनी मंजूरी देनी पड़ती थी। इस कमिशन को सभी प्रकार के प्रस्तावित सवालों पर वाद-विवाद करने की स्वतंत्रता थी। इस बीच इस कमिशन में यह भी तय हुआ कि लोगों को हरेक किस्म के लड़ाई-झगड़ों से दूर रहना, अलग-अलग

Gossner Mission

गिर्जा ~~कस्ट्रो~~ करने की मनाही तथा कचहरी से सभी प्रकार के नालिशों को वापस ले लेना चाहिए।

लुथरान वर्ल्ड फेडरेशन इस पर शीघ्र ही अपने प्रतिनिधियों बिशप मानिकम (दक्षिण-भारत), बिशप माचर (जर्मनी) और प्रो० डा० किशी (Kishi) (जापान) को चुन लेती है। इनमें अंतिम तीनों को बाद में हिन्दुस्तान आने की आज्ञा नहीं मिली। सन् १९५२ ई० के अक्तूबर महीने में बिशप मानिकम रांची में काम की तैयारी में लग जाते हैं। इस वक्त यह तय किया जाता है, यदि कमिशन के सदस्यों

में एकता की संभावना नहीं होगी तो ऐसे प्रस्तावों को स्वीकार किया जाएगा जिसकी प्रस्तावना ऐसे सदस्यों द्वारा होगी जो गोसनर चर्च के सदस्य नहीं हैं। यह निर्णय हुआ कि १९६० ई० में इक्युमेनिकल कमिशन और उसके तुरंत बाद की महासभा की बैठकी होगी। इस बीच कमिशन के सदस्यगण जो गोसनर चर्च के सदस्य थे एक नए संविधान की रूप-रेखा बनाने में आवश्यक बातों की खोज में लग गए।

४ <u>सन् १९६० ई० का नया संविधान</u>

अप्रैल महीना के मध्य में

Gossner Mission

विशप मानिकम के सभापतित्व में कठिन कामों से भरे इकुमेनिकल कमिशन की की शुरुआत होती है। बहुत प्रयत्न करने पर भी मत-भेद बना रहता है और इस प्रकार इकुमेनिकल कमिशन के सदस्यों की सम्मति को मानना आवश्यक हो जाता है। लेकिन अंत में कमिशन एकमत ~~होकर~~ होकर नए संविधान का एक नमूना महासभा के सामने पेश करती है।

सभा की बैठकी २७ अप्रेल से ~~पहली~~ १ली जुलाई सन् १९६० ई० तक चलती है। यहां बहुत दौरों का ~~वाद~~ वाद-विवाद होता है तथा ईश्वर की आत्मा भी यहां काम करती है, और अंत में

Gossner Mission

नए संविधान को स्वीकार कर लेने का विचार किया गया।

बीते वर्षों के दुःख भरे अनुभव से लोग सचेत हो गए थे इसलिए निम्नलिखित दो मूल बातों को नए संविधान में विशेष जगह दी गयी :-

१) गोसनर चर्च की एकता का भंग किसी भी मूल्य में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

२) विभिन्न दलों के अधिकारों की रक्षा चर्च के अंदर ही होगी।

इसलिए चौथी धारा (Article 4) में निम्नांकित बातें मिलती हैं :- ईश्वर की आवस्था के अधीन होकर

Gossner Mission

चर्च का यह कर्तव्य है कि वह अपने विश्वासियों की एकता विश्वास और साक्षी में ढूंढेगी तथा उसे बराबर बनाए रखेगी, चाहे वे किसी भी सामाजिक अथवा जातिय दलों के व्यक्ति हो (गलति: ३:२८)। उसी अवस्था के अधीन होकर चर्च अपने को ऐसी संगठित करे कि विभिन्न व्यक्तियों और दलों के लोग आपस में प्रेम से रहे तथा ईश्वर से दी गयी स्वतंत्रता का आदर करे। (१का कोरिन्थ ६: १-१२)।

चार अंचलों के बनाए जाने के कारण चर्च के शासन-पद्धति में एक नया नियम आ गया।

Gossner Mission

इन अंचलों का नाम था नॉर्थ वेस्ट अंचल, साऊथ ईस्ट अंचल, उड़ीसा अंचल और आसाम-अंचल। रांची की मंडली को, एक केन्द्रीय मंडली (Headquarter Congregation) होने की वजह से एक विशेष स्थान (Status) दिया गया और खुंटीटोली सिनोद के लिए कोई समाधान नहीं मिलने के कारण उसे कुछ समय के लिए वैसा ही छोड़ दिया गया। अंचल सब अपने क्षेत्रों के भीतरी विषयों में स्वयं ही उत्तरदायी हैं और अंचलों के शासनार्थ अपने क्षेत्रों से जिम्मेदारी व्यक्तियों का निर्वाचन करते हैं। सम्पूर्ण गोस्नर

Gossner Mission

चर्च के केन्द्रीय-शासन के निमित्त प्रत्येक अंचल अपने प्रतिनिधियों को केन्द्रीय-सलाहकारी सभा (KSS) में भेजती है। ये सभा दूसरे चर्चों से सम्बंध बनाए रखने तथा, धर्मशास्त्री के प्रशिक्षण देने का, सुसमाचार प्रचार तथा मिशन के जायदाद के देखभाल करने की जवाबदेही रखती है। इन उल्लिखित विषयों तथा सम्पूर्ण चर्च के अन्य विषयों के लिए बोर्ड (Boards) बनाए गए। अब तक के महासभा के कार्य का भार नए के.एस.एस. के कंधों पर लाद दिया गया। महासभा अब कलीशिया संघ में बदल दी गयी, और इसकी

Gossner Mission

बैठकी छः वर्षों में एक बार विवरणों को सुनने और नए-नए सिफारिशों पर विचार-विमर्श करने के लिए निश्चित की गयी। अल्पसंख्यक दलों को अन्याय से बचाने के लिए मंडली के इलाकाओं और अंचलों में "अल्पसंख्यक लोगों की रक्षा समितियाँ" भी बनायी गयीं। इन समितियों को यह देखने का कार्य सौंपा गया कि भविष्य में कोई भी दल दूसरे दल द्वारा अनादर की दृष्टि से देखा नहीं जाएगा। गोस्नर चर्च का सम्पूर्ण नेतृत्व प्रमुख अध्यक्ष (प्रेसीडेंट) के हाथ में दे दिया गया।

उसका निर्वाचन अध्यक्षों द्वारा

Gossner Mission

एकमत होकर अथवा चिट्ठी डाल कर किया जाएगा। तीन वर्षों की सेवा की अवधि के बाद उप-प्रमुख अध्यक्ष उसका स्थान ग्रहण करेगा। सम्पूर्ण चर्च के कार्यों जैसे सुसमाचार का प्रचार, जायदाद की देखभाल, शिक्षा और वेधशास्त्रीय प्रशिक्षण के लिए पहले चार बोर्ड (Boards) बनाए गए।

प्रत्येक संविधान मनुष्य का कार्य है अतएव उसमें त्रुटियाँ आ ही जाती हैं। समय की चाल और व्यवहारिक अनुभव इसके द्योतक हैं। गोसनर चर्च

के संविधान में भी बहुत-सी कमजोरियाँ हैं।

विभिन्न स्थानों में यह बात स्पष्ट झलकती है कि लोगों को एक दूसरे पर कोई सच्चा विश्वास नहीं है। विशेषकर प्रमुख अध्यक्ष का पद इसके कारण काफी निकृष्ट किया गया जिसका चुनाव अन्य अध्यक्षों की तरह तीन वर्षों की अवधि के बाद फिर से संभव नहीं, या समझने योग्य है यदि वे केवल गोस्पर चर्च का प्रतिनिधित्व करते, लेकिन संविधान उसे ऐसे-ऐसे उत्तरदायित्व के कार्य देता है कि उसका तीन वर्षों से भी अधिक समय तक इस पद में रहना अत्यंत

Gossner Mission

आवश्यक लगता है। दूसरी ओर बीते दिनों के अनुभवों के कारण विरोध से बचने के लिए महत्वपूर्ण फैसलाओं को हिचकिचाहट के साथ पास किया जाता है। उदाहरणार्थ 22वीं धारा (Article 22) को लिया जा सकता है, जिसके अनुसार बोर्ड (Boards) तब अपने विषयों में स्वतंत्र हैं, लेकिन वास्तविकता कुछ और ही है। उनमें यह साहस नहीं कि किसी प्रकार का निर्णय करें, इसलिए इसका भार के० एस० एस० के ऊपर छोड़ दिया जाता है। और के० एस० एस० भी इन मामलों में सुरक्षित नहीं,

Gossner Mission

क्योंकि उसे यह पता नहीं रहता है कि कब और कहां अंग्रेजों की सहायता की जरूरत हो जाए। अतएव यह आश्चर्य की बात नहीं है यदि केन्द्रीय-शासन का काम होता तो खूब है लेकिन धीरे-धीरे। इसमें संदेह नहीं कि खूंटीटोली के भविष्य का सवाल आने वाले वर्षों में भी एक सवाल बना रहेगा। कोई भी शक्ति नहीं यह होना सकता है कि संविधान में बड़ी-बड़ी त्रुटियां नहीं हैं वरन् उसके प्रयोग में।

लोगों के विचार भिन्न-भिन्न हैं, लेकिन यह साफ है कि बीते दस

Gossner Mission

वर्षों में संविधान का अच्छा प्रभाव पड़ा है। इसने गोसनर-चर्च की एकता की रक्षा तथा उसे दृढ़ किया है। अब फिर से विभाजित होने के लिए यह बस नहीं होती है। अब तक सभी स्थानों में शांति लाने में यह संविधान असमर्थ रह गया है, लेकिन शांति की एक अच्छी नींव अवश्य डाल दिया है। आने वाले वर्षों में संविधान में ~~संशोधन~~ संशोधन लाना जाएगा अथवा एक बिलकुल नया संविधान बनाना जाएगा, यह कहा नहीं जा सकता है।

गोसनर-चर्च का वर्तमान संविधान सन् १९ ई० के १ली जुलाई

से वैध घोषित कर दिया गया। अंचलों में निर्वाचन होने के पश्चात् प्रमुख अध्यक्ष के पद के लिए चिट्ठी डाली जाती है जहाँ रेव० डुरान वाकड़ा इस पद को संभालते हैं। उप-प्रमुख अध्यक्ष डा० नागे सन् १९६६ ई० में उसके उत्तराधिकारी हुए। रेव० सी० बी० आईन्द १९ १९६६ ई० से ~~[illegible]~~ चर्च के सबसे ऊँचे पद को सुशोभित करते हैं, उसके बाद इस पद को रेव० बी० मिंज संभालेंगे। कि० एस० एस० ने १९६८ ई० में Church Court of Constitution बनाने का फैसला किया जिसके कंधों में संविधान

Gossner Mission

अनुवाद करने का भार सौंपा जाएगा।

Gossner Mission

पाँचवा अध्याय

गोसनर चर्च की सेवा

१९६०- १९६९

१ सुसमाचार - प्रचार

गोसनर-चर्च के इतिहास के परिच्छेद विभिन्न-चरित्रों को दिखलाते हैं। आत्मनिर्भरता पाने के प्रयत्नों तथा एकता के लिए युद्ध के बाद ऐसी शक्तियाँ स्वतंत्र हो गयी जिससे गोसनर चर्च भीतरी और बाहरी मामलों में प्रभावशाली बन सके। चीगु रिबुस्त की आज्ञा एवं अपनी स्थिति के कारण गोसनर चर्च

Gossner Mission

प्रारंभ से ही एक मिशनरी चर्च बनी। यहाँ तक की संकटकाल में भी मंडलियों में वृद्धि होती है। सन् १९५५ ई० में सदस्यों की संख्या दो लाख से ३ भी अधिक बढ़ गयी और १९९९ ई० के पचास वर्षीय जुबिली तक इनकी संख्या लगभग दो लाख पचहत्तर हजार हो जाएगी। ऐसी चर्च की वृद्धि हो जाएगी जो केवल शासन और व्यवस्था के कामों में लगी रहती है। ऐसी चर्च जो अपने सदस्यों को ईश्वर के वचन के प्रति विश्वास योग्य बनाती है जीवित रहेगी और दुर्बलता में इससे ईश्वर के सामर्थ का अनुभव करेगी। सन् १९९१ ई० को

Gossner Mission

नयी दिल्ली में विश्व के चर्चों की जो कांफ्रेंस हुई वह एक बहुत ही विशेष विषय था। कांफ्रेंस तब अंत हुई तो बहुत से विदेशी चर्च के मिशन गोसनर चर्च के मिशनरी कार्य और अभिप्राय से प्रभावित हुए बिना नहीं रहे।

सुसमाचार प्रचार का ध्यान विशेषतः गांवों के आदिवासियों के बीच होता है। मिशन-कार्य के कुछ कार्य-क्षेत्र गोसनर चर्च के उत्तर-पश्चिम तथा दक्षिण में हैं। जो इंडिया मिशन बोर्ड ने सन् १९४४ ई. को दक्षिणी-क्षेत्र में काम शुरू किया तो मिशन-कार्य के लिए दरवाजा खुला

Gossner Mission

~~स्कूल~~ पाया । जब मिशनरी लरुया स्वदेश वापस चले गए तो रेव० डब्ल्यू० बी० तिग्गा इसका उत्तरदायित्व अपने कंधों पर लिए । सन् 1968 ई० को 'बोर्ड ऑफ एवंगेलिज्म एंड लिटरेचर' दक्षिण पूर्वी अंचल एवं उड़ीसा अंचल के सहयोग से इस काम को अपने सिर ले लेती है । सिंहभूम, बलरामपुर और बगड़ा जिलाओं में नयी-नयी कंडलियों की नींव डाली जाती है । रिवस्तानी विश्वास के विरोधी विशेषकर आर्य-समाज मिशन-कार्य में काफी रुकावट डालते हैं । नए कंडलियों के अंचलों में विभाजित किए जाने से काफी

Gossner Mission

कठिनाईयां होती हैं, क्योंकि उनकी आर्थिक-
स्थिति मजबूत नहीं है। यही हालत
उत्तर-पश्चिम के क्षेत्रों का भी है, लेकिन
इन कष्टों के होते हुए भी सुरगुजा का
मिशन-कार्य प्रशंसनीय है।
दक्षिण-भारत के एक निपुण मिशनरी
की अगुवाई में तथा अमरीकी
लुथेरानों की आर्थिक सहायता से
अम्बिकापुर के करीब आठ
हजार उरांव लुथेरान मंडली में
मिला लिए गए। लेकिन गोसपल चर्च
का संगठनीय-सम्बंध वैसा नहीं
जैसा कि को होना चाहिए।
जयपुर क्षेत्र, जो अम्बिकापुर

Gossner Mission

और नोर्थ वेस्ट अंचल के बीच स्थित है, में मिशन-कार्य बहुत ही उत्साह एवं अदृढ़ ढंग से होता है। आसाम में भी प्रभावशाली सुसमाचार प्रचार की नयी संभावनाएं हैं। वहां के पहाड़ी जाति के लोग जैसे मिकिर और दुफला प्रचारकों को अपने पास भेजने का निवेदन करते हैं। इस सिलसिले में पहला प्रचारक भाषा की कठिनाई के कारण असफल रह जाता है। लेकिन इस जाति के कुछ बपतिस्मा पाए हुए युवक नवजवान लोगों को अब छोटानागपुर में प्रशिक्षण दिया जा रहा है जो सन् १९६८ ई० से

इस पहाड़ी-क्षेत्र में भी मिशन का काम बड़े उत्साह से करेंगे।

मिशन-कार्य का उत्तरदायित्व बोर्ड ऑफ एवंगेलिज़ा के कारण सिर्फ के०एस०एस० के सिर पर नहीं परन्तु अंग्रेजों और इलाकाओं पर भी है। वहाँ की की सफलताओं में काफी अंतर है, हालांकि प्रत्येक गाँव के प्रत्येक दरवाजा में मिशन के काम पड़े हुए हैं। कुछ जागृत कंडलियाँ अपने पड़ोस में सु-समाचार प्रचार के कार्य के लिए लोगों को भेजती हैं, लेकिन दूसरी ओर ऐसी भी कंडलियाँ भी हैं जो सुस्त हैं और उन्हें जगाना जरूरी है।

Gossner Mission

आंदोलनी मतभेद और झगड़ों ने चर्च को कुछ मामलों में कुछ हद तक पंगु और निष्क्रिय बना दिया। यह सच है कि नए और प्रभावपूर्ण मिशन-कार्य के लिए चर्च को सदैव रुपये-पैसे की आवश्यकता है। कोई आंकड़े बंगो-लिङ्ग सात ने दो लाख से भी अधिक रुपया अस्त्रस्तानों के बीच सुसमाचार प्रचार के काम के लिए खर्च करती है और इस कार्य के लिए आधे से भी अधिक रुपया गोसनर मिशन से मिलता है एवं कुछ सहायता लुथरन वर्ल्ड फेडरेशन से भी मिलती है जिससे मिशनरियों को तनख्वाह मिलने में किसी किस्म की कठिनाई न हो।

Gossner Mission

गोस्नर-मिशन इस बात का स्मरण दिलाती रही है कि गाँवों के अलावा शहरों और नए-नए औद्योगिक क्षेत्रों में मिशन-कार्य की अपेक्षा कदाचित् नहीं होनी चाहिए। आदिवासी लोग अपने देश के औद्योगिकरण से खुश नहीं हैं, क्योंकि उन्हें अपने खेतों से हाथ धोना पड़ता है और दूसरी जगह से आकर बसने वाले लोगों के कारण उन्हें नौकरी भी नहीं मिलती है। लेकिन इस स्थिति में परिवर्तन लाने में देर नहीं है जब छोटानागपुर के लोग भी आधुनिक प्रशिक्षण पाएंगे। थोड़ी-बहुत शिक्षा पाए हुए ग्राम-निवासियों के लिए शहरों

Gossner Mission

आकर्षण के केन्द्र हैं और ऐसे कलियों की संख्या में आने वाले वर्षों में अतिशीघ्र वृद्धि होगी और ऐसे लोगों को सुसमाचार की जरूरत है अतः वे अपने रीत-रिवाजों, जातियता और धर्मों को छोड़ देंगे। गाँवों की तुलना में शहरों में दूसरे प्रकार के धर्म-प्रचार की विधियों की जरूरत है। इस किस्म के ढंग गोस्पर चार्च विशेषकर जमशेदपुर, राउरकेला, हटिया और लोधारों में प्रयोग कर रही हैं। अंतिम दो जगहों में गोस्पर-मिशन की सहायता से मकान बनाने के लिए जमीन खरीद ली गयी है। जो भी इन शहरों में सुसमाचार

Gossner Mission

प्रचार करने का काम करता है उसे

औद्योगिक दुनियाँ की समस्याओं से

वाकिफ होना जरूरी है। दुर्गापुर में

एक इकुमेनिकल ट्रेनिंग इंस्टीच्युट है।

सन् १९६६ ई० में गोस्नर चर्च के पास

पादरी इस इंस्टीच्युट में कुछ दिनों तक

~~प्रशिक्षण~~ प्रशिक्षण पाएंगे, जिससे वे

नए ढंग के कामों को और भी

निपुणता से कर सकें। सन्

१९६७ ई० के अप्रेल महीना में

से बोर्ड ऑफ एवंगेलिज्म के

काम के लिए एक डाईरेक्टर

बहाल किए गए, जिसे गोस्नर

चर्च का मिशन-कार्य और

Gossner Mission

भी जोर-शोर से किया जा सके। डा० फॉस्ट सिंह जर्मनी से प्रशिक्षण प्राप्त हुए हैं। धर्म-प्रचार का काम इस बात को निर्धारित करता है कि गोसनर चर्च का धर्मशास्त्रीय-प्रशिक्षण किस हद तक अच्छी है। इन वर्षों में चार वर्षों के प्रशिक्षण के साथ-साथ धर्मशास्त्रीय फॉलेज की स्थिति में काफी सुधार आ गयी है। फॉलेज अब नए मकानों में आ गयी है। विद्यार्थियों की संख्या इतनी बढ़ गयी है जैसे पहले कभी नहीं थी। यहाँ पढ़ने के लिए विद्यार्थियों का मैट्रिक पास होना जरूरी है।

Gossner Mission

सन् १९६८ ई० को प्रिंसिपल रेभ० सुटिन की अचानक मृत्यु होने के बाद रेभ० डा० एन० मिंडा प्रिंसिपल पद को संभालते हैं। सन् १९५४ ई० में गोविन्दपुर के प्रशिक्षण स्कूल की स्थापना हुई और तब से यहां की काफी उन्नति हुई है। दो वर्षों तक यहां विद्यार्थियों को शिक्षा दी जाती है। इस स्कूल में करीब पचास नवजवान विद्यार्थी हैं, जो चर्च के प्रायः सभी क्षेत्रों से आते हैं। लोगों के सामने आजकल यह सवाल उठता है कि क्या भविष्य में विभिन्न-भाषाओं के क्षेत्रों के लिए यथेष्ट रूप से

Gossner Mission

प्रचारकों को प्रशिक्षण देकर तैयार किया जा सकता है। रेव० सिलास कुजूर की अगुवाई में इस स्कूल का प्रशिक्षण कार्य चलता है। तबिथा-स्कूल जो इसी जगह है अपना कार्य कुशलता के साथ करती ही जा रही है, यद्यपि कि सुसमाचार-प्रचार के कार्य के लिए महिलाओं को नियुक्त करना एक असाधारण बात है।

2 गोसनर चर्च की सामाजिक-सेवा

विश्व के बहुत से धर्मों के लिए एक व्यवस्था के अधीन रहना

Gossner Mission

कोई विशेष महत्व नहीं रखता। लेकिन गोसनर चर्च को यीशु-ख्रिस्त की अवस्था में रहकर रोग, भूखमरी, अन्याय और अज्ञानता के विरुद्ध लड़कर एक ऐसे जीवन को पाना है जो मनुष्यों के लिए घमंड का कारण हो। बीते शताब्दी के सरदार क्रांति की आवाज ~~उठायी~~ उठाये, और आज भारत के अन्य भागों के अन्य राजनीतिक उत्साही लोग यही काम कर रहे हैं। गोसनर चर्च का अभिप्राय क्रांति नहीं है परन्तु एक सुन्दर जीवन-स्तर। इस प्रकार चर्च भारत के ऐसी शक्तियों

Gossner Mission

चिकित्सा-विभाग की सेवा का नाम लिया जा सकता है। दुःख है कि इस सिलसिले में मिशनरियों का पहला प्रयत्न प्रथम विश्व-युद्ध के पश्चात् आगे नहीं बढ़ाया जा सका। रांची का छोटा एलिजाबेथ अस्पताल एंग्लिकनों के बंद अस्पताल से मिला दिया गया। लोहरदगा में बीस से तीस कोढ़-ग्रसित लोगों के लिए एक घर खोला गया था लेकिन उसे बंद कर दिया गया। उसके विपरीत कुरलिया में जो कोढ़ियों का एक बड़ा अस्पताल खोला गया था वह आज भी है। सन् १९१३ ई. में

को सम्भालती है और वैसे काम में
भाग लेती है जिसे राष्ट्र की उन्नति हो।

सामाजिक-सेवा के लिए गोसनर-चर्च
को दया, मनुष्य, बुद्धि और ज्ञान की
ज़रूरत है। गोसनर-चर्च गोसनर मिशन
के प्रति बहुत आभारी है कि गोसनर-
चर्च के लोग जर्मन सहकर्मचारियों
के उचित कामों का भार अपने
कंधों में लेने के योग्य हो गए।
इस काम को जर्मन-मिशनरियों ने
बड़े उत्साह के साथ शुरू
किया था और इस का अधिक
ज़ोर दिया।

सर्वप्रथम औषधि-और-

Gossner Mission

वहां करीब सात-सौ रोगियों को जगह दी गयी। बाद में इस कार्य का भार "मिशन टु द लेपर्स" को दे दिया गया। बहुत लम्बी अवधि के विश्राम के पश्चात् गोसनर-मिशन गोसनर चर्च के कहने पर अस्पताल का रखरखाव काम शुरू करती हैं। 12 मई 1895 ई० को सिस्टर गार्डिन एवं उड़ीसा के प्रांत के देवघर जिला के आमगांव में पहुंची। जब वहां डी० ई० एलो० चर्च अस्पताल के पहले घर बनाए जा रहे थे तो वह आस-पास के बहुत से रोगियों की सेवा और सहायता

Gossner Mission

करती है। सन् १९५७ ई० को डाक्टर के रूप में यहाँ डा० बिशाप (Dr. Bischof) आते हैं, क्रमशः बाद में उसकी जगह डा० ग्रुन्डलर (Dr. Gründler) और डा० रोवेडर (Dr Rohwedder) आते हैं। उसी तरह बहुत-से जर्मन सिस्टर इस कठिन सेवा में लगी हुई हैं। प्रत्येक वर्ष यहाँ बीस हजार से भी अधिक रोगियों की सेवा की जाती है। आजकल लूथरन अस्पताल में लगभग साठ रोगियों के लिए खाट हैं, और यहाँ आने वाले अधिकतर लोग आदिवासी हैं। १९६८ ई० से सुश्री डा० एनी बागे के

Gossner Mission

के नेतृत्व में इस अस्पताल का काम चला रहा है। उसकी सहायता के लिए बहुत से भारतीय नर्सों के अलावा एक जर्मन सिस्टर भी हैं। यहां का प्रायः सभी खर्च जर्मनी की गोसनर-मिशन देती है। इस बीच अमगाँव में एक क्रिस्तान मंडली की भी नींव डाली गयी है, और आशा है कि इस देश के निवासी भरोसे सुसमाचार को ग्रहण करेंगे।

बहुत वर्षों से इसकी मांग बढ़ती ही जा रही है कि क्यों न इसी प्रकार का एक अस्पताल लुथेरान क्रिस्तानों के केन्द्र छोटानागपुर में खोला जाए। गोसनर-चर्च ने एक अस्पताल की

Gossner Mission

जगह औषधालय (Dispensary) खोलने का निश्चय किया, क्योंकि अस्पताल में बहुत रुपये-पैसे का खर्च होता है। सिस्टर इलेज नार्टिन, जिसने अमरगांव में प्रसिद्धि पायी थी इस काम के लिए टकरना गयी, एवं 9 वीं अगस्त 1966 ई. को वहां नमूना के रूप में चर्च के स्वास्थ्य-विभाग की उन्नति के लिए एक औषधालय खोला गया। बहुत ही संकटावस्था के लिए कुछ चारपाईयों की भी आवश्यकता है। अन्यथा वहां जो झुंड के झुंड रोगी आते हैं, उन्हें वे सलाह एवं दवा देकर घर वापस चले जाते हैं। वहां साथ ही कुछ लोगों को

Gossner Mission

कमौंडरी की शिक्षा भी दी जाती है जिससे नए दरवाजे खोले जा सकें। इन्हें दरवाजा खोलने के लिए प्रारंभिक जरूरत की चीजें दी जाती हैं जिसे वे बाद में अपने साथ ले जा सकें। इलाका ऐसे स्टेशनों के लिए उत्तरदायी है और उनकी इच्छा पर यह निर्भर करता है कि गोविन्दपुर, किंकिला, करिमती तथा अन्य जगहों में ऐसे प्रयोग किए जाएं अथवा नहीं।

गोस्नर-चर्च की सामाजिक-सेवा के लिए तीन वर्षों में जर्मनी से मिले बड़ी आर्थिक सहायता से दो उद्योग-केन्द्रों (Development Centres) की स्थापना हुई है। उनमें से एक

खुंटीटोली के आसपास रहने वाले देहाती-
कृषकों की सेवा के लिए है। सन् १९६१ ई०
के अप्रेल महीना में 'एग्रिकल्चर ट्रेनिंग ~~सेन्टर~~
एंड डेवलोपमेंट सेंटर' की नींव डाली गयी
और २३ फरवरी १९६४ ई० को उसका
संस्कार हुआ। आरम्भ में इस सेंटर
का कार्य डा० युंगहंस (Dr. Junghans)
के नेतृत्व में हुआ और १९६५ ई० से
डाइरेक्टर ब्रुन्स (Bruns) उनकी जगह
में आए। खुंटी टोली में गोसनर-चर्च
की जो जमीन है वह करीब दो सौ
पचास एकड़ है एवं यहाँ की उपज
बहुत खराब थी। लेकिन अब स्थिति
बदल गयी है। खेती के नये

Gossner Mission

वैज्ञानिक ढंग के प्रयोग से धान के धान तथा अन्य गल्लों की उपज शीघ्र ही बहुत बढ़ गयी। नवयुवक किसानों को यहाँ प्रशिक्षण मिलता है, इसके अतिरिक्त यहाँ के हाई-स्कूल को गोसनर चर्च में एक आदर्श-स्कूल बनाने की कोशिश की जा रही है। लेकिन किसानों को अब तक इसमें कोई सफलता नहीं मिली है। इसलिए सन् १९६६ ई० में एक सहयोग-समिति की स्थापना हुई। इसके सदस्यों को सलाह, कृत्रिम-खाद और अच्छे बीज दिए जाते हैं। सरनाटोली में अब इसकी एक ब्रान्च खोली गयी है। इस प्रकार के काम तथा सिंचाई

Gossner Mission

के सिलसिले में सरकारी-योजनाओं के साथ-साथ कार्य करने से इस क्षेत्र के किसानों की स्थिति में दिन-प्रति-दिन काफी सुधार आ रही है।

सन् १९६६ ई० के पश्चात से एग्रिकल्चर ट्रेनिंग सेंटर और सहयोग-समिति के कार्य भारतीय नेतृत्व में हैं।

दूसरा उद्योग-केन्द्र कुदी में खोला गया है जिसका संस्कार १९६४ ई० के १६वीं अप्रेल को मिशन डाईरेक्टर डा० बर्ग (Dr. Berg), वर्तिन ने किया। इस केन्द्र का नाम टेक्निकल ट्रेनिंग सेंटर (TTC) रखा गया। यहाँ आजकल लगभग सत्तर नवयुवक भारतियों को टेक्निकल ट्रेनिंग दी जा रही है।

Gossner Mission

इसके अतिरिक्त यहां औद्योगिक-उत्पादन का ध्यान भी होता है। टी॰टी॰सी॰ का रहन-सहन तथा यहां के बहुत से मकान छोटानागपुर के भविष्य के जीवन के चित्र को झलक देते हैं। गोसनर-चर्च में अधिकतर किसानों की मंडलियां हैं, इसलिए इन्हें इन परिवर्तनों को एवं टी॰टी॰सी की आवश्यकता को समझने के लिए सीखना पड़ेगा। बहुत से लोग यहां के प्रशिक्षण से बहुत खुश हैं। टी॰टी॰सी॰ फुदी गोसनर चर्च के लिए कुछ नये मकानों को बना रही है तथा कुछ पुराने मकानों की मरम्मति भी कर रही है। इस संस्था के नेतृत्व के लिए गोसनर

मिशन क्रमशः थील (Thiel), स्वर्क (Schwerk) हेरटेल (Hertel) तथा अन्य मिशनरियों को भेजती रही है। कुरुविला में भी इसी प्रकार की एक संस्था खोली गयी थी लेकिन खेद की बात है कि इसे बंद कर देना पड़ा।

अमगांव, खुंटीटोली तथा फुदी की संस्थाएं कै० एस० एस० के अधीन हैं। सन् १९६८ ई० से 'डिपार्टमेंट फॉर चर्च सोसल सर्विस' बनायी जायगी जो चर्च के सामाजिक संस्थाओं के लिए उत्तरदायी होगी इसके सदस्य निपुण लोग हैं जो गोसनर चर्च के बढ़ते हुए सामाजिक-कार्यों को अच्छे और नए ढंग से करने का

उपाय ~~ढूंढ़ेंगे~~ ढूंढ़ेंगे तथा उसे नियंत्रण भी करेंगे। इस क्षेत्र में दूसरे ~~क्षेत्रों~~ चर्चों के साथ काम करने की कोशिश में गोसनर चर्च लगी हुई है।

इस सिलसिले में गोसनर चर्च के रांची में स्थित छापाखाना को भूला जाना उचित नहीं है। इसकी नींव सन् १८७४ ई० में डाली गयी थी और सन् १९९४ ई० में जर्मनी की सहायता से इसका रूप-रंग पूर्ण तौर से बदल दिया गया है। यह एक आधुनिक छापाखाना बन गया है।

श्री मिटेनहुबर (Mittenhuber) और सुपरिन्टेन्डेन्ट लूथर (Luther) जो क्रमशः १९६६ ई० और १९६८ ई० तक यहां थे — के

Gossner Mission

नेतृत्व ने इस संस्था के काम की प्रशंसा बाहर के लोग भी करने लगे हैं। चर्च के साहित्य-विभाग के लिए यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण संस्था है। यहाँ नवयुवकों को लगातार ट्रेनिंग भी मिलती है। यह संस्था 'बोर्ड फॉर एवंगेलिज्म एंड लिटरेचर' के आधीन है।

२. एक बड़ा उत्तरदायित्व

गोसनर चर्च को अपने पचास वर्षों के आत्मशासन की स्वतंत्रता के भीतर विदेशी मित्रों से काफी व्यक्तिगत एवं आर्थिक-सहायता मिली। बाहरी और भीतरी कठिनाईयों के कारण बड़े संकट की घड़ी आयी, जिसके कारण चर्च को धन्यवाद के

के साथ दूसरों की सहायता स्वीकार करनी पड़ी। इस अवस्था में चर्च को शासन, प्रशिक्षण तथा सामाजिक-सेवा के क्षेत्रों में सहायता की बहुत ही आवश्यकता थी। मंडलियां अपने ही खर्चों से परेशान रहती थीं। एक ओर यदि सम्पूर्ण चर्च के कर्तव्य के प्रति मंडलियों में विश्वास की कमी थी, तो दूसरी ओर चर्च के पास ऐसी कोई चीज नहीं थी जिससे वह उन्हें सहायता दे सकती ~~थी~~ थी। सन् १९६०ई० से चर्च की परिस्थिति में काफी सुधार आ गयी है। केन्द्रीय-शासन तथा उसकी संस्थाओं के प्रति लोगों का विश्वास बढ़ गया है। शांति आ जाने के

Gossner Mission

फलस्वरूप बाहर की चर्च के सम्मान में वृद्धि आ गयी है। यही कारण है कि १९६४ ई० की एशियाई लुथेरान कान्फ्रेंस की बैठकी रांची में हुई, जिसमें न जापान, इंडोनेशिया, मलेशिया, आस्ट्रेलिया तथा अन्य देशों के चर्चों के अस्सी से व्यक्तियों ने भाग लिया।

गोस्नर चर्च अब वयस्क और मजबूत हो चुकी है। किसी व्यक्ति को अपने मित्रों से उन बातों के लिए सहायता माँगना उचित नहीं जिसे वह स्वयं कर सकता है। लुथेरान वर्ल्ड फेडरेशन और गोस्नर चर्च में एक समझौता हुआ है जिसके अनुसार अब तक जो सहायता मिलती रही है उसे धीरे-धीरे घटाया

Gossner Mission

जाएगा एवं शीघ्र ही बंद कर दिया जाएगा।

सन् १९६४ ई० से १९६८ ई० के भीतर गोसनर चर्च और गोसनर-मिशन के बीच बहुत से विषयों पर गंभीरता से बात-चीत हुई और कुछ निर्णय भी हुआ।

तद्नुसार भारतीय चर्च और भी अधिक उत्तरदायित्व अपने कंधों पर लेगी।

दोनों के बीच यह तय हुआ और इसे जरूरी एवं संभव ~~समझ~~ समझा जाता है कि जर्मन सहकर्मचारियों को गोसनर चर्च की सेवा से धीरे-धीरे हटाया जाए तथा उनकी जगह भारतीयों को दे दिया जाए।

सन् १९६९ ई० से गोसनर-मिशन किसी भी जर्मन को स्थायी रूप से भारत नहीं

Gossner Mission

जोड़ेगी। यहाँ इस बात को कदाचित् हमें नहीं भूलना चाहिए कि भारत-सरकार इस मामले में आसानी से भारत में रहने की अनुमति नहीं देती है।

गत वर्षों में गोसनर-मिशन ने छोटानागपुर में काफी रुपया भेजा। यह आर्थिक सहायता विशेषकर गर्ल्स के सामाजिक सेवा, बेरोजगारी-प्रशिक्षण तथा मकानों के बनाए जाने के लिए मिली। राँची में बहुत से नए मकान खड़े किए गए तथा पुराने मकानों को मरम्मत किया गया। अंचलों को भी सहायता मिली और कुछ स्थानों में रहने के कुछ घर बनाए गए, जिसे

Gossner Mission

मोड़ में दिया जाता है। कुछ जगहों में
छात्रावास भी तैयार गए। कुछ गिर्जा घरों को
बुनियादी रूप से मरम्मत किया गया, उसमें
घेरा डाला गया तथा नए जमीन भी खरीदे
गए। इस विषय में किंकेल का उदाहरण
दिया जा सकता है।

अब दोनों उद्योग-केन्द्र अपना खर्चा
स्वयं ही संभालने लगे हैं और कुछ ही
दिनों में वे इस मामले में स्वतंत्र हो
जाएंगे। इन संस्थाओं को तब बाहरी
मदद की कोई जरूरत नहीं होगी।

बेथोतोजी-शिक्षा चर्च का अपना विषय
है और इसका लोग वह अपने बंधों
पर उठा सकती है। मंडलों को इस

Gossner Mission

मामले में सहायता देना है और बाकी रकम रांची के उन परती जमीनों से मिलेगी जिन्हें किराया (lease) में दिया जाएगा। इस विषय में अभी कारोबार चल ~~रही है~~ ही रहा है। और बहुत से ऐसे काम हैं जिसे गोसनर चर्च स्वयं ही कर सकती है, ~~जो~~ जहां तक कि वह कुछ नए कामों की शुरुआत भी कर सकती है, क्योंकि यह एक गरीब चर्च नहीं है। जर्मन-मिशनरियों की बुद्धिमानी और दूरदर्शिता के फलस्वरूप बहुत जमीन खरीदी गयी। करीब चौदह विभिन्न जगहों में गोसनर चर्च के पास लगभग चौदह-सौ एकड़

जमीन है, उसमें आधी जमीन रंकुटीटोली, कोरोंडो, रांची, मर्चा और गोविन्दपुर में है। प्रत्येक के नाम एक सौ एकड़ से भी अधिक जमीन पड़ी है। अब तक इस जमदाद का शासन ठीक से नहीं हुआ। इंगलैंड के मिस्टर मोन्टाग (Montag) जो चर्च के आर्थिक-सलाहकार (Finance Advisor) हैं सन् १९६५ और १९६६ ई० में चर्च के जमीन का नाप किया तथा कुछ प्रस्ताव भी सामने पेश किया। यदि आपके कुछ ही भाग को व्यवहार में लाया जाएगा तो इसमें संदेह नहीं कि चर्च को इतनी आमदनी मिलेगी जितना की ख्रीस्तक ओं अपने मित्रों से भी नहीं मिलती है।

Gossner Mission

गोसनर-चर्च और गोसनर-मिशन के सम्बंध में जो परिवर्तन १९६० ई० से आएगी, उसका यह अर्थ नहीं कि गोसनर-चर्च अलग हो जाएगी। जर्मनी और भारत का पारस्परिक अन्तरङ्ग सम्बंध बना रहेगा। गोसनर-मिशन भविष्य में छोटानागपुर के आदिवासियों के बीच मिशन काम करने के लिए प्रतिवर्ष एक लाख पचास हजार रुपया देने के लिए तैयार है। उसी प्रकार भारतवर्ष के अस्पतालों को भी सहायता दी जाएगी, जिसे रोगियों की सेवा बीते दिनों की तरह ही की जा सके। इसके अतिरिक्त गोसनर-मिशन ने इन वर्षों के भीतर जर्मनी के

Gossner Mission

विभिन्न चर्चों तथा गोसनर चर्च के बीच एक सम्बंध की स्थापना किया। परस्पर भेंट-मुलाकात भी हो चुकी। यदि भविष्य में फिर कभी संकटावस्था आ जाए तो पुराने और नए मित्रों की कमी नहीं तो उसकी सहायता के लिए दौड़ पड़ेंगे। यहां यह कहा जा सकता है: गोसनर मिशन और गोसनर चर्च ~~के बीच का और बेती~~ का पारस्परिक सम्बंध एक माँ और बेटी का हो और यह बना रहेगा, और इस सम्बंध के रहते हुए माँ ने अपने इस बेटी को उसके नए भाई-बहिनों के पास पहुँचा दिया। १९६६ ई० के

Gossner Mission

शरद् ऋतु में जब राँची ~~अंतर्राष्ट्रीय~~ में गोसनर चर्च की पचासवीं जुबिली बड़े सज-धज से मनायी जाएगी अर्थात् भारतीय मसीही-भाईयों को अपने बीच विदेश से आए अनगणित मेहमानों को भी देखने का मौका मिलेगा और यह उनके लिए एक आनन्द का विषय होगा, क्योंकि वे यह पहचान पाएँगे कि उनका भ्रातृत्व का सम्बंध दूसरे देशों के विभिन्न चर्चों से होगा। गोसनर चर्च जो अब बड़े उत्तरदायित्व के काम अपने सिर में लेने के लिए तैयार है इसका प्रमाण है कि अब

इसकी अवस्था में बढ़ती और वयस्कता आ गयी है। नए कार्य का जो बोझ वह अपने अपने कंधों में लेने वाली है, सन् १९१९ ई० की तरह आनन्दता से नहीं वरन् हिचकिचाहट के साथ, क्योंकि भविष्य का मार्ग आशा से परिपूर्ण है परन्तु आसान नहीं। कितनी खुशी की बात होती यदि पचास वर्षों की ओटोनोमी के बाद पादरी, प्रचारक, शिक्षक और मंडली के सदस्यगण ईश्वर को धन्यवाद देते हुए यह कह सकते: अब हम और भी अधिक मजबूत एवं साहसी बन गए हैं।

Gossner Mission

४ अधूरे - काम

सच है कि ऐसी बहुत-सी अधूरी चीज़ें बाकी रह गयी हैं जिनको कार्यान्वित करना ज़रूरी है। चर्च का जीवन भी मनुष्य के जीवन की तरह है। ईश्वर के अनुग्रह और दया से गत दिनों के दुःख और तकलीफ़ दूर होने लगे हैं, और एक नया मार्ग दिखाई पड़ने लगा है, जहाँ वह आनन्दता से ईश्वर के नए आश्चर्य कार्यों का अनुभव करेगा। यहाँ गोसनर-चर्च के चार विशेष अधूरे कामों के ऊपर कुछ बातें कहना आवश्यक है।

इनमें सबसे ज़रूरी और सर्वप्रथम

Gossner Mission

है चर्च का मिशन कार्य। प्रत्येक व्यक्ति तथा प्रत्येक मंडली को इस विषय में यही यह उचित है कि वह फादर गोस्सनर के निम्नांकित बातों का स्मरण करे :-

"यदि हम मिशनरी होना छोड़ देते हैं तो हम क्रिश्चन होना भी छोड़ देते हैं।"

लेकिन अब तक जो घटनाएँ भारत और छोटानागपुर में हुई उसे केवल एक आरम्भ कहा जा सकता है। भारतीय नागरिकों की अधिकांश संख्या अब तक त्राणकर्ता यीशु-क्रिश्चन के सुसमाचार से अभिज्ञ है। हिन्दू दर्शन-शास्त्र (Hindu Philosophy and Hinduism) के साथ अनेक वाद-विवाद

Gossner Mission

की शुरुआत अब तक नहीं हुई है नहीं है, क्योंकि गोसनर चर्च के लोग आदिवासी हैं। क्या उनका ऐसा रहना जरूरी है? यह चर्च ग्रामिण-किसानों का है। भविष्य में गोसनर-चर्च को औद्योगिक-क्षेत्रों के शहरों में बहुत भारी मिशन काम करना है। उसके अलावे गोसनर मिशन यह चाहती है कि कुछ भारतीय कर्मचारी भी गोसनर-मिशन के काम में हाथ बटावे, जब वह नेपाल में काम शुरु करेगी। ऐसा तो नहीं कि नेपाल में माँ और बेटी मिलकर मिशन काम करें?

Gossner Mission

दूसरा, मंडलियों की नींव को दृढ़ करना भी एक अत्यावश्यक काम है। इस समय एक हजार से अधिक प्रचारक पत्र हैं जो नियमित रूप से उपदेश की तैयारी और अन्यान्य निर्देश पाने के लिए इकट्ठे होते हैं। उन्हें पत्थरों के टुकड़े नहीं, शक्तियों की जरूरत है। प्रचारकों को इस मामले में अच्छा प्रशिक्षण मिलना अत्यावश्यक है, और यह काम अधूरा पड़ा है। विश्व के अन्य चर्चों की तुलना में गोसनर चर्च के मंडली-कार्यों के लिए बहुत ही आदि जनसाधारण लोग (Laymen) ग्रस्त हैं। इन शक्तियों को

Gossner Mission

और विशेषकर महिलाओं को इसके लिए
और भी अधिक सेवा का अवसर देना
चाहिए। क्यों आजकल बंगला के लिए
कोई धर्म प्रचारिकाएँ चर्च में नहीं हैं? चर्च के
नवयुवक विद्यार्थियों पर बीते दिनों में
कोई ध्यान नहीं दिया गया। और ये
ही वे लोग हैं जिनके हाथों में चर्च
का भविष्य है। चर्च में स्कूलों की
संख्या बहुत है, और यद्यपि इनका
स्तर काफी गिर गया है चर्च उन्हें
छोड़ना नहीं चाहती है। सरकार की
ओर से इस विभाग में काफी काम
किया जा रहा है। चर्च के लिए
यह अच्छा होता कि वह केवल

Gossner Mission

कुछ अच्छे स्कूलों का भार संभालती। यह कितने आनन्द की बात होती यदि चर्च को कुछ ऐसे अच्छे शिक्षित व्यक्तियों को ढूंढने में सफलता मिलती जो चर्च के आर्थिक एवं जमीन प्रबन्धन का और भी अच्छे ढंग से शासन कर पाते। आदिवासी लोग आपारी किस्म के आदमी नहीं हैं, लेकिन उचित होता यदि वे इसे सीख पाते।

तृतीय, चर्च की एकता। स्पष्ट है कि बहुत ही वाद-विवाद के बाद इसकी स्थापना फिर से हो सकी है। लेकिन अभी भी कुछ ऐसी आवाजें सुनने को मिलती हैं जो एकता के लिए ~~आपत्ति~~ आपत्ति के कारण हैं।

Gossner Mission

ऐसी आवाजों को कुचलना नहीं वरन् ठीक से समझना उचित है। उन्हें साथ में काम करने का लाभ और आनन्द को अपनी दृष्टि में रखना चाहिए। जातिवाद अथवा जातियता की भावना सिर्फ मात्र के लिए ही नहीं वरन् गोसनर चर्च के लिए भी एक बड़ा खतरा है। "हम तो सब के सब भेड़ों की नाईं भटक गए थे; हम में से हरेक ने अपना मार्ग लिया" (यशायाह 53:6)। सिर्फ हमारे विरोधियों में ही हमारे भाईयों की सूचि करता है।

चतुर्थ, दूसरे चर्चों के साथ मिलकर काम करना। उल्लिखित

Gossner Mission

पंक्तियों में इसके बदले लड़ाई हुई। उन भाईयों में जो कथोलिक, एंगलिकन और मेथोडिस्ट अथवा अन्य चर्चों में रहते हैं आज हम मसीह के देह के विभिन्न अंगों को देख पाते हैं। ये अंग बहुत किस्म के हैं और उनका कार्यक्षेत्र भी एक दूसरे से भिन्न है। उन्हें साथ में मिलकर काम करना है जिसे ईश्वर के राज का काम क्लेश और सन्तापरहित हो सके। यहां-वहां औद्योगिक क्षेत्रों के शहरों में मिलकर गिर्जाघर बनाने के उपाय सोचे जा रहे हैं। चर्चों के सामाजिक सेवा-विभाग में भी मिलकर बात करने की आवश्यकता है। यह

Gossner Mission

कहना अवश्य मुश्किल है लेकिन यह असंभव नहीं कि गविता में चर्च का पुनिथान केवल एंगलिकन अथवा उत्तरी भारत के बहुत से एवंजेलिकल चर्चों से हो जाएगा।

जो आरम्भ में कहा गया है, उसे अंत में दुहराना आवश्यक है: गोसपल-चर्च ईश्वर का काम है। उसकी योजना आने वाले दिनों में भी चलती रहेगी। हम ईश्वर की महिमा की स्तुति गाँवें कि वह हमें अपने अद्भुत काम के लिए बुलाना चाहता है।

— ५ —

Gossner Mission

गोसनर चर्च के प्रसीडेंट

१९२० - २४ रेव० हनुक हेतो

१९२४ - ३५ रेव० डोहन तोपनो

१९३५ मिशनरी मार्टिन केर्शिस

१९३५ - ३८ रेव० डेविड कुजूर

१९३८ - ४२ प्रेज़ेस स्तोश

१९४२ - ५५ रेव० ज़ुस्त लकड़ा

१९५५ - ६० रेव० जे० जे० पी० तिग्गा

१९६० - ६३ रेव० ज़ुस्त लकड़ा

१९६३ - ६६ रेव० डा० मर्सलिन तोपो

१९६६ - ६९ रेव० सी० बी० आईन्द

गोसनर मिशन से भेजे गए मिशनरी

१९२५ औगुस्त डोन

१९२९ विलहेल्म डिक्नर

Gossner Mission

१९२६ मार्टिन प्रेन

१९२६ स्वेस्टर फ्रिडा हैन्त्से

१९२८ फेलिक्स सुल्से

१९२८ स्वेस्टर अनी डिलर

१९२८ मागनुस सिबे

१९३० स्वेस्टर अगुस्ते फ्रिट्स

१९३० विल्हेल्म रड्डुसिक

१९३१ मार्टिन क्रेशिंग

१९३१ स्वेस्टर इरेने स्टोरिग

१९३१ जोहानेस सेरिनाट

१९३३ विल्हेल्म कुम्बारस्की

१९३६ स्वेस्टर हेडविग स्मिथ

१९३६ स्वेस्टर डोरोथिया रड्डुसिक

१९३६ डा० अोटो वोल्फ

Gossner Mission

१९३९ योहानेश क्लिमक्याईट

१९३२ हेल्मुट जस्पा

१९३२ जोहानेस स्तोश

१९५१ गुंतर सुल्स

१९५३ स्वेस्तर इल्जे मार्टिन

१९५९ डा० आर्ड बिशोप

१९५२ हेरमन क्लोस

१९६० डा० मेड० ओटो ग्रुंडलर

१९६० स्वेस्तर मारिया शास

१९६० स्वेस्तर उर्सुला मोन लिंगेन

१९६० स्वेस्तर मार्लिस ग्रुंडलर

१९६० वेर्नर वील

१९६० डा० हंस गुंगहंस

१९६२ डा० मेड० विल्हेल्म रोवेडर

Gossner Mission

१९९३ क्लोस स्वेर्क

१९९४ स्वेस्टर मरियाने कोख

१९९४ आलब्रेख्ट बुन्स

१९९५ रोबर्ट मोंताग

१९९९ स्वेस्टर मोनिका सुत्साका

१९९९ डा० थेयो० थोमस डेल

१९९८ हेल्मुट हेरेल

<u>कुल जमा</u>: १७७ मिशनरी, १८४४ – १९९८

<u>अन्य विदेशी कर्मचारी</u> (Over-Sea-Service)

१९९३ पीटर मिटेनहूबर

१९९३ होर्स्ट अडेमाइट

१९९३ अंसगर केलबेर

१९९३ मोहर मोस

Gossner Mission

१९६३ वोल्फ-डिटरिक्ह तोमफोर्ड

१९६३ पौल रेरव

१९६३ बर्नहार्ड स्पोरेक्ह

१९६९ डिटर डाग्रेर

—x—

Gossner Mission

Archiv der Gossner Mission
im Evangelischen Landeskirchlichen Archiv in Berlin

Signatur **Gossner_G 1_0898**

Aktenzeichen 4/28

Titel

Bewerbungen für Tätigkeit in Übersee und Deutschland 1979-1983

Band 1

Laufzeit 1979 - 1983

Enthält

alphabetisch geordneter Schriftwechsel A-F betr. Bewerbungen an die Gossner Mission für Dienst in Übersee und auch Deutschland; Personalunterlagen, Bewerbungsunterlagen mit Zeugnissen und z. T. Empfehlungen

Digitalisiert/Verfilmt 2009 von Mikro-Univers GmbH

Gossner Mission

GOSSNER MISSION

1 Berlin 41 (Friedenau)
Handjerystraße 19-20
Fernsprecher: (030) 851021
Postscheckkonto: Berlin West 520 50 - 100
Bankkonto: Berliner Bank, BLZ 100 200 00
Kto.-Nr. 0407480700

(jeweils an:)

Frau Bärbel Barteczko, Berlin
Herrn Wolfgang Loh, Gummersbach
Frau Dagmar Bekker, Braunschweig
Frau Sieglind Dreyer, Oberkotzau
Herrn Gerhard Rüdiger, Hamburg
Herrn Hans-Georg Hrach, Velbert
Frau Elke Harder, Oldenburg
Frau Ulrike Löbs, Berlin

Berlin, den 13.3.1981

Sehr geehrte(r).....

Wir danken Ihnen für die Zusendung Ihrer Bewerbung für die Stelle einer Referentin/eines Referenten in der Berliner Geschäftsstelle der Gossner Mission.

Wir können zwar erst Anfang April zu Vorstellungsgesprächen einladen, weil erst dann beide Kollegen wieder hier sind, aber bis dahin können wir vielleicht noch einige offene Fragen klären.

Zu diesem Zweck senden wir Ihnen anliegend einige Kurzinformationen über die Gossner Mission, so daß Sie sich ein Bild machen können, bei wem Sie sich bewerben. Für weitere Informationen stehen wir auf Wunsch gern zur Verfügung.

Zu der ausgeschriebenen Stelle möchten wir noch erläuternd sagen:

1. Öffentlichkeitsarbeit für eine evangelische Missionsgesellschaft findet überwiegend im kirchlichen Raum statt, d.h. wir werden von Kirchengemeinden im ganzen Bundesgebiet zu Besuchen eingeladen. Wir sprechen in Schulklassen, Konfirmandengruppen, Gemeindekreisen. Oft werden wir auch eingeladen, in Gottesdiensten zu predigen.

   Unsere Referenten brauchen also eine gewisse innerliche Nähe zur Kirche und zum christlichen Glauben, um sich bei dieser Tätigkeit wohlzufühlen und den Erwartungen unserer Freunde zu entsprechen. Es ist dagegen nicht Voraussetzung, daß sie Theologen sind.

   Wir wären Ihnen jedoch dankbar, wenn Sie uns, falls nicht schon geschehen, etwas über Ihr Verhältnis zum Glauben und zur Kirche schreiben könnten.

2. Die Reisetätigkeit im Bundesgebiet und einmal im Jahr nach Nepal erfordert Flexibilität. Wir rechnen mit 1oo bis 15o Tagen Abwesenheit von Berlin pro Jahr. Bitte überlegen Sie, ob Sie unter diesen Umständen an der Stelle interessiert bleiben.

Auf jeden Fall werden Sie in der ersten Aprilhälfte wieder von uns hören.

Mit freundlichen Grüßen
Ihr

Siegwart Kriebel, Pfr.
(Direktor)

Gossner Mission

aus "Die Zeit" vom 6.3.81

3. Referentin) für Berlin

Die **Gossner Mission** sucht für ihre Berliner Geschäftsstelle

eine Referentin/einen Referenten

für die Referate Öffentlichkeitsarbeit/Gemeindedienst und Nepal.
Voraussetzung ist Verständnis für Mission und Entwicklungsfragen. Wünschenswert sind Gemeinde- oder Unterrichtserfahrung und Übersee-Erfahrung.
Den Reisedienst in der Bundesrepublik teilen sich 3 Kollegen, die in allen Fragen eng zusammenarbeiten. Vergütung nach BAT oder Pfarrerbesoldung.
Bewerbungen bis 6. 4. 1981 an: Gossner Mission, Handjerystr. 20, 1000 Berlin 41, Tel. (0 30) 85 10 21

KULTUR

Gossner Mission

Fachhochschule
Hildesheim/Holzminden

Fachbereich
Bauingenieurwesen
in Hildesheim

Fachhochschule Hildesheim/Holzminden, Hohnsen 2, 3200 Hildesheim

An die
Grossner Mission
Handjerystr. 19 - 2o

1ooo Berlin 41 (Friedenau)

Eingegangen
6. MAI 1980
Erledigt.....

Ihre Zeichen:	Ihre Nachricht vom:	Unser Zeichen:	Datum:
	22.4.198o	k	29.4.198o

Stellenangebot

Sehr geehrte Damen und Herren!

Ich bestätige den Eingang der obigen Stellenausschreibung und danke Ihnen für Ihr Interesse an der Einstellung eines bei uns ausgebildeten Ingenieurs.

Die Stellenausschreibung wurde hier nach Eingang sofort am 'Schwarzen Brett' ausgehängt.

Termin der Ingenieurprüfung im derzeitigen Sommersemester:

1o. Juli 198o.

Mit freundlichem Gruß
Der Dekan:

Prof. Bretschneider

Hohnsen 2
3200 Hildesheim
Tel.: 05121/81012-14

Sprechzeit: Montag - Freitag von 8.30 - 12 Uhr

Gossner Mission

Wolin — Zambia

FACHHOCHSCHULE REGENSBURG

AUSBILDUNGSRICHTUNGEN TECHNIK WIRTSCHAFT SOZIALWESEN

FACHBEREICH BAUINGENIEURWESEN

FACHHOCHSCHULE REGENSBURG
84 REGENSBURG PRÜFENINGER STRASSE 58

Az. Nr.
AKTENZEICHEN UND NUMMER IM ANTWORTSCHREIBEN ANGEBEN

Eingegangen
6. MAI 1980
Erledigt

REGENSBURG, 30.04.1980
TEL. (0941) 23091

Gossner Mission
Handjerystr. 19 - 20

1000 Berlin 41

Ihre Stellenausschreibung vom 24.04.1980

Sehr geehrte Damen und Herren!

Wir bestätigen den Eingang Ihrer Stellenausschreibung. Sie wurde am Schwarzen Brett zum Aushang gebracht.

Für Ihr Interesse an unseren Absolventen bedanken wir uns und hoffen, daß die Ausschreibung den von Ihnen gewünschten Erfolg bringt.

Mit freundlichen Grüßen

Bulenda

Prof. Dipl.-Ing. Bulenda
Dekan

Gossner Mission

3.4.1980

An die
Fachhochschule Karlsruhe
z.Hd. Herrn Dr. Müller, Rektor
Moltkestr. 1
7500 Karlsruhe

Betr.: Aushang am Schwarzen Brett des Fachbereichs "Bau-Ingenieurs-Wesen"

Sehr geehrter Herr Dr. Müller!

Mit einer großen Bitte wende ich mich an Sie. Durch Herrn Pfarrer Hecker, der Kuratoriumsmitglied der Gossner Mission ist, habe ich Ihre Adresse erfahren.

Die Gossner Mission sucht dringend einen Bauingenieur für das Gwembe South Development Project in Süd-Zambia, wo die Gossner Mission seit 1970 engagiert ist.

Meine Bitte ist nun, daß die beigefügte Mitteilung am Schwarzen Brett des Fachbereichs für Bauingenieure ausgehängt wird. Vielleicht zeigt sich doch ein Student interessiert, nach seinen Studium für einige Jahre nach Zambia zu gehen.

Für Ihr Verständnis und Ihre Bemühungen möchte ich Ihnen vielmals danken.

Mit freundlichen Grüßen

E.Mische
(Pfarrer)

Gossner Mission

Wir suchen dringend

einen Bau-Ingenieur

für die Mitarbeit im Gwembe South Development Project, Gwembetal, Süd-Zambia.

Die Gossner Mission arbeitet seit 197o aufgrund eines Vertrages mit der Regierung von Zambia im Gwembetal in einem ländlichen Entwicklungsprojekt mit z.Z. drei Agraringenieuren, einem Elektroingenieur, einer Soziologin und einem Theologen. Die Stelle des Bau-Ingenieurs ist seit einiger Zeit vakant und muß bald möglichst wieder besetzt werden. Die Aufgaben des Bau-Ingenieurs liegen vor allem in der Betreuung einer Bau-Genossenschaft, die in den letzten Jahren aufgebaut wurde. Sie beschäftigt inzwischen 6o Mitarbeiter. Es ist ihr gelungen, die meisten Regierungsaufträge im Gwembe-Distrikt zu bekommen und auszuführen.

Zur Betreuung gehören: Erstellen von Angeboten, Kalkulation, Bauaufsicht und Kontrolle der Buchführung.

Für einen entwicklungspolitisch motivierten Ingenieur, der selbständig arbeiten will, liegt hier eine wirkliche Herausforderung, da die Bau-Genossenschaft schon ein wichtiger Wirtschaftsfaktor des Gebietes geworden ist und weiter ausbaufähig ist. Da eine zambische Fachkraft noch nicht gefunden werden konnte, suchen wir einen deutschen Experten.

Englischkenntnisse sind erwünscht. Wir schließen 3-Jahresverträge ab und bezahlen ein Gehalt in Anlehnung an den BAT. Alle sozialen Leistungen sind mit eingeschlossen.

Interessenten melden sich bitte bei:

E.Mische
Gossner Mission
Handjerystr. 19/2o
1ooo Berlin 41
Tel. o3o - 85 1o 21

Gossner Mission

24.3.1980

An die
Abteilung für Bau-Ingenieurs-Wesen
der Technischen Universität Braunschweig
z.Hd. Frau Giese
Pockelstr.
3300 Braunschweig

Sehr geehrte Frau Giese!

Wie ich telephonisch schon mit Ihrem Büro besprochen habe, möchte ich Sie bitten, daß Sie die in der Anlage beigefügte Anzeige am schwarzen Brett Ihres Fachbereiches aushängen.

Mit bestem Dank für Ihre Bemühungen verbleibe ich
mit freundlichenrGrüßen

E.Mische

Gossner Mission

24.3.198o

Wir suchen dringend

einen Bau-Ingenieur

für die Mitarbeit im Gwembe South Development Project, Gwembetal, Süd-Zambia.

Die Gossner Mission arbeitet seit 197o aufgrund eines Vertrages mit der Regierung von Zambia im Gwembetal in einem ländlichen Entwicklungsprojekt mit z. Z. drei Agraringenieuren, einem Elektroingenieur, einer Soziologin und einem Theologen. Die Stelle des Bau-Ingenieurs ist seit einiger Zeit vakant und muß bald möglichst wieder besetzt werden. Die Aufgaben des Bau-Ingenieurs liegen vor allem in der Betreuung einer Bau-Genossenschaft, die in den letzten Jahren aufgebaut wurde. Sie beschäftigt inzwischen 6o Mitarbeiter. Es ist ihr gelungen, die meisten Regierungsaufträge im Gwembe-Distrikt zu bekommen und auszuführen.

Zur Betreuung gehören: Erstellen von Angeboten, Kalkulation, Bauaufsicht und Kontrolle der Buchführung.

Für einen entwicklungspolitisch motivierten Ingenieur, der selbständig arbeiten will, liegt hier eine wirkliche Herausforderung, da die Bau-Genossenschaft schon ein wichtiger Wirtschaftsfaktor des Gebietes geworden ist und weiter ausbaufähig ist. Da eine zambische Fachkraft nochtnicht gefunden werden konnte, suchen wir einen deutschen Experten.

Englischkenntnisse sind erwünscht. Wir schließen 2-Jahresverträge ab und bezahlen ein Gehalt in Anlehnung an den BAT. Alle sozialen Leistungen sind mit eingeschlossen.

Interessenten melden sich bitte bei:

E. Mische
Gossner Mission
Handjerystr. 19/2o
1ooo Berlin 41
Tel. o3o - 85 1o 21

Gossner Mission

24.3.1980

An die
Fakultät für Bauwesen der
Universität Hannover
z.Hd. Frau Bothe
Welfengarten 1
3000 Hannover

Sehr geehrte Frau Bothe!

Wie ich telephonisch mit Ihrem Büro besprochen habe, möchte ich Sie bitten, daß Sie die in der Anlage beigefügte Anzeige am schwarzen Brett Ihres Fachbereiches aushängen.

Mit bestem Dank für Ihre Bemühungen verbleibe ich
mit freundlichen Grüßen

E.Mische

Gossner Mission

24.3.198o

Wir suchen dringend

einen Bau-Ingenieur

für die Mitarbeit im Gwembe South Development Project, Gwembetal, Süd-Zambia.

Die Gossner Mission arbeitet seit 197o aufgrund eines Vertrages mit der Regierung von Zambia im Gwembetal in einem ländlichen Entwicklungsprojekt mit z.Z. drei Agraringenieuren, einem Elektroingenieur, einer Soziologin und einem Theologen. Die Stelle des Bau-Ingenieurs ist seit einiger Zeit vakant und muß bald möglichst wieder besetzt werden. Die Aufgaben des Bau-Ingenieurs liegen vor allem in der Betreuung einer Bau-Genossenschaft, die in den letzten Jahren aufgebaut wurde. Sie beschäftigt inzwischen 6o Mitarbeiter. Es ist ihr gelungen, die meisten Regierungsaufträge im Gwembe-Distrikt zu bekommen und auszuführen.

Zur Betreuung gehören: Erstellen von Angeboten, Kalkulation, Bauaufsicht und Kontrolle der Buchführung.

Für einen entwicklungspolitisch motivierten Ingenieur, der selbständig arbeiten will, liegt hier eine wirkliche Herausforderung, da die Bau-Genossenschaft schon ein wichtiger Wirtschaftsfaktor des Gebietes geworden ist und weiter ausbaufähig ist. Da eine zambische Fachkraft noch nicht gefunden werden konnte, suchen wir einen deutschen Experten.

Englischkenntnisse sind erwünscht. Wir schließen 3-Jahresverträge ab und bezahlen ein Gehalt in Anlehnung an den BAT. Alle sozialen Leistungen sind mit eingeschlossen.

Interessenten melden sich bitte bei:

E. Mische
Gossner Mission
Handjerystr. 19/2o
1ooo Berlin 41
Tel. o3o - 85 1o 21

Gossner Mission

24.3.1980

An das
Institut für Baukonstruktion und Festigkeit
z.Hd. Herrn Prof. Dr. Pilny
Straße des 17. Juni 135
1000 Berlin 12

Sehr geehrter Herr Prof. Pilny!

Wie ich telephonisch schon mit Ihnen besprochen habe, möchte ich Sie bitten, daß Sie die in der Anlage beigefügte Anzeige am schwarzen Brett Ihres Fachbereiches aushängen.

Mit bestem Dank für Ihre Bemühungen verbleibe ich
mit freundlichen Grüßen

E.Mische

Gossner Mission

24.3.198o

Wir suchen dringend

einen Bau-Ingenieur

für die Mitarbeit im Gwembe South Development Project, Gwembetal, Süd-Zambia.

Die Gossner Mission arbeitet seit 197o aufgrund eines Vertrages mit der Regierung von Zambia im Gwembetal in einem ländlichen Entwicklungsprojekt mit z. Z. drei Agraringenieuren, einem Elektroingenieur, einer Soziologin und einem Theologen. Die Stelle des Bau-Ingenieurs ist seit einiger Zeit vakant und muß bald möglichst wieder besetzt werden. Die Aufgaben des Bau-Ingenieurs liegen vor allem in der Betreuung einer Bau-Genossenschaft, die in den letzten Jahren aufgebaut wurde. Sie beschäftigt inzwischen 6o Mitarbeiter. Es ist ihr gelungen, die meisten Regierungsaufträge im Gwembe-Distrikt zu bekommen und auszuführen.

Zur Betreuung gehören: Erstellen von Angeboten, Kalkulation, Bauaufsicht und Kontrolle der Buchführung.

Für einen entwicklungspolitisch motivierten Ingenieur, der selbständig arbeiten will, liegt hier eine wirkliche Herausforderung, da die Bau-Genossenschaft schon ein wichtiger Wirtschaftsfaktor des Gebietes geworden ist und weiter ausbaufähig ist. Da eine zambische Fachkraft noch nicht gefunden werden konnte, suchen wir einen deutschen Experten.

Englischkenntnisse sind erwünscht. Wir schließen 3-Jahresverträge ab und bezahlen eine Gehalt in Anlehnung an den BAT. Alle sozialen Leistungen sind mit eingeschlossen

Interessenten melden sich bitte bei:

E. Mische
Gossner Mission
Handjerystr. 19/2o
1ooo Berlin 41
Tel. o3o - 85 1o 21

Gossner Mission

24.3.198o

Herrn Pfarrer
Lüder Ahmels
Rosenstr. 45
493o Detmold 1

Lieber Lüder!
Anliegend die Anzeige für das Schwarze Brett in Lage. Herzlichen Dank, daß Du bereit bist, diesen Botendienst zu übernehmen. Himmelfahrt heiratet Gerhard Hille. Dann werde ich wieder in Lippe sein. Vielleicht bietet sich dann die Gelegenheit, daß wir uns mal wieder treffen.

Vorerst herzliche Grüße, auch an die alten Kameraden
Dein

Gossner Mission

24.3.198o

Wir suchen dringend

einen Bau-Ingenieur

für die Mitarbeit in einem ländlichen Entwicklungsprojekt im Gwembetal, Süd-Zambia.

Die Aufgabe ist die Betreuung einer Bau-Genossenschaft, die inzwischen 6o Leute beschäftigt. Dazu gehören: Erstellen von Angeboten, Kalkulation und Bauaufsicht, Kontrolle der Buchhaltung.

Die Bezahlung erfolgt in Anlehnung an den BAT und ist mit dem öffentlichen Dienst vergleichbar.

Erforderlich sind Englisch-Kenntnisse. Wer entwicklungspolitisch motiviert ist und für drei Jahre in Übersee arbeiten möchte, wende sich an:

Gossner Mission
Handjerystr. 19/2o
1ooo Berlin 41

Tel. o3o - 85 1o 21
zuständig Herr E.Mische

Gossner Mission

An das ARbeitsamt IV Berlin (West)
Abt. Ia331- z.Hd. Frau Wehner
Charlottenstraße 9o-94

1ooo Berlin 61

Berlin, den 22.1.198o

Betr.: Anliegende Bewerbungen als Agrar-Ing. bei der Gossner Mission für eine Tätigkeit in Übersee

Sehr geehrte Frau Wehner!

In der Anlage senden wir Ihnen die Bewerbungsunterlagen zurück, die Sie uns freundlicherweise überlassen haben. Wir haben die Stelle eines Agrar-Ingenieurs für das Gwembe-South-Development-Projekt in Zambia inzwischen bereits besetzt.
Für Ihre freundlichen Bemühungen danken wir Ihnen sehr.
Die Stelle eines Bau-Ingenieurs für das gleiche Projekt konnten wir leider aber immer noch nicht besetzen. Für die Übersendung weiterer Bewerbungsunterlagen wären wir Ihnen sehr dankbar.

Mit freundlichen Grüßen
i.A.

Gossner Mission

an alle Bewerber

Berlin, den 1.6.1981

Betr.: Ihre Bewerbung als Öffentlichkeits-/
Nepalreferent(in) bei der Gossner Mission

Sehr geehrte

Vor einigen Tagen hat das Kuratorium der Gossner Mission über die Neubesetzung der Stelle der Öffentlichkeits- und Nepalreferent(in) entschieden.
Die Wahl fiel leider auf eine andere Bewerberin.

Wir möchten Ihnen nochmals sehr herzlich für Ihr Interesse an einer Mitarbeit bei der Gossner Mission danken und wünschen Ihnen für Ihren Weiteren Berufsweg alles Gute.
In der Anlage fügen wir zu unserer Entlastung Ihre Bewerbungsunterlagen bei.

Mit freundlichen Grüßen
i.A. Lischewsky, Sekr.

Anl.: s.o.

Gossner Mission

A

Gossner
Mission

Erhard Mische, Pfr.

Herrn
Pastor O.R. Agyei-Mensah
Eckermannstr. 1
2102 Hamburg 93

23.3.1983

Betr.: Ihr Schreiben vom 14.3.83

Sehr geehrter Herr Agyei-Mensah!

Für Ihre freundliche Anfrage und Ihren ausführlichen Brief möchte ich Ihnen vielmals danken. Ich will ihn gleich für Herrn Kriebel beantworten, der für längere Zeit nicht in Berlin ist.

Leider kann ich Ihnen wenig Hoffnung auf eine mögliche Beschäftigung für die von Ihnen beschriebene Tätigkeit machen. Auch bei uns fehlen die Finanzmittel, um neben den anderen missionarisch-diakonischen Aufgaben noch eine zusätzliche Stelle für die so wichtige Betreuung der Asylbewerber einzurichten.

Die Kirche sollte sich in diesem Bereich engagieren, davon bin ich fest überzeugt. Ich sehe aber im Augenblick nur geringe Chancen für eine Verwirklichung. Durch die Mitarbeit im Berliner Flüchtlingsrat kenne ich die besonderen Schwierigkeiten der Asylbewerber und vor allem Ihrer Landsleute, die in großer Zahl zu uns kommen.

Ich will Ihre Anfrage gerne an den Flüchtlingsrat, der allerdings über keine Mittel verfügt, weitergeben und auch bei kirchlichen Stellen vortragen. Sollte sich eine Möglichkeit auftun, werde ich Sie entsprechend benachrichtigen.

Mit freundlichen Grüßen

Gossner Mission

Oheneba Robert Agyei-Mensah
Pastor / Diakon

2102 Hamburg 93, den 14.3.1983
Eckermannstraße 1
Tel.: 040/753 55 17

An die
Gossner Mission Berlin
z.Hd.Herrn Pastor Kriebel
Handjerystraße 19-20

1000 Berlin 41

EINGEGANGEN
21 MÄR 1983
Erledigt: .....

Sehr geehrte Damen und Herren,

ich wende mich mit diesen Zeilen mit einer außerordentlichen Bitte an Sie ! Mit dem 1. April ds. Js. werde ich arbeitslos sein. Meine familiären Verhältnisse (verheiratet, 3 Kinder von 7 Jahren, 3 Jahren und 7 Monaten) lassen diesen Zustand nicht lange zu. Ich möchte Sie deshalb fragen, ob die Möglichkeit besteht, daß Sie mir in Ihrer Einrichtung bzw. durch Ihre Vermittlung eine hauptberufliche Tätigkeit in kirchlich -missionarischem Dienst beschaffen können.

Zur Begründung führe ich folgendes an:
Ich wurde am 14.8.1950 in Onwi (Ghana) geboren und besuchte alle Schulen in Ghanas 2.Hauptstadt Kumasi. Dort bestand ich auch 1967 das Abitur. Anschließend besuchte ich bis 1969 eine Fachschule für Verwaltung, trat jedoch nicht in den Verwaltungsdienst. Im September 1969 begann ich am "Ghana Bible Institute" in Kumasi ein Theologie-Studium, das ich nach dem 6. Semester mit dem theol.-Diplom abschloß. 1973 wurde ich in Kumasi durch die CHURCH OF GOD (Pfingskirche der USA), unter amerikanischer Leitung stand auch das Bibel-Institut, zum Pastor ordiniert und anschließend in Kumawu/Ashanti als Reisepastor eingesetzt. 1976 wurde ich Bezirkspastor bei der CHRIST APOSTOLIC CHURCH. Im Frühjahr 1977 kam ich als politischer Flüchtling in die Bundesrepublik Deutschland und wurde mit Bescheid des Bundesamtes in Zirndorf vom 9.1.1980 anerkannt. Zunächst besuchte ich für 4 Monate einen Deutsch-Intensiv-Kursus. Während dieser Zeit hatte ich Verbindung zur Apostolischen Kirche (Christliche Mission) in Hamburg-Harburg. Kontakt zur Ev.-luth. Nordelbischen Kirche nahm ich im November 1977 über die Bischofskanzlei in Hamburg auf. Gespräche mit Herrn Oberkirchenrat Scharbau im Nordelbischen Kirchenamt (heute Präsident des Luth.

Gossner Mission

Kirchenamtes der VELKD in Hannover) über eine von mir gewünschte Einstellung als Pastor der Nordelbischen Kirche scheiterten an meiner (damaligen) Konfession, meiner Staatsangehörigkeit, der noch nicht erfolgten Anerkennung als Asylant sowie an sprachlichen Schwierigkeiten. Ende 1977 trat ich zur lutherischen Kirche über. Ich war dann zunächst als Pastor arbeitslos, 1978 für einige Monate Praktikant in der Ev.-luth. Christus-Kirche in Schulau bei Hamburg, und ab November 1978 für 1 Jahr Gast~~hörer~~schüler in der Diakonen-Ausbildung Rickling/Schleswig-Holstein. Danach begann meine reguläre Diakonenausbildung im Brüderhaus Rickling, die ich im November 1979 abschloß. Am 9.5.1980 erhielt ich mit meinem Pass eine unbefristete Aufenthaltserlaubnis für die Bundesrepublik Deutschland und Westberlin. Meine erste hauptberufliche Anstellung als Gemeinde-und Jugenddiakon erfolgte zum 1.1.1980 in der Ev.-luth. Kreuz-Kirchengemeinde zu Hamburg-Wilhelmsburg-Kirchdorf. Dieses Anstellungsverhältnis endet am 31.3.1983 im gegenseitigen Einvernehmen. Neben meiner hauptberuflichen Tätigkeit in der Kreuz-Kirchengemeinde habe ich in zunehmendem Maße schwarzafrikanische Asylanten und Asylbewerber seelsorgerlich und in ganz praktischen Fragen der Lebenshilfe betreut, und ich betreue sie weiter. Nach Angaben der Ausländerbehörde leben alleine in Hamburg etwa 10.000 Afrikaner, von denen mehr als die Hälfte Ghanaer sind. Unter ihnen gibt es in ganz erschreckend zunehmendem Maße schwere Probleme in der Bewältigung ihrer Lebensfragen, die ursächlich zusammenhängen mit ihrer ungewissen Zukunft, ihrer Trennung von der Familie, die sie oft zurücklassen mußten, ihrer Rasse/Hautfarbe, ihrer Arbeitslosigkeit usw. Viele ergeben sich dem Alkohol und sind ohne jede Hoffnung. Diesen armen Menschen soweit es mir irgend möglich ist beizustehen, sehe ich als meine Hauptaufgabe an. Diese Unvereinbarkeit zwischen der von mir in der Kreuz-Kirchengemeinde erwarteten Arbeit, für die ich bezahlt wurde, und meinem (ehrenamtlichen) Bemühen um meine afrikanischen Landsleute, die in der Großstadt Hamburg in jeder Hinsicht ohne einen festen Halt leben, hat letztlich dazu geführt, daß meine Arbeit als Gemeinde- und Jugenddiakon in Hamburg-Wilhelmsburg-Kirchdorf jetzt endet. Deshalb suche ich jetzt nach einer meinen Fähigkeiten entsprechenden <u>übergemeindlichen</u> hauptberuflichen Tätigkeit im kirchlich-missionarischen Dienst an Afrikanern, um ihnen bei der Bewältigung ihrer ungelösten Lebensprobleme helfen zu können.

Ich wende mich an Sie, weil ich hoffe, daß Sie Möglichkeiten haben

Gossner Mission

oder sehen, auf landeskirchlicher oder EKD-Ebene eine derartige Stelle einzurichten. Die Nordelbische Kirche alleine sieht sich hierzu im Augenblick aus finanziellen Gründen nicht in der Lage. Sollten Sie an meiner Anfrage interessiert sein, bin ich gerne bereit, Ihnen alle erforderlichen Dokomente über meine Ausbildung und meine bisherige Tätigkeit - auch in Ghana - vorzulegen.

Sehr würde ich mich freuen, wenn Sie mit mir Verbindung aufnähmen.

Als Referenzen benenne ich Ihnen:

1.) Pastor Rudolf Hinz, kirchliches Außenamt der EKD,
Friedrichstr. 2-6 in 6000 Frankfurt/Main 1
0611/71 591

2.) Pastor Leberecht le Coutre, Vorsteher des Schleswig-Holsteinischen Brüderhauses Rickling,
2351 Rickling
04328/191

3.) Pastor Dr. Horst Albrecht, Ev.-luth. Kreuz-Kirchengemeinde zu Hamburg-Wilhelmsburg-Kirchdorf
Kirchdorfer Str. 177, 2102 Hamburg 93
040/754 48 29

4.) Diakon Hans-Rudolf Jöllenbeck, Kirchenkreisamt Hamburg-Harburg
Hölertwiete 5 HAUS DER KIRCHE, 2100 Hamburg 90
040/766 04 113

Mit freundlichen, brüderlichen Grüßen bin ich

Ihr

Gossner Mission

, am 11.8.1982

Zur Vorlage beim Bezirksamt Kreuzberg
Abteilung Sozialwesen

Frau Jacqueline Alscher hat sich bei der Gossner Mission für einen Einsatz als Entwicklungshelferin in Indien oder Nepal für die Dauer von drei Monaten ab Oktober 1982 beworben.

Die Gossner Mission prüft zur Zeit mit ihren Projektpartnern in Nepal und Indien die Möglichkeiten eines solchen Einsatzes.

Siegwart Kriebel
Direktor

Jacqueline Alscher
Riemeisterstr. 152
1000 Berlin 37

Gossner Mission

Jürgen Andres
Obere Weinhalde 20
7768 Stockach-3

Stockach,den 5.April 1980

An die
Gossner Mission
Handjerystraße 19-20
1 Berlin 41

Eingegangen
10. APR 1980
Erledigt

Betr.: Stellenangebot
Bez.: Schreiben vom 11.3.1980

Leider scheint der DED meinen Beruf bei Ihnen falsch angegeben zu haben.Meine Berufsbezeichnung ist Landbauingenieur(grad.) Sollte für die Sparte Landwirtschaft in nächster Zeit eine Stelle frei werden,so bitte ich Sie mir das mitzuteilen

Mit freundlichen Grüßen

Jürgen Andres

SPECIAL REFLEX SPECIAL REFLEX SP

Gossner Mission

B

Gossner
Mission

E. Mische

Barbara Becker
Thiestraße 14
3400 Göttingen

25.8.83

Sehr geehrte Frau Becker!

Besten Dank für Ihren freundlichen Brief vom 18.8.83. Ich hatte mir schon gedacht, daß Sie nicht in Göttingen waren, als mein Brief dort eintraf. Ich mache Ihnen nun den Vorschlag, daß Sie in der Woche vom 12. - 16.9. nach Berlin kommen, wenn es Ihnen paßt. Da ach geht es bei mir erst wieder am 10. und 11. Oktober.

Für eine kurze Benachrichtigung wäre ich Ihnen sehr dankbar.

Mit freundlichen Grüßen

Gossner Mission

Barbara Becker
Thiestraße 14
3400 Göttingen
0551/300495

Bremervörde, 18.8.1983

EINGEGANGEN
22. AUG. 1983
Erledigt .....

Pfr. E. Mische
Gossner Mission
Handjerystraße 19-20
1000 Berlin 41

Sehr geehrter Herr Pfr. Mische!

Vielen Dank für Ihren Brief vom 5. August! Da ich die Bewerbung unmittelbar vor meiner Abreise in den Urlaub abgeschickt hatte, fand ich Ihre Antwort erst jetzt nach meiner Rückkehr. Deshalb konnte ich den Vorstellungstermin nicht wahrnehmen und kann Ihnen erst jetzt antworten. Da ich auch noch den ganzen restlichen August über unterwegs bin, kann ich erst im September nach Berlin kommen. Die 2. Monatshälfte wäre mir persönlich lieber, aber ich kann mich nach Ihrem Terminplan richten.

Mit freundlichen Grüßen,

B. Becker

Barbara Becker

Gossner Mission

Frau
Barbara Becker
Thiesstr.14
3400 Göttingen

5.8.83

Betr.: Ihre Bewerbung vom 28.7.83

Sehr geehrte Frau Becker!

Für Ihrem o.g. Schreiben mit den Bewerbungsunterlagen möchte ich Ihnen vielmals danken. Herr Mehlig hatte Sie schon bei unserer letzten Sitzung des Zambia-Ausschusses angekündigt. Wir suchen in der Tat eine Fachkraft aus dem Bereich Landwirtschaft für 1984, da ein Agraringenieur im nächsten Jahr in die Bundesrepublik zurückkehren wird.
Ich würde mich nun freuen, wenn Sie in der kommenden Woche(8.-15.8.)uns ins Berlin besuchen können. Für eine kurze telephonische Benachrichtigung wäre ich Ihnen dankbar.

Damit Sie sich eine bessere Vorstellung von der Projektarbeit im Gwembetal und ihrer Geschichte machen können, füge ich diesem Schreiben Informationsmaterial bei.

Alles Weitere und Einzelheiten lassen sich dann mündlich besprechen.

Mit freundlichen Grüßen

(E. Mische)

Anlagen

p.s. Die Stelle von Peter Wendt soll wiederbesetzt werden.

Gossner Mission

Barbara Becker
Thiestraße 14
3400 Göttingen

EINGEGANGEN
3. AUG. 1983
Erledigt

Göttingen, 28.7.1983

Pfr. E. Mische
Gossner Mission
Handjerystr. 19-20
1000 Berlin 61

Sehr geehrter Herr Pfr. Mische!

Auf Empfehlung von Herrn Mehlig möchte ich mich hiermit um eine Stelle als landwirtschaftlicher Mitarbeiter in Ihrem Projekt in Zambia bewerben. Der Kontakt zu Herrn Mehlig entstand auf einer Tagung im Mai über "Mission und Menschenrechte", aus dem sich eine Anfrage an eine mögliche Mitarbeit von mir in Gwembe South ergab. Die Gossner Mission hatte ich schon kurz vorher kennengelernt, als mir Gerhard Honold, der ein guter Freund von mir ist, von seiner bevorstehenden Ausreise nach Nepal mit der Gossner Mission schrieb.

Ihn kenne ich seit 1976, als wir uns zu fünft in der Göttinger SMD-Gruppe zu einem verbindlichen "Lebensstil-Kreis" zusammenschlossen mit dem Ziel, aus entwicklungspolitischer Motivation uns angemessene Lebens- und Aktionsformen zu finden. Wir praktizierten gemeinschaftliches Leben außerhalb einer Wohngemeinschaft und suchten uns jeweils konkrete, politische Betätigungsfelder, wo wir die Trennung unseres christlichen und politischen Engagements zu überwinden versuchten. Indiesem Kreis entstand auch mein Entschluß zum Wechsel in die tropische Landwirtschaft. Bis dahin hatte ich Biologie und Mathematik für Höheres Lehramt studiert. Da ich zu diesem Entschluß erst kurz vor Beginn der Examensphase kam, schloß ich zunächst das Lehramtsstudium mit dem 1. Staatsexamen ab.

Nach dem 1. Staatsexamen begann ich meine Ausbildung in Tropischer Landwirtschaft mit einem einjährigen Praktikum als Volontär in einem landwirtschaftlichen Entwicklungs-

Gossner Mission

projekt der Africa Inland Mission (AIM) in Nordkenya. Nach meiner Rückkehr aus Afrika absolvierte ich das Aufbaustudium "Agrarwissenschaften der Tropen und Subtropen". Dabei konzentrierte ich mich auf die Schwerpunkte Tropischer Pflanzen- und Waldbau, Bodenkunde und Rurale Entwicklung. Dadurch bekam ich sowohl eine relativ breite Ausbildung in Tropischer Landwirtschaft als auch eine spezielle Vorbereitung im Bereich Agroforstwirtschaft, meinen Forschungsbereich.

Dieses Spezialgebiet führte zu einer engen Zusammenarbeit mit Prof. v. Maydell an der Bundesforschungsanstalt für Forst- und Holzwirtschaft in Hamburg. Am dortigen Institut für Weltforstwirtschaft hatte ich Gelegenheit, mich intensiv mit Agroforstwirtschaft für aride Gebiete zu befassen. In zwei weiteren Forschungsaufenthalten in Afrika (Kenya und Senegal) konnte ich das erworbene Wissen anwenden und vertiefen. Diese Auslandsaufenthalte in den verschiedenen Projekten vermittelten mir nicht nur Einblick in verschiedene Formen der Entwicklungshilfe (Missionsstation, Forschungsprojekt der UNESCO, GTZ-Projekt), sondern bewirkten vor allem eine kritische Auseinandersetzung mit Methoden und Inhalten solcher Projekte.

Die Forschungsaufenthalte in Afrika dienten der Vorbereitung meiner Dissertation über die Nutzung von Wildpflanzen afrikanischer Trockengebiete in der menschlichen Ernährung, die ich im Januar abschließen werde. Die Wahl des Dissertationsthemas entstand aus der Überlegung, wie in marginalen Gebieten ökologisch verantwortlich und kulturell angepaßt der Desertifikation und der Verschlechterung des Lebensstandards entgegengewirkt werden kann.

Nach meiner Kenntnis der Bedingungen in Zambia entsprechen meine bisherigen Erfahrungen im ariden und semi-ariden Bereich den dortigen Anforderungen. Bei meinem 2. Kenya-Aufenthalt hatte ich außerdem Gelegenheit, mehrere andere landwirtschaftliche Projekte in dieser Klimaregion kennenzulernen.

Gossner Mission

Meine Forschungstätigkeit halte ich für eine gute Voraussetzung zur Beschaffung der jeweils notwendigen Informationen für die Projektarbeit. In der Projektpraxis wäre es dagegen für mich hilfreich, eine Zeitlang eingewiesen zu werden. Ich würde mich freuen, in einem Team von Christen in der ländlichen Entwicklungshilfe mitarbeiten zu können.

Gerne bin ich bereit, Rückfragen Ihrerseits zu beantworten oder mich bei einem Gespräch selbst vorzustellen.

Mit freundlichen Grüßen,

B. Becker

Barbara Becker

Anlagen: Lebenslauf
Praktikumsbeurteilung
Zertifikat des Aufbaustudiums

cc. Herrn Mehlig, Obernkirchen

Gossner Mission

L E B E N S L A U F

12.02.1954	Geboren in Schwebda (Werra-Meißner-Kreis) als Tochter des Pfarrer Ernst Becker und seiner Ehefrau Irmgard, geb. Kandziorowski
April 1960	Einschulung in die Volksschule Schwebda
April 1964	Übergang zur Leuchtbergschule Eschwege, Gymnasium für Mädchen
1969-1972	Besuch des mathematisch-naturwissenschaftlichen Zweiges der Schule
13.06.1972	Abitur
Oktober 1972	Beginn des Studiums der Mathematik und Biologie für Höheres Lehramt an der Georg-August-Universität Göttingen
1977/78	Examensarbeit in Pflanzenphysiologie "Ort der Gibberellin-Biosynthese in höheren Pflanzen"
08.06.1978	1. Staatsexamen für Höheres Lehramt
Sept 78-Sept 79	Praktikum in einem landwirtschaftlichen Entwicklungsprojekt der Africa Inland mission in Nordkenya (Turkana)
Oktober 1979	Beginn des Aufbaustudiums "Agrarwissenschaften der Tropen und Subtropen" an der Georg-August-Universität Göttingen
Feb-Juni 1981	Forschungsaufenthalt im Integrated Projekt in Arid Lands (IPAL) der UNESCO in Nordkenya (Marsabit)
Sept 81-April 82	Wissenschaftlicher Mitarbeiter der Bundesforschungsanstalt für Forst- und Holzwirtschaft in Hamburg am Forschungsvorhaben des Bundesministeriums für wirtschaftliche Zusammenarbeit "Agroforstliche Produktion am Bei-

Gossner Mission

	spiel des Einzugsbereichs zentraler Orte im Sahel -Voraussetzungen, Aufgaben und Entwicklungsmoglichkeiten"
Sept/Okt 1981	Forschungsaufenthalt in Senegal im Projekt "Aufforstung an Brunnenstellen" der Gesellschaft für Technische Zusammenarbeit
01.02.1985	Abschlußprüfung zum Aufbaustudium mit einer Arbeit über "Die Rolle der Land- und Forstwirtschaft in der Ernährung der Bevölkerung im Norden Senegals"
1985	Dissertation über autochthone Nahrungspflanzen in afrikanischen Trockengebieten

Gossner Mission

Africa Inland Church ..... founded in 1895

P.O. Box 21028, Nairobi, Kenya

LOTUBAI, TURKANA

9th Aug 1979.

TO WHOM IT MAY CONCERN

Barbara Becker has worked with the South Turkana Agricultural Development Project run by this church from September 1978 and will be leaving in about ten days time.

When she first came she helped to organise the experimental garden in Lokori which deals with rainfed and irrigated grain and legume crops as well as fruit trees, and forest trees. Later she came out to Lotubai where she was instrumental in establishing stree nursery for local fruit trees as well as exotic types for fruit and timber. She has also assisted in surveying the project area, in marking out the fields for the individual settlers and in many other ways has she helped with the many faceted work of agricultural development.

On the spiritual side, she has taken a full part in leading and talking to the women's meetings, in Bible studies and so on.

We have enjoyed having Barbara working and staying with us, and look forward to hearing of the good work we feel sure she will be doing in the future.

A.B.Webster, B.Sc.(Hort), N.D.H.,
Project Leader,
AIC South Turkana Agricultural Project.

Gossner Mission

UNIVERSITÄT GÖTTINGEN
FACHBEREICH AGRARWISSENSCHAFTEN
ehem. LANDWIRTSCHAFTLICHE FAKULTÄT

Zertifikat

~~Herr~~ Frau Barbara Becker

geboren am 12.02.1954 in Schwebda

hat vom 01.10.1979 bis 01.02.1983

das Aufbaustudium der Agrarwissenschaften der Tropen und Subtropen mit der Gesamtnote

sehr gut

abgeschlossen. Mit diesem Studium hat ~~er~~/sie Spezialkenntnisse in den Agrarwissenschaften der Tropen und Subtropen erworben und eine besondere Befähigung zu selbständiger wissenschaftlicher Arbeit im angewandt wissenschaftlichen Bereich dieses Fachgebietes erlangt.

Im Rahmen dieses Studiums hat ~~er~~/sie an 19 Lehrveranstaltungen teilgenommen und in den Prüfungen die Durchschnittsnote

sehr gut

erzielt.

Für die Forschungsarbeit mit dem Titel

Die Rolle der Land- und Forstwirtschaft in der Ernährung der Bevölkerung im Norden Senegals.

die in einem hochschulöffentlichen Kolloquium diskutiert wurde, ist die Note

sehr gut

erteilt worden.

~~Er~~/Sie hat Kenntnisse der Umgangssprache Englisch mit einer amtlich anerkannten Bescheinigung nachgewiesen.

Göttingen, den 21. Februar 1983

(Siegel des Fachbereiches)

Der Dekan
(Prof. Dr. H. Seifert)

Gossner Mission

UNIVERSITÄT GÖTTINGEN
FACHBEREICH AGRARWISSENSCHAFTEN
ehem. LANDWIRTSCHAFTLICHE FAKULTÄT

Studieninhalt und Leistungsnachweis des Aufbaustudiums der Agrarwissenschaften der Tropen und Subtropen

~~Herr~~/Frau Barbara Becker

geboren am 12.02.1954 in Schwebda

hat vom 01.10.1979 bis 01.02.1983

im Rahmen des Aufbaustudiums der Agrarwissenschaften der Tropen und Subtropen an folgenden Lehrveranstaltungen teilgenommen und die nachstehenden Noten erzielt:

Fach	Note		Prüfer
Entwicklungspolitik	sehr gut	(1.0)	Dr. Mai
Entwicklungszusammenarbeit	sehr gut	(1.0)	Dr. Mai
Entwicklungstheorien	sehr gut	(1.3)	Dr.Dr.habil. Manig
Ernährungsplanung in Entwicklungsländern	gut	(1.7)	Dr. Jentzsch
Problems of Tropical Agriculture	sehr gut	(1.0)	Prof. Rehm
Tropische u. Subtropische Pflanzenprodukte	sehr gut	(1.3)	Prof. Rehm
Erhaltung und Verbesserung der landwirtschaftlichen Produktivität in den humiden Tropen	sehr gut	(1.0)	Dr. Prinz
Fallstudien zur Erhaltung der landwirtschaftlichen Produktivität unter Berücksichtigung von tradierten und modernen Gesellschaftssystemen	sehr gut	(1.0)	Dr. Prinz
Agrikulturchemisches Praktikum	sehr gut	(1.3)	Prof. Przemeck
Ökologische Grundlagen der Entwicklungshilfe	sehr gut	(1.0)	Prof. Ellenberg
Vegetation und Flora der Erde	sehr gut	(1.0)	Prof. Ellenberg
Humanhygiene in den Tropen	sehr gut	(1.0)	Prof. Seifert
Ökopedologische Grundlagen der Bodennutzung in den Tropen und Subtropen	gut	(1.7)	Prof. Fölster
Geologie, Mineralogie, Bodenkunde	sehr gut	(1.3)	Prof. Fölster

siehe Anlage

Die Durchschnittsnote für die obigen Lehrveranstaltungen lautet

sehr gut (1.0)

Gossner Mission

Anlage zum Studieninhalt und Leistungsnachweis des Aufbaustudiums der Agrarwissenschaften der Tropen und Subtropen

der Frau Barbara Becker

Fach	Note		Prüfer
Einführung in die Mineralogie	sehr gut	(1.3)	Dr. R. Mayer
Bodenphysik	gut	(2.3)	Dr. Benecke
Tropisch- subtropischer Waldbau	gut	(1.7)	Prof. Lamprecht

(Prof.Dr. H. Seifert)
Der Dekan

Gossner Mission

Die Forschungsarbeit mit dem Titel

Die Rolle der Land- und Forstwirtschaft in der Ernährung der Bevölkerung im Norden Senegals.

wurde in der Zeit vom WS 8o/81 bis SS 82 im Institut für Pflanzenbau u. Tierhygiene in den Tropen u. Subtropen der Universität Göttingen angefertigt.

Die Arbeit wurde von Herrn Dr. Prinz betreut, weiterer Gutachter war Herrn Prof. Dr. Achtnich

Die Forschungsarbeit wurde in einem hochschulöffentlichen Kolloquium diskutiert und mit der Note

sehr gut (1.3)

beurteilt.

XXX Herr/Frau Barbara Becker

hat das Aufbaustudium der Tropen und Subtropen mit der Gesamtnote

sehr gut (1.1)

abgeschlossen.

Göttingen, den 21. Februar 1983

(Siegel des Fachbereiches)

Der Dekan
(Prof. Dr. H. Seifert)

Als Noten gelten: sehr gut (1), gut (2), befriedigend (3), ausreichend (4), nicht ausreichend (5)

Gossner Mission

S. z. k.

Frau Vera Beihofer
Städt. Krankenhaus Pforzheim
Schülerwohnheim
Kanzlerstraße

753o Pforzheim

Berlin, den 4.7.1983

Sehr geehrte Frau Beihofer!

Vielen Dank für Ihren Brief vom 25.6.83. Wir freuen uns über Ihr Interesse, im Rahmen eines Gesundheitsdienstes in einem Land der "Dritten Welt" mitzuarbeiten. Leider sind wir für Sie nicht der richtige Ansprechpartner. Wir haben zwar auch zum Teil Personal in Projekten, in denen wir mit den einheimischen Kirchen oder den Regierungen zusammenarbeiten, aber das geschieht immer in Form von mindestens dreijährigen Einsätzen. Außerdem geschieht die medizinische Versorgung in vielen "Dritte-Welt"-Ländern schon durch einheimische Kräfte, was ja auch letzten Endes immer das Ziel eines Projektes sein soll, In Ihrem Fall empfehlen wir Ihnen, sich an "Aktion 7", Seefeldstraße 8, 8o22 Zürich, zu wenden, die Kurzeinsätze (3 Wochen - 1 Jahr) vermitteln.

Viel Erfolg und
herzliche Grüße von den Mitarbeitern der Gossner Mission
i.A. G. Lischewsky, Sekr.

Gossner Mission

EINGEGANGEN
28. JUNI 1983
Erledigt .....

Pforzheim, 25.06.83

Sehr geehrte Damen und Herren!

Wie mir mitgeteilt wurde, vermitteln Sie Personen, die daran interessiert sind, in Ländern der Dritten Welt im Gesundheitsdienst zu arbeiten, an diese Länder.
Nun möchte ich gerne wissen, ob dies tatsächlich zutrifft, und wenn ja, möchte ich Sie bitten, mir einige Informationen darüber zu geben. Mich interessiert besonders, ob diese Arbeitseinsätze mehrere Monate dauern müssen, oder ob es auch möglich ist, nur einen Monat lang in einem solchen Land zu arbeiten.
Um eine baldige Antwort wäre ich Ihnen dankbar.

Mit freundlichen Grüßen

Vera Beihofer

Gossner Mission

E. Mische

Regina Benzinger
Gosslerstr. 17a
3400 Göttingen

24.3.83

Sehr geehrte Regina Benzinger!

Leider ist Ihre Postkarte unter einem Stapel von Papieren bei mir versteckt gewesen, so daß ich erst heute dazu kommen, auf Ihre Anfrage zu reagieren.
Die Gossner Mission arbeitet in einem ländlichen Entwicklungsprojekt im Gwembe-Tal, Zambia, mit. In Tanzania sind wir leider nicht engagiert. Auf jeden gebe ich einmal die Kontaktadresse von unseren Mitarbeitern an:

Gossner Service Team
P.O. Box 4
Sinazeze via Choma
Zambia

Dann sollten Sie vielleicht noch bei Frieder Bredt anfragen, der für DÜ(Dienste in Übersee) beim Christian Council ein landwirtschaftliches Programm für arbeitslose Jugendliche betreut.

Adresse:

The Christian Council of Zambia
P.O. Box 30315
Lusaka, Zambia

Vielleicht klappt es ja.

Mit freundlichen Grüßen

Gossner Mission

Regina Bentinger
Gosslerstr. 17a
3400 Göttingen

UNIVERSITÄTS-
U. KONGRESS-
STADT
GÖTTINGEN

DEUTSCHE BUNDESPOST 10
DEUTSCHE BUNDESPOST 50
10.1.83
3400

Gossner Mission
Handjerystr. 19-20
1000 Berlin 41

EIN-GEGANGEN
24. JAN. 1983
Erledigt: .....

Gossner Mission

Sehr geehrte Damen und Herren

bin auf der Suche nach einem landwirtschaftlichen Praktikumsplatz in Afrika (Tanzania). Ich interessiere mich sehr für tropische Landwirtschaft und möchte nach dem Vordiplom 1/2 Jahr mit dem Studium aussetzen um praktische Erfahrungen zu sammeln. Am meisten interessieren mich Selbsthilfe-Initiativ-Projekte in Afrika. Zu wurde mir freuen wenn Sie mir in irgendeiner Weise weiterhelfen könnten, sei es durch Kontaktadressen, Anschriften von Projekten oder ähnliches.

Viele Dank im Voraus,

mit freundl. Grüßen

Regina Blessinger

Gossner Mission

(cc) Stockmann Original-Umweltschutzpapier aus 100% Altpapier – hergestellt ohne Gewässerbelastung, Bleichung, Färbung

Herrn und Frau
Reinhard und Doris Bald
Unterm Höllscheid 1
592o Bad Berleburg

22.1o.1982

Lieber Herr und liebe Frau Bald!

Unsere Mainzer Kollegen haben uns Ihren Brief vom 1.1o. nach Berlin geschickt, weil die Gossner Mission im Augenblick nur von hier aus Fachkräfte nach Übersee vermittelt.

Die Gossner Mission bildet nicht selbst für den Dienst in Übersee aus, sondern sucht bei Bedarf Mitarbeiter mit einer abgeschlossenen Ausbildung und möglichst Berufserfahrung. Da heranwachsende Kinder die Aussendung in der Regel wieder schwieriger machen, bleibt nur eine kurze Zeitspanne für eine problemarme Vermittlung in solch einen Dienst.

Sie beide als Theologe und Erzieherin/Gemeindehelferin sind nach unserer Erfahrung am ehesten durch eine Missionsgesellschaft in einer Partnerkirche in Übersee einsetzbar. Die Gossner Mission hat nur von Zeit zu Zeit solche Stellen frei, in Zambia und in Indien. In Indien sind wir allerdings im letzten Jahr gescheitert bei dem Versuch, eine Arbeitserlaubnis von der indischen Regierung für einen deutschen Theologen zu erhalten. In Zambia haben wir die Theologenstelle gerade neu besetzt für die nächsten 3 Jahre. Sie sehen also, daß die Aussichten speziell bei uns für sie im Augenblick nicht sehr günstig sind,

Wir möchten Ihnen darum raten, sich bei anderen regionalen Missionswerken und Missionsgesellschaften zu erkundigen, wie der Vereinigten Evangelischen Mission in Wuppertal, dem Berliner Missionswerk (gleiche Anschrift wie wir), dem Evang. Missionswerk in Südwestdeutchland in Stuttgart oder dem Ev.-Luth. Missionswerk in Niedersachsen in Hermannsburg oder dem Missionswerk der Ev-.Luth. Kirche in Bayern in Neuendettelsau. Sie können es sich auch einfacher machen und Ihre Anfrage an das Evang. Missionswerk in Hamburg schicken. Die verteilen es dann an alle Mitgliedsorganisationen, wozu auch alle oben Genannten gehören.

Grundsätzlich vermitteln sie alle nur auf Anfrage von ihren Partnerkirchen aus Übersee. Die bitten um Fachleute für bestimmte spezielle Aufgaben. Darum ist es schwer, einen Rat für die Ausbildung hier in Deutschland zu geben. Gute Kenntnisse in Englisch oder Französisch, Kenntnisse in der Geschichte der Mission und der ökumenischen Bewegung, der Kolonialgeschichte und der Entwicklungsstrategien sind auf jeden Fall nützlich, wenn nicht gar nötig. Das sollten Sie bei Ihrem Studium berücksichtigen.

Schade, daß ich im Augenblick nicht konkreter werden kann. Für weitere Rückfragen stehen wir Ihnen gern zur Verfügung. Sollten Sie mal in Berlin sein, würden wir uns über einen Besuch freuen.

Mit guten Wünschen für Sie und herzlichen Grüßen,
Ihr

Siegwart Kriebel

Gossner Mission

Eingegangen
07. OKT 1982
Erledigt: .....

Abs: Reinhard u. Doris
Bald
Unterm Höllscheid 1
5920 Bad Berleburg

Sehr geehrte Damen und Herren! 1.10.82

Meine Frau (30J, Erzieherin u. Gemeindehelferin) und ich (26J, Theologiestudent 11. Sem.) sind offen für den weltmissionarischen Dienst.
Wir möchten uns deshalb gerne über die Ausbildungswege und die Möglichkeiten für verschiedene Missionsdienste informieren.
Auch möchten wir gerne wissen, welche Möglichkeiten eines Dienstes es speziell für uns gibt und ob eine weitere Ausbildung dazu bei Ihnen möglich ist.

Für alle Information im voraus vielen Dank.

Mit freundlichen Grüßen

Reinhard u. Doris Bald

Gossner Mission

Frau
Sigrun Brennecke
3100 Wulfshorst

5.10.1982

Liebe Frau Brennecke!

Herzlichen Dank für Ihre Anfrage vom 5.9., die ich gestern nach einer vierwöchigen Abwesenheit aus Berlin vorgefunden habe.

Wahrscheinlich haben Sie schon vielmals gelesen, was ich Ihnen auch noch einmal zu Ihrem Wunsch schreiben könnte, für ein halbes Jahr oder auch ein ganzes in einem Überseeprojekt mitzuarbeiten, am liebsten mit Kindern: von der Nachfrage nach qualifizierten Mitarbietern, von der Arbeitslosigkeit in Übersee, so daß ungelernte Kräfte überall reichlich zur Verfügung stehen usw.

Ich möchte Ihnen darum lieber ein paar Möglichkeiten nennen, in der Hoffnung, daß da noch etwas Neues für Sie dabei ist, was Sie noch nicht probiert haben. Denn grundsätzlich finde ich Ihren Wunsch sehr gut. Über Ihr Interesse an der Dritten Welt freue ich mich. Die Gossner Mission selbst könnte Ihnen allenfalls ein kürzeres Studienprogramm anbieten, von höchstens einem Vierteljahr. Und auch dafür ist im Augenblick die Zeit ungünstig. Denn ein Mitarbeiterehepaar in Nepal, das gelegentlich Besucher für so eine Zeitspanne bei sich in einem ländlichen Projekt aufgenommen hat, kommt demnächst nach Deutschland zurück. Und in Zambia, wo wir ein Team von Fachleuten in einm anderen ländlichen Projekt haben, sind die Voraussetzungen für solche Studienaufenthalte nicht so gut. Wir können von Berlin aus auch nur die Kontakte herstellen. Die Vereinbarung muß dann mit dem Projekt selbst getroffen werden. Da wir keine Stellen für Praktikanten haben, könnte es sich also nur um einen privaten Besuch auf Touristenvisum handeln, den die Besucher selbst finanzieren, wobei am Ort dann keine großen Unkosten mehr entstehen, da die Unterkunft meist gratis ist, so daß nur die Verpflegung und evtl. Transport bleiben.

Aber haben Sie schon Folgendes probiert:

Das Berliner Missionswerk (dieselbe Anschrift wie wir) vermittelt von Zeit zu Zeit missionarisch-diakonische Helferinnen für jeweils ein Jahr nach Südafrika oder Tansania. Dabei müßten Sie den Flug bezahlen, bekämen aber für den Aufenthalt dort ein Unterhaltsgeld (kein volles Gehalt). Das ist kein reiner Studienaufenthalt, sondern eher ein Praktikum in Ihrem Sinne. Die Kirche in Afrika würde Sie einer Gemeinde oder einer Institution zuweisen, wo Sie mit leben und mit arbeiten können.

Eventuell vermitteln der CVJM oder Terres des hommes Freiwillige für eine begrenzte Zeit? Ich weiß das nicht genau, könnte es mir aber denken.

Wegen Ihrer Spraxhkenntnisse sollten Sie sich auf den englischsprachigen Raum konzentrieren.

Hoffentlich nützt Ihnen diese Auskunft was. Alles Gute bei der Planung.
Herzliche Grüße,
Ihr
K-

Gossner Mission

Sigrun Brenneke

EINGEGANGEN
- 7. SEP. 1982
Erledigt .....

Wulfshorst, den 5.9.1982

3100 Wulfshorst /Celle
Telefon 05084/691

Sehr geehrte Damen und Herren!

Mir wurde durch den Pastor in unserer Gemeinde geraten mich an die Gossner Mission zu wenden.

Meine Freundin und ich, wir haben beide erst unsere Schulausbildung beendet, möchten für ca. 6 Monate nach Südostasien oder Lateinamerika gehen und dort für einen allgemeinnützigen Zweck tätig sein. Wir wollen also nicht für ein halbes Jahr Urlaub machen, sondern dieses Zeit soll uns nützlich sein, uns z.B. über unsere weitere Ausbildung klar zu werden, durch die guten und schlechten Erfahrungen dort.

Meine Freundin hat den Realschulabschluß und ich das Abitur. Ich würde gern etwas mit Kindern machen, denn momentan arbeite ich in einem Kindergarten (für 2 Monate).

Wir haben uns schon an sehr viele Institutionen gewandt und werden immer wieder abgewiesen, da wir keine Berufsausbildung haben, vielleicht können Sie uns jedoch eine Möglichkeit vermitteln, bei der

Gossner Mission

wir auch ohne Berufsqualifikation, nur mit unserem „guten Willen", in einem sozialen Projekt tätig sein können.
Wir verfügen beide über genügend Englischkenntnisse, etwas Französisch, jedoch keine Spanisch.
Wir hoffen beide sehr, daß Sie eine Möglichkeit für uns finden und danken Ihnen schon im voraus für Ihre Mühe, die sich hoffentlich lohnt.

Mit herzlichem Gruß

Sigrun Brenneke

Gossner Mission

Bau

Herrn
J.Olujimi Bereola
Chausseestraße 73

1000 Berlin 65

Berlin, den 25.8.1980

Sehr geehrter Herr Bereola!

Wir danken Ihnen herzlich für Ihren Brief vom 12.8. und Ihr großes Interesse an einer Mitarbeit im Gwembe-South-Development-Project. Vor einigen Tagen ist der neue Bauingenieur, den wir nach langer Suche endlich einstellen konnten, für 3 Jahre nach Zambia ausgereist. Wenn nach dieser Zeit die Stelle neu zu besetzen ist, werden wir uns erneut mit Ihnen in Verbindung setzen. Solange werden wir Sie durch Info-Material (Jahresberichte, etc.) auf dem Laufenden halten. Vorerst wünschen wir Ihnen und Ihrer Familie alles Gute und möchten Ihnen auch herzlich zum Familienzuwachs gratulieren.

Mit freundlichen Grüßen
i.A.

Lischewsky, Sekretärin

Anl. Jahresberichte 79

Gossner Mission

J. Olujimi Bereola
M. Sc (Eng); Bau-Ing (grad); V.D.I.; BDB

Eingegangen
14.5. AUG. 1980
Erledigt

Chausseestrasse 73
1000 Berlin 65
West-Germany
Tel. (030) 465 69 23

Gossner Mission
Handjery Strasse 19-20
1000 Berlin 41

Berlin, den 12.8.1980

Betr.: Gwembe-South Development Projekt

Sehr geehrter Herr Mische!

Bezugnehmend auf Ihr Schreiben vom 29.1.1980 und dem darauffolgenden Telefonat ein paar Tage später, möchte ich Sie nochmals darauf aufmerksam machen, daß ich noch großes Interesse an solchen Projekt in Zukunft habe.
Da Ihnen sicherlich noch aus unseren Telefonat bekannt ist, daß ich aus beruflichen und privaten Gründen nicht mehr in diesem bzw. ca. 3 Jahre zur Verfügung stehen kann, bitte ich Sie nochmals meinen Namen auf Ihre Warteliste auf darauffolgende Jahre zu unterstreichen.

Meine jetzige Tätigkeit (Tiefbaubereich) wird sicherlich ein Gewinn für die Arbeit sein, wenn ich in naher Zukunft solch ein Development Projekt übernehmen kann.

P.S.
Entschuldigen Sie mich wegen der Verspätung des Schreibens.
Dies ist zurückzuführen auf die Familienvergrößerung und natürlich auch wegen des Umzuges.

Mit freundlichen Grüßen

Juliah Martin Bereola

Gossner Mission

Eilend z. Akten.

xxxxxxxxxxxxx851o21

Herrn
HJoachim Böhnert
Kyritzer Weg 8

1ooo Berlin 37

Berlin, den 8.7.1982

Sehr geehrter Herr Böhnert!

Wir danken Ihnen sehr herzlich für Ihr Interesse an einer Mitarbeit im Gwembetal in Zambia. Leider sind zur Zeit alle Planstellen besetzt.
Wir würden uns aber freuen, wenn Sie nach Abschluß ihres Fachschulstudiums noch einmal Kontakt mit uns aufnehmen möchten, um dann über einen möglichen Einsatz in Zambia zu sprechen.
Vorerst wünschen wir Ihnen alles Gute und verbleiben

mit den besten Grüßen
i.A.

G. Lischewsky

Gossner Mission

Joachim Böhnert
Kyritzer Weg 8
1000 Berlin 37

Habe Interesse an Mitarbeit bei der Gossner Mission, oder anderen Organisation im Entwicklungsdienst.

Kurz zu meiner Person:

Geboren am 4.4.54 in Berlin u. somit z.Zt. 27 Jahre
Von Beruf Gärtner.
Für den DED arbeitete ich 2½ Jahre in Zambia an dem Teacher Training College in Mongu. Aufbau u. Leitung einer Production Unit mit hauptsächlich Gemüsebau u. Hühner- und Schweinehaltung
Mein DED Vertrag lief bis April 81. Danach verlängerte Rückreise durch Afrika und in den letzten 7 Monaten zweiter Besuch von Südamerika.

Ab September 82 besuche ich eine Fachschule für Gartenbau u. Weinbau in Würzburg. Dauer 1 Jahr.
Danach hätte ich Interesse an einer Mitarbeit.

Gossner Mission

eigenen Gärten aufgegessen. Neues Gemüse kann aber nicht vor der Regenzeit, die im Dezember beginnt, angebaut werden. Dann dauert es mindestens noch zwei Monate bis zur ersten Ernte.

In früheren Zeiten kannten die Frauen zahlreiche Pflanzenarten und Wurzeln, die im Busch wild wachsen. Sie müssen nun ermuntert werden, daß sie diese Kenntnis nicht verlieren, sondern weiter nutzen. Ein anderer Weg ist, daß mit Hilfe von Bewässerung unabhängig von den Jahreszeiten zu pflanzen oder Erdnüsse, Bohnen und Okra anzubauen. Diese Produkte lassen sich leicht trocknen und lagern. Agnes Nyimba hat schon einen Versuchsgarten mit Bohnen angelegt.

Frauenklub Malima

Seit Mai ist in dem wieder aufgebauten Bewässerungsprojekt von Buleya Malima ein Versuch mit Frauen unternommen worden, der in diese Richtung zielt. Es ist bisher sehr verheissungsvoll verlaufen. Zusammen mit Peter Wendt, Herrn Malala und Herrn Duncan wurde ein Plan entwickelt, ein besonderes Programm für Frauen durchzuführen. Auch das Bauernkomitee stimmte zu. Seitdem arbeiten 2o Frauen zweimal in der Woche auf ihrem Stück Land. Sie werden von Herrn Duncan betreut und beraten. Durch Bewässerung bauen sie Gemüse ausserhalb der normalen Saison an. Der eine Lima (1 Lima = o,25 ha) ist zur Hälfte mit grünem Mais und zur anderen Hälfte mit Bohnen und Okra bepflanzt. Nach meiner Vorstellung sollte dieses Gemüse für den eigenen Verbrauch gedacht sein. Aber die Frauen haben sich anders entschieden. Sie wollen die Gemüseernte verkaufen. Ein Teil der Ernte müßte sowieso verkauft werden, um die ausgelegten Ausgaben zurückzuzahlen: 32 Kwacha (DM 8o,-) für Plastikschläuche, 5 Kwacha (DM 12,5o) für Saatgut und das Wassergeld, das noch nicht von der Regierung festgesetzt ist. Es könnte sich aber auf 1oo Kwacha (DM 25o,-) belaufen.

Da mir sehr an dieser Produktionsgruppe lag, habe ich mich gegenüber den Frauen auch autoritärer verhalten als bei den anderen Programmen. Ich möchte nun aus eigenem Interesse herausfinden, wie sich meine Einstellung und mein Verhalten während der 1 1/2 Jahre, die ich im Gwembetal arbeite, verändert haben. Ich werde diese von mir angewandte neue Methode mit der vergleichen, die ich beim Sisalprogramm im Oktober 198o eingesetzt habe.

Eva Engelhardt

Gossner Mission

E. Mische

8.4.82

Beate Behr
Imkergeld 40
2720 Rotenburg/Wümme

Liebe Beate Behr!

Zunächst besten Dank für die freundliche Anfrage und die Schilderung des eigenen Ausbildungsweges und Ihre persönlichen Erfahrungen.
Bei einem Praktikum in Übersee müßten einige Voraussetzungen geklärt sein:

1. Die Ausbildungsinstitution müßte zustimmen und die Bedingungen angeben, unter denen sie eine Übersee-Praktikum akzeptiert.
2. Die Finanzierung muß geklärt werden.
3. Die Übersee-Partner müssen zustimmen und jemand muß als Tutor bzw. Tutorin gefunden werden.

Die Gossner Mission arbeitet in Zambia und Nepal. Sie hat aber z.Z. keine Ärzte und Krankenschwestern unter Vertrag. Grundsätzlich sind wir nicht gegen ein Übersee-Praktikum. Wir brauchen dazu aber in Zambia die Zustimmung unserer Mitarbeiter und der zambischen Behörden. Kürzlich ist eine Abiturientin für einige Monate in Zambia gewesen und hat u.a. auch in einer dörflichen Klinik mitgearbeitet. Es hat ihr viel Spaß gemacht. Ob diese Zeit jedoch angerechnet wird, kann ich im Augenblick nicht sagen. Da müßte ich mich noch einmal erkundigen.
Also grundsätzlich ist es möglich. Ich möchte aber einige kritische Sätze hinzufügen. Der Einsatz in Übersee für eine kurze Zeit eignet sich nicht gut, um die Reserven gegenüber der Berufssituation hier im Land abzubauen oder zu überwinden. Gegen diese Gründe hätte ich starke Bedenken, weil die Erfahrungen in Übersee in der Regel negativ ausfallen, so daß der Frust vielleicht noch größer wird.

Vielleicht erfahren wir von Ihnen noch ein wenig mehr und vor allem, wie sie die Punkte 1 und 2 regeln lassen.

Mit freundlichen Grüßen

Gossner Mission

EINGEGANGEN
- 4. März 1982
Erledigt .....

Rotenburg 3.3.82

Sehr geehrte Damen und Herren!

Ich, Beate Behr, bin zur Zeit Krankenpflegeschülerin im hiesigen Diakoniekrankenhaus. Im einem Monat werde ich jedoch diese Ausbildung mit dem staatlich anerkannten Examen abschließen.
Im Ganzen hat mich die Arbeit in diesem Krankenhaus nicht sehr befriedigt. Außerdem was mich dann als examinierte Schwester erwartet, ist noch viel weniger reizvoll: Schreibarbeit usw.
Um noch neue Möglichkeiten für diesen an sich so anspruchsvollen Beruf auszuprobieren, wollte ich gerne ein Praktikum in Übersee unter Leitung einer Missionsgesellschaft machen.
An sich bleibt für dieses Praktikum nur eine Zeit von 9 Monaten über, weil danach eine weitere Ausbildung für mich beginnt.
Erst vor kurzem habe ich zum erstenmal „Das Wort in der Welt" gelesen. Es hat mich sehr, sehr angesprochen, weil es sich ~~an~~ sehr um die sozialen Probleme der Menschen kümmert.
Ich habe Mission bisher fast ausschließlich als „Wortverkündigung" erlebt, und bin von daher sehr positiv überrascht, eine Missionsgesellschaft gefunden zu haben, die so nah am Menschen arbeitet.

→

Gossner Mission

Hiermit möchte ich mich also nochmal erkundigen, welche Möglichkeiten es für mich gibt, mit Ihrer Missionsgesellschaft ein Praktikum im Übersee zu machen.
Vorweg gesagt, eine Hebammenausbildung habe ich nicht und möchte gerne, daß das Praktikum nicht länger als 9 Monate dauert.

Ich würde mich sehr freuen, wenn sich trotz dieser Einschränkungen, eine Möglichkeit für mich zeigt.

Mit freundlichen Grüßen

Beate Behr

Beate Behr
Imkersgeld 40
2720 Rotenburg / Wümme

Gossner Mission

25.11.1981

Frau
Ruth Bürger
Erlenweg 3
6438 Ludwigsau/Hess 1

Liebe Frau Bürger!
Haben Sie vielen Dank für Ihre Anfrage vom 14.11.1981.
Beiliegendes Informationsmaterial über unsere Mitarbeiter und Partner in Nepal und Zambia soll Ihnen einen kleinen Einblick in unsere Arbeit geben. Im Augenblick besteht von unserer Seite aus keine Möglichkeit, nach Übersee ausgesandt zu werden, aber wenden Sie sich mit Ihrer Anfrage an den Deutschen Entwicklungsdienst (DED), Kladower Damm 299, 1000 Berlin 22, vielleicht kann Ihnen von dort weitergeholfen werden.

Mit freundlichen Grüßen
im Auftrag

P.

Gossner Mission

14. 11. 1981

Ruth Bürger
Erlenweg 3
6438 Ludwigsau / Hess 1

EINGEGANGEN
19. Nov. 1981
Erledigt .....

Sehr geehrte Damen und Herren!

Im August 1982 beende ich meine Ausbildung als landwirtschaftlich-technische Assistentin. Da ich in Erwägung ziehe nach einiger Zeit Fachpraxis in den Entwicklungsdienst zu gehen, möchte ich Sie jetzt schon bitten, mir Informationsmaterial über Ihr Institut und über die Anforderungen die Sie an einen Entwicklungshelfer stellen zu senden.

Vielen Dank im voraus

Ruth Bürger

Zambia
Nepal
Interessente-Berichte
allg. Informationen

Gossner Mission

Fräulein
Corinna Brähler
Altkönigstr. 21
6500 Mainz 32

10.6.1981

Liebe Corinna!

Über Deinen Brief haben wir uns sehr gefreut. Vor allem darüber, daß Du überlegst, wie Du mal nach Indien gehen kannst, vielleicht mit der Gossner Mission.

Dazu möchte ich Dir erläutern:

1. Krankenschwestern werden in Zukunft wohl nicht mehr viele gebraucht werden, auch nicht in Indien, aber auch in vielen andern Ländern nicht. Denn es gibt jetzt in vielen Ländern Krankenschwestern, denen wir Ausländer ja nicht die Arbeit wegnehmen wollen. Die indische Regierung würde dafür auch keine Arbeitserlaubnis mehr erteilen.

Etwas anderes ist es allerdings mit Community Health Nurses. Das sind Schwestern, die in abgelegenen Dörfern einen einfachen Gesundheitsdienst aufbauen, der nach Möglichkeit von den Dorfbewohnern selbst organisiert und durchgeführt wird. Ich glaube, solch eine Spezialausbildung kann man in England erwerben.

2. In Indien ist es auch mit anderen Berufen schwierig. Dort wird kaum noch ein Ausländer hineingelassen, um zu arbeiten. Touristen dürfen natürlich einreisen.

3. Wir schicken Mitarbeiter zur Zeit vor allem nach Zambia und Nepal. Deshalb schicke ich Dir Informationen über unsre Arbeit in diesen beiden Ländern mit. Dann kannst Du Dir ein bißchen vorstellen, was für Leute wir suchen und was die dann in dem betreffenden Land machen.

4. Aber Du kannst natürlich auch schon vorher mal hinfahren und Die alles ansehen, vielleicht auch ein bißchen mitmachen. Aber nur als "Touristin", und das heißt auch: auf eigene Kosten. Es fahren immer wieder mal junge Leute zu unseren Mitarbeitern in Zambia oder Nepal, besuchen sie für ein paar Monate oder Wochen (Visum für 3 Monate), gehen mit, gucken sich alles an, helfen wohl auch ein bißchen mit. Da lernt man natürlich eine ganze Menge. Und vor allem kann man dabei herausfinden, ob es einem Spaß machen würde, auch für längege Zeit einen richtigen Arbeitsvertrag abzuschließen. Aber dazu muß man dann etwas älter sein und nach Möglichkeit auch schon etwas Berufserfahrung haben.

Wir würden uns freuen, wenn wir mit Dir in Verbindung bleiben könnten. Auf jeden Fall werden wir Dir Informationen auch weiterhin zuschicken.

Mit guten Wünschen für Dich
und herzlichen Grüßen,
Dein

Siegwart Kriebel

Gossner Mission

Herrn
Klaus-Dieter Bergmann
Wendtlandzeile 6

1000 Berlin 41

Berlin, den 2.2.1986

Betr.: Ihre Bewerbung als Verwaltungsangestellter vom 12.1.1981

Sehr geehrter Herr Bergmann!

Wir danken Ihnen für IhrerBewerbung und Ihr Interesse an einer Mitarbeit bei der Gossner Mission. Leider haben wir die Stelle durch einen anderen Bewerber besetzt. In der Anlage schicken wir Ihnen Ihre Unterlagen wieder zurück.
Für Ihren weiteren Berufsweg wünschen wir alles Gute!

Mit freundlichen Grüßen
i.A. Lischewsky, Sekr.

Anl.: s.o.

Gossner Mission

EINGEGANGEN
13. JAN. 1981
Erledigt .....

Gossner Mission
Handjerystr. 19-20
1000 Berlin 41

Klaus-Dieter Bergmann
Wendlandzeile 6
1000-41, Tel. 8557438

Betr.: Bewerbung als Verw.-Angestellter

Hiermit bewerbe ich mich um die ausgeschriebene Stelle in der Berliner Morgenpost, vom 11.01.81, in Ihrem Hause.
Meinen Werdegang können Sie aus meinen beigefügten Unterlagen ersehen. An einer Mitarbeit in der Personalverwaltung bin ich sehr interessiert.
Für ein persönliches Gespräch stehe ich Ihnen jederzeit zur Verfügung.
Ich verbleibe mit freundlichem Gruß.

Hochachtungsvoll
Klaus-Dieter Bergmann
Berlin 41, den 12.01.81

Gossner Mission

Herrn
Jack Richard Bögl
Riedauerstr. 22

A-491o Ried/Innkreis

Berlin, den 6.6.8o

Sehr geehrter Herr Bögl!

Nach reiflicher Überlegung und Rücksprache mit dem zukünftigen Teamleader des Gossner Service Teams, der zur Zeit auf Heimaturlaub in Deutschland ist, möchte ich Ihnen absagen. Aufgrund Ihrer Ausbildung werden die Schwierigkeiten für uns zu groß werden, so daß ich keine Möglichkeit sehe, Sie als Mitarbeiter einzustellen. Mir tut dies sehr leid, aber bich bitte um Ihr Verständnis.
Als Entlastung schicke ich die uns übersandten Unterlagen wieder zurück.

Mit freundlichen Grüßen und den besten Wünschen für Ihre Zukunft

gez. Erhard Mische (nach Diktat verreist)
(Zambia-Referent)
i.A. Lischewsky, Sekr.

Gossner Mission

7.5.1980

Herrn
Richard Bögl
Riedauerstr. 22
4910 Ried/Innkreis

Sehr geehrter Herr Bögl!

Bezugnehmend auf unser Telefongespräch am 6.5. möchte ich Ihnen zunächst vielmals für Ihr Interesse an einer möglichen Mitarbeit im Gossner Service Team danken. Zu Ihrer besseren Orientierung schicke ich Ihnen einiges Informationsmaterial zu. Darüberhinaus einen Motivationsbogen, den Sie bitte möglichst bald ausgefüllt wieder an uns zurückschicken möchten.

Das Gwembe South Development Project ist ein Entwicklungsprojekt der Regierung von Zambia, in dem die Gossner Mission mitarbeitet. Dieses Projekt will einen Beitrag zur ländlichen Entwicklung, zur Verbesserung der Lebensbedingungen für die Menschen und zur Stärkung für die eigene Fähigkeit und Kraft leisten. Die Gossner Mission versteht ihre Mitarbeit als "Hilfe zur Selbsthilfe". Darum erwartet sie aus entwicklungspolitischer Verantwortung von ihren Mitarbeitern Flexibilität, Anpassungsfähigkeit an die lokalen Verhältnisse und neben der fachlichen Qualifikation Sensibilität und Verständnis für die Lebensweise der einheimischen Bevölkerung. Wir suchen darum nicht nur Experten, sondern Fachleute, die entwicklungspolitisch aufgeschlossen sind.

Die Vertragsdauer beträgt drei Jahre. Sie kann verlängert werden.

Speziell besteht die Aufgabe eines Bau-Ingenieurs nun darin, eine Bau-Genossenschaft mit ca. 60 Mitarbeitern zu betreuen, die noch nicht ohne ausländischen Rat existenzfähig ist. Sie wurde vom einigen Jahren gegründet und hat schon eine bemerkenswerte Konsolidierung erfahren.

Ich wäre Ihnen sehr dankbar, wenn Sie uns möglichst bald benachrichtigen könnten, ob Sie auch weiterhin an einer Mitarbeit interessiert sind, damit wir einen Termin vereinbaren, um mündlich gemeinsam ausführlich über die Arbeit und die Vertragsbedingungen zu sprechen. Bitte schicken Sie uns auch einen kurzen Lebenslauf.

Mit freundlichen Grüßen

E.Mische

Gossner Mission

Herrn und Frau
Manfred und Elisabeth Braun
Brunnenbergstr. 34
7880 Sigmaringen

24.4.1980

Liebes Ehepaar Braun!

Herzlichen Dank für Ihre Anfrage vom 21.4.80. Da Sie es eilig haben, möchten wir auch sofort antworten.

Lehrer werden tatsächlich nur von einigen Ländern in Übersee angefordert, und dann meist in den naturwissenschaftlichen Fächern, Mathematik und Englisch bzw. einer anderen Sprache. Voraussetzung für jede Vermittlung ist heutzutage eine Qualifikation in dem angeforderten Beruf. Man kann also praktisch niemenden mehr berufsfremd vermitteln. Freiwilligendienste werden gelegentlich in Missionsprojekten akzeptiert, die von der ausländischen Missionsgesellschaft verwaltet werden. Derartige Anforderungen werden von unseren Überseepartnern nicht mehr ausgesprochen.

Dennoch gibt es für Sie noch die Möglichkeit einer Vermittlung. Nur nicht bei der Gossner Mission. Wir sind eine sehr kleine Gesellschaft mit nur wenigen Übersee-Mitarbeitern. Weder haben wir in nächster Zeit eine Stelle frei für Ihre Berufe, noch könnten wir die Kombination Lehrer/Krankenschwester unterbringen. Aber vielleicht haben Sie bei "Dienste in Übersee", Gerokstr. 17, 7000 Stuttgart 1, mehr Glück, falls Sie es dort nicht schon versucht haben. Das ist zwar die zentrale Vermittlungsstelle der Evangelischen Kirche, aber Mitgliedschaft in der evang. Kirche ist nicht unbedingt Voraussetzung. DÜ arbeitet weltweit und hat deshalb mehr Möglichkeiten als wir.

Allerdings müssen Sie auch wissen, daß die Zeit für die Nachfrage nach Krankenschwestern in Übersee ihrem Ende zugeht. In den meisten Ländern gibt es inzwischen einheimische Schwestern und angefordert werden immer nur solche Berufe, die es in dem netsprechenden Land noch nicht gibt. Schwestern werden in Zukunft vor allem im Community Health Programme, also im aufklärenden Gesundheitsdienst in Dörfern mit dem Ziel der Selbsthilfe, gesucht. Dafür wäre dann vielleicht für Sie noch eine kurze Spezialausbildung nötig.

Mit besten Wünschen
und freundlichen Grüßen,
Ihr

Siegwart Kriebel

Gossner Mission

Manfred und Elisabeth Braun
Brunnenbergstraße 34
7480 Sigmaringen

21. 4. 1980

Eingegangen
23. APR. 1980
Erledigt

An die
Gossner Missionare
Handjerystraße 19/20
1000 Berlin 41

Sehr geehrte Damen und Herren

Meine Frau und ich würden gerne für 2 - 3 Jahre in die "Dritte Welt" gehen. Wir haben uns deshalb bereits beim AGEH und bei verschiedenen katholischen Missionsgesellschaften beworben, bisher aber nur Absagen bekommen mit der Begründung, daß ich als Lehrer "nicht gefragt" bin oder daß keine Laien vermittelt werden können.

Tatsächlich sind wir nicht auf die Ausübung unseres Berufes fixiert, denn es geht uns darum, unser Leben, unsere Hoffnungen, unseren christlichen Glauben, unsere Arbeitskraft mit Menschen in der Dritten Welt zu teilen.

Ein paar Daten zu uns:
Elisabeth: 26 Jahre, Krankenschwester mit 5 Jahren Berufserfahrung (im Krankenhaus und in der ambulanten Krankenpflege), röm. katholisch, Englischkenntnisse.
Manfred: 32 Jahre, Sonderschullehrer für lernbehinderte und verhaltensgestörte Kinder, Grund- und Hauptschullherer mit den Fächern Kunsterziehung und Theologie, 4 1/2 Jahre Berufserfahrung, röm. kath., Englischkenntnisse.

Aus persönlichen Gründen würden wir gerne bereits schon im kommenden Schuljahr 1980/81 in Einsatz gehen, Meldefrist beim Schulamt ist für mich dann bereits der 15. 6. 1980. Deshalb bitten wir Sie , uns umgehend über Ihre Arbeit und über Einsatzmöglichkeiten zu informieren.

Wir warten mit Interesse auf Ihre Antwort. Schon jetzt vielen Dank für Ihre Bemühungen.

Mit freundlichen Grüßen

Manfred Braun

Gossner Mission

Bewerbungen

Friedrich-Karl Bohnsack

32 Hildesheim, den 17.11.79
Am Propsteihof 64
Tel 05121 44244

Eingegangen
20. NOV. 1979
Erledigt.....

An die
Gossner Mission
z. Hd. von Frau Friderici
Postfach/ Hemdjeristr.

1 Berlin

Betr.: Möglichkeiten der Arbeit in Übersee

Sehr geehrte Frau Friderici!

Herr Ulrisch Rüscher, mit dem ich momentan an einem Fernstudienkurs über evangelische Religion teilnehme, machte mich auf Ihre Organisation aufmerksam. Da ich schon seit länger Zeit versuche, für mich eine Vermittlungsmöglichkeit nach Übersee zu bekommen, wende ich mich heute an Sie.

Ich bin momentan als Lehrer für das höhere Handelslehramt tätig und zwar am Wirtschaftsgymnasium, an der Berufsfachschule Wirtschaft und der Höheren Handelsschule. Unterrichten tue ich die Fächer Mathematik, Erdkunde und die Wirtschaftsfächer - angefangen habe ich nun auch schon mit ev. Religion. Meine Frau ist Grund- und Hauptschullehrerin und wir haben momentan noch keine Kinder. Wegen unserer persönlichen Situation, beide Beamte und keine Kinder, war eine Beurlaubung meiner Frau bisher noch nicht beim MK in Hannover möglich, obwohl ich schon mehrere Vermittlungsmöglichkeiten hatte. Ohne einen Lokalvertrag für meine Frau kann sie momentan nicht beurlaubt werden, jedenfalls nicht als mitausreisende Ehefrau.

Sollten Sie eine Vermittlungsmöglichkeit innerhalb Ihrer Organisation in unserem persönlichen Fall sehen, würde ich mich freuen, von Ihnen näheres zu erfahren!

Mit freundlichen Grüßen

K. Bohnsack

Gossner Mission

Herrn und Frau
Friedrich-Karl Bohnsack
Am Propsteihof 64
32oo Hildeshei m

23.11.1979

Sehr geehrter Herr Bohnsack!

Vielen Dank für Ihren Brief vom 17.11. mit der Frage nach einer Vermittlung nach Übersee.

Für die Gossner Mission käme für ein Lehrerehepaar nur Nepal als Vermittlungsland infrage. Dort allerdings konzentrieren wir uns auch nicht auf den Schuldienst, sondern auf Dorfgesundheitsdienst und integrierte Dorfentwicklung. Das hängt mit unserem Verständnis von Entwicklung zusammen. Eher ausnahmsweise haben wir zur Zeit dort auch eine Lehrerin für Naturkunde an einer Oberschule. Da wir insgesamt nur 2 - 4 Mitarbeiter in Nepal haben, sehe ich also für Sie beide kaum eine Chance bei uns.

Da Sie sich offensichtlich schon länger um eine Vermittlung bemühen, kann ich Ihnen auch wohl kaum neue Tips geben. Wir denken natürlich sofort an "Dienste in Übersee", obwohl ich weiß, daß dort große Schwierigkeiten auftauchen, sobald Mann und Frau einen Vertrag anstreben. Aber unmöglich ist es auch nicht.

Dann bliebe noch der Deutsche Entwicklungsdienst in Berlin-Kladow. Vom DED weiß ich nicht, ob und unter welchen Voraussetzungen er für Ehepaare Verträge anbietet.

Schließlich sollten Sie bei den großen Missionswerken und Gesellschaften nachfragen, die mehr Mitarbeiter in Übersee haben als wir. Sie können eine solche Anfrage über das Evangelische Missionswerk in der BRD in Hamburg leiten oder von dort die entsprechenden Anschriften erfragen.

Es tut mir leid, daß Ihnen dieser Brief wahrscheinlich nicht viel weiter hilft. Ich wünsche Ihnen aber, daß Sie einen Weg zu einem Einsatz in Übersee finden.

Mit freundlichen Grüßen,
Ihr

Siegwart Kriebel

Gossner Mission

Becker (Bau-Ing.)

1. Dip.-Ing. Reinhard Miscian,
Sossowstr. 3 (Arbeitgeber)
1/30

2. Dipl.-Ing. Rudolf Krauss
Martin-Luth.-Str. 17a (Stellvertreter 1)
8400 Regensburg

3. Dipl.-Kaufm. Wilhelm Darsow (bekannt von Kenia)
Wilhelmstraße Dan 97
1/26

4. Dipl.-Kaufm. Herbert Nickels (Lehrgang)
Steglitzer Dam 8
1/41

angeschrieben am 24.9.79

Gossner Mission

Kirchhof: Alt-Gatow 32/38, 1000 Berlin 22, Tel.: 361 80 95

Gemeindebüro und Gemeindehaus: Plievierstraße 3,
1000 Berlin 22, Tel.: 361 80 95

Predigerstelle

Pastor Günther Hemmerling,
Uetzer Steig 13, 1000 Berlin 22, Tel.: 361 80 95
geb.: 15.01.22, ord.: 26.05.57, 1966 (K.B.)

6. Dorfkirchengemeinde Staaken

9 009 Gemeindeglieder

Zuversichtskirche: Brunsbütteler Damm 312, 1000 Berlin 20

August-Hermann-Francke-Heim: Cossarweg 17/19, 1000 Berlin 20

Gemeindebüro: Brunsbütteler Damm 312, 1000 Berlin 20,
Tel.: 366 15 74

Kindergarten: Brunsbütteler Damm 312, 1000 Berlin 20,
Tel.: 366 14 56

1) Jürgen Karl Schulze,
Brunsbütteler Damm 312, 1000 Berlin 20, Tel.: 366 18 12
geb.: 16.05.41, ord.: 27.01.74, 1978 (K.B.)

2) Pfn. Gerda Nitschke,
Brunsbütteler Damm 312, 1000 Berlin 20, Tel.: 366 18 22
geb.: 31.08.31, ord.: 20.04.75, 1975 (G.W.)

7. Dreieinigkeits-Kirchengemeinde

797 Gemeindeglieder

Gemeindebüro: Straße A Nr. 1 a, HoKa III, 1000 Berlin 13,
Tel.: 334 38 80

P. Rainer Herrberg,
Johannesstift, Melanchthonhaus, 1000 Berlin 20,
Tel.: 330 93 56
geb.: 28.07.42, ord.: 29.06.75, 1976 (komm.)

Gossner Mission

Frau
Margret Bayer
Öttingerstr. 1
7311 Notzingen

25.1.1979

Sehr geehrte Frau Bayer!

Haben Sie herzlichen Dank für Ihren Brief vom 23.1., in dem Sie Ihr Interesse an unserer Arbeit in Übersee bekunden.

In der Anlage finden Sie einige Unterlagen über unsere Arbeitsgebiete in Nepal und Zambia und über unsere Partnerkirche in Indien. Zu weiteren Auskünften stehen wir Ihnen jederzeit gern zur Verfügung.

Was eine Mitarbeit betrifft, werden Sie leicht ersehen können, daß für Ihren Beruf nur eines der Krankenhäuser der Vereinigten Nepal Mission in Frage käme. In der Tat sucht die UMN zur Zeit

" Radiographer/ X-ray technicians for two hospitals ".

Allerdings kann die Gossner Mission zur Zeit keine weiteren Mitarbeiter nach Nepal entsenden, weil wir dort gerade alle Stellen besetzt haben, die wir uns leisten können.

"Dienste in Übersee" in Stuttgart 1, Gerokstr. 17, sind jedoch ebenfalls eine Mitgliedorganisation der UMN, und unsere Arbeitsverträge ähneln stark denen von DÜ. Am Ende würde es für Sie also keinen großen Unterschied machen, ob Sie mit der Gossner Mission oder mit DÜ nach Nepal reisen, falls Sie gern dorthin möchten.

Wir möchten Ihnen darum raten, sich doch an DÜ zu wenden.

Falls Sie eine Mitarbeit nicht für sofort, sondern für später planen, würden wir uns natürlich freuen, mit Ihnen in Kontakt zu bleiben. Dann ergibt sich vielleicht doch noch einmal eine Gelegenheit, diese Frage ernsthaft zu prüfen. Aber auch dann, wenn Sie nicht Mitarbeiterin bei der Gossner Mission werden sollten, wollen wir von uns aus die Verbindung mit Ihnen nicht abreißen lassen.

Mit freundlichen Grüßen,
Ihr

Siegwart Kriebel

Gossner Mission

Bewerbung

Margret Bayer

7311 Notzingen 23. 1. 79
Öttingerstr. 1

EINGEGANGEN
25. JAN. 1979
Erledigt .....

Gossner Mission
Handjerystraße 19
1 Berlin 41

Ich interessiere mich für Ihre Missionsarbeit und würde gerne bei Ihnen mitarbeiten. Zur Zeit arbeite ich als Röntgenassistentin im hiesigen Kreiskrankenhaus. Für Informationsmaterial wäre ich Ihnen dankbar.

Mit freundlichen Grüßen

Margret Bayer

Radiographer / X-ray technicians for two hospitals

Gossner Mission

Herrn
Josiah Olujimi Bereola
Lichtenrader Str. 35

1ooo Berlin 44

Berlin, den 29.1.198o

Sehr geehrter Herr Bereola!

Vielleicht erinnern Sie sich noch an uns und an unser Gespräch im Haus der Mission in Berlin.

Im Anschluß daran hatte ich Ihnen abgesagt wegen einiger grundsätzlicher Bedenken, ob Sie als Afrikaner nach deutschem Standard besoldet in einem zambischen Entwicklungsprojekt mitarbeiten können.
Inzwischen bin ich in Zambia gewesen und habe mit unseren Mitarbeitern gerade über diese Frage gesprochen. Unsere Mitarbeiter haben im Verlauf dieses Gespräches meine Bedenken zerstreut.
Ich möchte Sie nun noch einmal fragen, ob Sie an einer möglichen Mitarbeit im Gwembe-South-Development-Project noch interessiert sind, da sich eine andere ernsthafte Bewerbung inzwischen zerschlagen hat. Wenn ja, bitte ich Sie, uns dies kurz telefonisch oder brieflich mitzuteilen.

Mit freundlichen Grüßen

GOSSNER MISSION

Erhard Mische

Gossner Mission

Herrn
Josiah Olujimi Bereola
Lichtenrader Str. 35

1ooo Berlin 44

Berlin, den 24.1o.1979

Betr.: Ihre Bewerbung als Bauingenieur

Sehr geehrter Herr Bereola!

In der Anlage senden wir Ihnen die uns überlassenen Bewerbungsunterlagen zu unserer Entlastung zurück, da wir die ausgeschriebene Stelle bereits durch einen anderen Bewerber besetzt haben. Wir wünschen Ihnen für Ihre weitere Zukunft alles Gute und verbleiben

mit freundlichen Grüßen

GOSSNER MISSION
i.A.

Sekr.

Gossner Mission

Herr Hisse!

Sie wollten sich noch einmal mit Herrn Bereola in Verbindung setzen.

(Bauinspektor)

U. 21.

Gossner Mission

Fa. Gossner Mission
Handjery Str. 19-20
1000 Berlin 41
z Hd. Herr Mische

Eingegangen
29. AUG. 1979
Erledigt

Josiah Olujimi Bereola
Stiftstrasse 14
6000 Frankfurt 1
28.08.1979

Anglikaner

Betrifft: Bewerbung einer Arbeitsstelle als Bau-Ingenieur (Hoch und Tiefbau)

Sehr geehrter Herren!

Zuerst bedanke ich mich für ihren brief vom 21.08.1979 und die Anlagen denen beigelegt worden sind. Nach mehrmal versuch an Ihre Stelle (Herr Mische) anzumfen, ohne erfolg habe ich dann entschlossen meine Ansicht im Papier zu bringen. Die Telefonaten erfolgten am 24.08.79 (3mal), 27.08.79 (1mal) und mir würde dann gesagt das der obengenannte Herrn nicht zu erreichen ist an diesen Tagen.

Nach einer Diskussion mit meiner Frau haben wir entschlossen das Angebot zu nehmen vorausgesetz erst nach dem geburt unseres Zweites kind die wir in Dezember 79 | Januar 1980 erwarten. Außerdem glaube ich das an Ihre hauptquartier in Deutschland (Berlin W) eine Einarbeitungszeit notwendig ist damit man genau wissen können wie alles funktionieren (im falle eine Anstellung)

Ich werde mich freuen wenn Sie mir zu Vorgespräch über diese und jene Sache nach Berlin einladen können.

Ich hoffe auf ihre baldige Antwort.

8.9. / 14 Uhr
Greffe

Hochachtungsvoll
J. O. Bereola

Gossner Mission

Ich werde mich freuen wenn Sie mir zu Verfügung über diese und jene Sache nach Berlin einladen können.

Ich hoffe auf ihre baldige Antwort.

Hochachtungsvoll
J. O. Bensel

Gossner Mission

Herrn
Josiah Olujimi Bereola
Stiftstraße 14

6000 Frankfurt/M. 1

Berlin, den 21.8.1979

Sehr geehrter Herr Bereola!

Bezugnehmend auf unser Telephongespräch am 20.8.1979 schicke ich Ihnen etwas Informationsmaterial über das Gwembe South Development Project zu, in dem die Gossner Mission mit 6 Fachkräften mitarbeitet.

Wir suchen einen Bauingenieur für folgende Aufgaben:

- Betreuung der Gwembe-South Builders (Bau-Genossenschaft mit ca. 60 Mitarbeitern); dazu gehören: Bauaufsicht, Aufstellen und Abgabe von Angeboten, Kalkulation, Überprüfung der Buchführung, Materialbeschaffung.

- Beaufsichtigung eines Bewässerungssystems

- Mitarbeit in einem Arbeitsprogramm für Bauern, die vorwiegend im Straßenbau eingesetzt werden zur Verbesserung der Infrastruktur.

Wir erwarten Flexibilität, Kooperationsbereitschaft mit den anderen Teammitgliedern, Einfühlungsvermögen für die einheimische Bevölkerung und eine Motivation, die den Grundgedanken der "Hilfe zur Selbsthilfe" bejaht.

Da wir eine evangelische Missionsgesellschaft sind, können wir nicht verschweigen, daß wir aus christlicher Verantwortung unsere Arbeit verstehen. Von unseren Mitarbeitern erhoffen wir eine Zugehörigkeit zur Kirche, auf jeden Fall eine Loyalität gegenüber dem Christentum.

Mit freundlichen Grüßen

Gossner Mission

E. Mische

Anlagen:
Jahresbericht Gossner Service Team 1978
Faltblatt Gwembe South Dev. Project
in Zambia

Gossner Mission

Herrn
Axel Bösselmann
Trinity College
dept. statistics
Dublin

I r l a n d

Berlin, den 3o.1o.1979

Sehr geehrter Herr Bösselmann!

Besten Dank für Ihren letzten Brief vom 2o.1o.79. Ich möchte heute gleich darauf antworten, damit Sie für sich und Ihre Familie besser disponieren können.

Nach Ihrem Besuch in Berlin und den Gesprächen, die wir miteinander geführt hatten, waren wir nicht hundertprozentig überzeugt, daß Sie speziell für die Aufgabe in unserem Team der richtige Mann sind. Ihr Wissen und Ihre Kenntnisse der Probleme der Dritten Welt waren zweifellos bestechend, auch Ihre Sinsibilität für die Aufgaben. Aber wir fragten uns natürlich, wie werden Sie im Team sein, wie wird es sein, wenn konzeptionell vielleicht unterschiedliche Auffassung zur Diskussion stehen werden. Gerade bei dieser Frage wichen Sie für uns interessanterweise aus.

Dann erhielten wir das DÜ-Schreiben, so daß ich ziemlich sicher bin, daß wir, wenn Sie weiterhin an einer Mitarbeit im Gwmmetal interessiert sind, im Team eine erhebliche Debatte haben werden. Das wird für Sie und Ihre Familie ganz bestimmt einen fast ungewissen Schwebezustand für die nächste Zeit bringen. Ob Sie das wollen, müssen Sie entscheiden. Ich kann Ihnen zur Zeit keine feste Zusage machen, ja, ich werde auch weiterhin verpflichtet sein, die anderen Bewerber ernsthaft zu prüfen und in Erwägung zu ziehen.

Darum möchte ich Ihnen fast empfehlen, daß Sie das Angebot der methodistischen Kirche annehmen.

In Erwartung Ihrer Antwort
verbleibe ich
mit den besten Grüßen
Ihr

Erhard Mische

Gossner Mission

Dublin, 20.10.79.

Eingegangen
25. OKT. 1979
Erledigt

Sehr geehrter Herr Misch,

Vor einigen Tagen erhielt ich eine Kopie des DÜ-Bescheides, den Herr Müller für Sie zusammengestellt hatte. Unmittelbar anschließend wurden wir telephonisch gebeten, nach London zu fliegen, um uns der Methodistenkonferenz vorzustellen. Der vorherige Schriftverkehr hatte sich sehr lange hingezogen, durch die postalischen Schwierigkeiten ergebnislos.

Zu unserer eigenen Überraschung wurden wir fast angestellt, obwohl den Methodisten keine Projekte z.Z. in Aussicht stehen. Wir siedeln am 4.11. nach Kingsmeath College, Selly Oaks, über. Wahrscheinlich schwebt der Methodist Overseas Division (25, Marylebone Rd, London W1) vor, uns parat zu haben, falls sich Möglichkeiten ergeben.

Ich gebe gern zu, daß es mir ganz angenehm ist, mit meiner Familie "nicht in der Luft" zu hängen, zumal ich hier fertig bin, und mich für missionsgetragene Arbeit vorbereiten zu können. Je nachdem, ist die meth. Kirche Ihnen gegenüber möglicherweise zu Austausch- oder Partnerschaftsverfahren bereit.

Alles Gute

Paul Bürkhardt

Gossner Mission

Dienste in Übersee

Gerokstrasse 17
7000 Stuttgart 1
Fed. Rep. of Germany
Rép. Féd. d'Allemagne

Telegramme: Überseedienste
Telefon: (0711) 247081

Arbeitsgemeinschaft evangelischer Kirchen in Deutschland e. V.
Comittee of Protestant Churches in Germany for Service Overseas
Comité des Eglises Protestantes Allemandes pour le Service Outre-Mer
Comité de las Iglesias Protestantes de Alemania para el Servicio en Ultramar

Gossner Mission
Handjerystr. 19-20

1000 Berlin 41

Referat A: Bildung, Landwirtschaft, Soziale Dienste

Stuttgart, den 29. September 1979
pm/BS

Eingegangen
2 NOV. 1979
Erledigt

Betreff: Bewerbung von Herrn Axel Bösselmann

Bezug: Ihr Schreiben vom 24.9.1979

Sehr geehrter Herr Mische,

Herr Hertel hat Ihr Schreiben vom 24.9., betreffend die Bewerbung von Herrn Axel Bosselmann um Mitarbeit bei Ihnen, an mich zur Beantwortung weitergegeben. Ich komme Ihrer Bitte gern nach, eine Stellungnahme zum entwicklungspolitischen Engagement von Herrn Bösselmann abzugeben, auch wenn ich ihn selbst, da ich erst 2 Monate bei DÜ arbeite, nicht kennengelernt habe. Die folgende Stellungnahme beruht also auf einem erneuten Studieum der Akten und aus Gesprächen mit einigen Mitarbeitern, die an der Auswahlentscheidung zu Herrn Bösselmann seinerzeit teilgenommen haben:

Sowohl von den Referenzen her als auch im Auswahlgespräch ist seinerzeit (Herr Bösselmann war im September 1978 bei uns zum Auswahlgespräch) die fachliche Eignung und die entwicklungspolitische und berufliche Erfahrung von Herrn Bösselmann nicht infrage gestellt worden. Positiv vermerkt wurden außerdem seine fundierten Sprachkenntnisse, seine Bereitschaft, sich über einen engeren fachlichen Horizont hinaus einsetzen zu lassen, und die bereits erworbenen Entwicklungshilfeerfahrungen in Bangladesh.

Die Ablehnungsgründe, die zu der negativen Entscheidung bezüglich einer Mitarbeit von Herrn Bösselmann bei uns geführt haben, knüpften deswegen auch an Spezifika unserer Projekte an und bedeuten keineswegs eine generelle negative Beurteilung der Persönlichkeit von Herrn Bösselmann. Wir haben es in der Zusammenarbeit mit Partnern in Übersee im allgemeinen mit solchen Institutionen und Personen zu tun, die ihre Bedürfnisse selbst formulieren und auf die wir auch eingehen wollen, mit denen sich Zusammenarbeit auf kooperativ-partnerschaftliche Grundlage vollzieht; und in einer solchen Zusammenarbeit spielt das pädagogische Moment, der Umgang mit Kooperanten aus den Ländern der Dritten Welt, ihrer Anleitung und weitere Ausbildung, eine ganz große und wichtige Rolle; hier geht es

Träger: Außenamt der EKD, Deutscher Evangelischer Missionsrat, das Diakonische Werk der EKD, Evangelische Freikirchen, Evangelische Studentengemeinde in Deutschland, Leiterkreis der Evangelischen Akademien, Arbeitsgemeinschaft der Evangelischen Jugend Deutschlands, Lutherischer Weltdienst – Deutscher Hauptausschuß
Bankverbindung: Südwestbank Stuttgart (BLZ 600 602 01) Kto. Nr. 20 640

Gossner Mission

darum, daß der Entwicklungshelfer selbst lernt und bereit ist, zurückzutreten und sich schließlich auch wieder "überflüssig" zu machen. Hier lagen die wesentlichen Bedenken zur Persönlichkeit von Herrn Bösselmann: Er ist unseren Mitarbeitern als jemand erschienen, der stark seine eigenen Interessen und Gesichtspunkte formuliert und durchsetzt, der eher auf die Rolle des Vorgesetzten als den partnerschaftlichen Mitarbeiters hindrängt, der vielleicht auch in ganz anders gearteten kulturellen und institutionellen Umständen Probleme der Anpassung und Einordnung hätte. Schwierigkeiten in der Kommunikation haben mehrere unserer Mitarbeiter auch in den Auswahlgesprächen empfunden. Dazu kommen, soweit ich das nachträglich beurteilen kann, Bedenken, wieweit Herr Bösselmann bereit sein würde, nach einigen Jahren der Tätigkeit in Übersee sich auch wieder in Deutschland einzuordnen und hier mitzuarbeiten. Und zum Konzept von DÜ gehört es, daß Fachkräfte, die über uns an Partner vermittelt werden, nicht auf Dauer hinausgehen, sondern nach ihrer Rückkehr bereit sind in der entwicklungspolitischen Bewußtseins- und Bildungsarbeit weiterhin aktiv mitarbeiten.

Ich hoffe, ich habe deutlich machen können, daß nicht alleine die Persönlichkeit von Herrn Bösselmann, sondern auch aus unserer entwicklungspolitischen Konzeption und Erfahrung erwachsende Beschränkung daran beteiligt gewesen sind, Herrn Bösselmann - nicht leichten Herzens - für eine Mitarbeit mit DÜ abzulehnen. Herrn Bösselmann übersende ich eine Durchschrift dieses Schreibens an die von Ihnen angegebene Adresse.

Mit freundlichen Grüßen,
Ihr

Peter Müller
Referatsleiter

Gossner Mission

Herrn Dipl.-Ing.
Helmut Hertel
Silcherstraße 9

7140 Ludwigsburg

Berlin, den 24.9.1979

Lieber Herr Hertel!

Mit einer Bitte wende ich mich an Sie, daß Sie diese Anfrage an das zuständige Referat in Ihrem Hause weiterleiten.

Herr Axel B ö s s e l m a n n , zur Zeit Dublin/Trinity College, hat sich bei uns beworben, um als Agraringenieur im Gwembe-South-Development-Project mitzuarbeiten. Wie er mitgeteilt hat, hatte er sich im vergangenen Jahr bei DÜ beworben, wurde jedoch ohne Angabe von Gründen nicht berücksichtigt. Wir sind natürlich sehr an Ihrer Beurteilung seiner Person interessiert, und Herr Bösselmann hat uns auch schriftlich die Erlaubnis gegeben, bei Ihnen nachzufragen. (Sh. Anlage)

Wir wären darum für eine schriftliche oder telefonische Antwort dankbar, da uns selbst einige Bedenken nach seiner persönlichen Vorstellung gekommen sind, ob er für uns der geeignete Mann ist. Vielen Dank.

Herzliche Grüße
Ihr

E. Mische

Anlage

Gossner Mission

Gossner Mission

Handjerystraße 19-20
1000 Berlin 41
Telefon (0 30) 8 51 30 61

Albert-Schweitzer-Straße 113/115
6500 Mainz
Telefon (0 61 31) 2 45 16 · 2 04 93

Berlin 23.9.79.

Axel Bösselmann
Trinity College Dublin, Irland
dept statistics

Hiermit gebe ich meine Zustimmung, daß die Gossner Mission sich bei Dienste in Übersee in Stuttgart über meine Bewerbung im Jahre 1978 erkundigt, unter der Bedingung, daß falls sich die Gossner Mission die ihr vorgetragenen Ablehnungsgründe der DÜ (s.o.) zu eigen macht, dies mir an obige Adresse umgehend mitgeteilt wird.

Axel Bösselmann

Berlin: Postscheckkonto Berlin West 520 50-100, BLZ 100 100 10 · Bankkonto Nr. 0407480700 Berliner Bank, BLZ 100 200 00
Mainz: Postscheckkonto Hannover 1083 05-308, BLZ 250 100 30 · Bankkonto Nr. 7522014 Mainzer Volksbank, BLZ 551 900 00

Dieses Papier ist umweltfreundlich und besonders billig

Gossner Mission

Mische

13. SEP. 1979

Axel Bösselmann
Trinity College
Dublin 2
dept statistics

, 5.9.79

Sehr geehrter Herr Mische!

Vielen Dank für Ihren Brief vom 29.8. Mein eigener Brief war vor meinem Anruf abgeschickt worden. Ich werde entweder am Freitag spät abend oder Samstag mittag (21./22.9.) in Berlin eintreffen, davon unterrichte ich Sie nach meiner Landung am Freitag unter entweder Büro- oder Privatanschluß, je nach Tageszeit. Im Laufe des Sonntags werde ich nach Witzenhausen fahren, auf dem Wege nach Frankfurt. Ich wäre Ihnen verbunden, wenn Sie mit mir Eisenbahn Zweiter Klasse von und nach Frankfurt Flughafen abrechnen könnten.

Bis demnächst

Axel Bösselmann

Gossner Mission

copy

Neue Telefonnummer
030/85 10 21

GOSSNER MISSION

1 Berlin 41 (Friedenau)
Handjerystraße 19-20
Fernsprecher: (030) · 851 30 61 · 851 69 33
Postscheckkonto: Berlin West 520 50-100
Bankkonto: Berliner Bank, BLZ 100 200 00
Kto.-Nr. 0407480700

Dekan Bachmann
3430 Witzenhausen 1
Am Brauhaus 7

Berlin, den 24.9.

Sehr geehrte Damen und Herren!

A. Bösselmann hat sich bei uns beworben, um für die Gossner Mission in einem ländlichen Entwicklungsprojekt in Süd-Zambia als Agraring. zu arbeiten.
Er hat Sie als Referenz angegeben. Wir wären Ihnen sehr dankbar, wenn Sie uns einige Auskunft über die Person von H. Bösselmann machen können, die selbstverständlich streng vertraulich behandelt werden:

1. zu seinen beruflichen Qualifikationen,
2. zu seiner Persönlichkeit, wie Sie seine Flexibilität einschätzen, sich in einer fremden Kultur und Lebensgewohnheit umzustellen und entsprechend einzufügen,
3. wie seine Kooperationsfähigkeit mit anderen Mitarbeitern ist,
4. und wie er in der Lage sein könnte, gerade auch mit den einheimischen Menschen in Zambia gut zusammenzuarbeiten,
5. schließlich zu seiner möglichen kirchlichen Einstellung.

Für Ihre Mühe danken wir Ihnen.

Mit freundlichen Grüßen

Gossner Mission

E. Mische

N.S. H. Bösselm. hat uns mitgeteilt daß er Ihre Kirch. vorstand angehört auch wenn es wegen seines Studiums z.Zt. nicht in Wirkl. Abt.

Gossner Mission

Herrn
Axel Bösselmann
Trinity College
Dept. Statistics
Dublin 2

Berlin, den 29.8.1979

Sehr geehrter Herr Bösselmann!

Besten Dank für Ihren Brief vom 22.8.79. Ich möchte ihn gleich beantworten und den Termin für unser Treffen klären. Als Sie hier anriefen, hatten wir Samstag, d. 22.9. abgemacht. In Ihrem Schreiben erwähnen Sie nun den 26.9. An diesem Tag habe ich jedoch eine Abendveranstaltung in der Nähe von Mainz, wo ich anschließend noch bis zum 29.9. bleiben werde.
Mein Vorschlag ist nun, daß Sie entweder vor Ihrem Seminar, also am 22. u. 23.9. nach Berlin kommen oder nur am 23.9. oder aber am 25.9. Für Unterkunft werden wir hier in Berlin sorgen.

Ich wäre Ihnen dankbar, wenn Sie mich diesbezüglich schnellst möglich benachrichtigen können.

Mit freundlichen Grüßen
Ihr

E. Mische

Gossner Mission

Trinity College 22.8.79
Dublin-2
dept statistics,
Axel Bösselmann

Eingegangen
28. AUG. 1979
Erledigt

Sehr geehrter Herr Miscle,

vielen Dank für

Ihren Brief vom 8.8.79. Die Post normalisiert sich zur Zeit.

Ich gedachte, am 24.9. zu einem Ein-Tage-Seminar in Witzenhausen an meiner alten Alma Mater zu sein, so daß ich anschließend nach Berlin kommen könnte, sofern Sie mich unterbringen können.

Meine Frau ist verhindert, da ihr Neffe und ihre Schwester/Schwager aus Australien hier am 25.9. eintreffen, zwecks Kindtaufe und Verwandtenbesuch, nach mehreren Jahren.

Es gibt hier bzw. in Großbritannien erstklassige kirchliche bzw gemeinnützig christliche Vorbereitungskurse gerade für Zambia.

- Damit wäre uns eine kostspielige und zeitraubende doppelte Haushaltsauflösung erspart.
- Meine Frau versteht nicht genügend Deutsch, einem Kurs zu folgen.
- Gerade auf Zambia ist die irische bzw. englische jeweilige Entwicklungshilfe besonders gut eingearbeitet.

Mehrere meiner Kollegen waren selbst in Zambia.

Ich lasse Ihnen gerne Lehrpläne, Kosten, etc zukommen.

Ich nehme an, daß wir uns am 26.9. spätestens sehen werden.

Mit freundlichen Grüßen

Axel Bösselmann

PS Umweltfreundliches Papier gibt es hier noch nicht!

Gossner Mission

Herrn
Axel Bösselmann
Trinity College
Dept. Statistics
Dublin / Irland

Berlin, den 8.8.79

Sehr geehrter Herr Bösselmann!

Aus dem Urlaub zurückgekehrt, fand ich Ihre beiden Briefe vom 4.7. und 2o.7. vor, für die ich Ihnen herzlich danken möchte. Es freut mich, daß Sie Interesse an unserer Arbeit in Zambia bekunden und in Erwägung ziehen, eventuell in das Projekt mit einzusteigen.

Unser Agraringenieur wird nach Vertragsschluß (3-Jahresverträge) im Frühjahr 198o in die Bundesrepublik wieder zurückkehren. Es ist allerdings wünschenswert, wenn sein Nachfolger schon früher in Zambia eintrifft, damit er sich gründlich einarbeiten kann. In der Regel beginnt in der Bundesrepublik einige Monate vor der Ausreise eine Vorbereitungszeit, in der Vorbereitungskurse, die von DÜ durchgeführt werden, zu besuchen sind.

Ich wäre Ihnen sehr dankbar, wenn Sie uns, sofern Sie ernsthaft an einer Zusammenarbeit interessiert sind, Ende September d.J. in Berlin aufsuchen, damit wir uns persönlich kennenlernen. Wenn Sie mir Ihre Kontaktadresse geben, könnte ich Sie auch besuchen.

Im Oktober 198o wird zusätzlich eine landwirtschaftliche Beratungsstelle frei, die speziell für Genossenschaftswesen, Vermarktung etc. gedacht ist. So könnte zweifellos auch Ihre Frau eine Betätigung finden. Die Aufgabeneinteilung wird im Team jedoch nicht nach einem starren Prinzip gehandhabt, sondern sehr flexibel geregelt und richtet sich nach den Anforderungen und Möglichkeiten.

Es hat sich herausgestellt, daß diese Verfahrensweise eine besondere Stärke des Projektes im Gwembetal ist. Da z.Zt. die Zusammenarbeit im Team sehr gut ist, wirkt sich diese Flexibilität äußerst positiv aus. Grob umrissen sind die Aufgaben eines Tropenlandwirtes bzw. Agraringenieurs:

Beratung der Bauern eines Bewässungssystems,
Bodenuntersuchungen,
Erforschung neuer Getreide- und Gemüsesorten für das Gwembetal,
Diversifikation in der Landwirtschaft,
Unterstützung des Zambianisierungs- und Self-Reliance-Programms.

Geplant ist die Ausweitung des Bewässerungssystems und der Ausbau einer eigenen Vermarktungs- und Verkaufsorganisation. Dies sind in wenigen Sätzen einige Anhaltspunkte, für Arbeitsfelder, die Sie betreffen könnten.

Gossner Mission

Ich würde mich freuen, wieder von Ihnen zu hören. Sollten Sie daran interessiert sein, schicken wir Ihnen die Jahresberichte 1978 der einzelnen Teammitglieder zu, die demnächst gedruckt werden.

Ich wäre Ihnen auch dankbar, wenn Sie mir dann die Adresse von Herrn Sup. Bachmann schreiben können.

Mit freundlichen Grüßen

Gossner Mission

E. Mische

Gossner Mission

Sehr geehrter Herr Mirthe

Leetberg 4.7.79.

Ihr Brief wartet sicher auf mich in Dublin oder unterwegs; der irische Poststreik hat zwar offiziell aufgehört, aber das sagt nichts. Ich habe mit Frau Ebert von der Missionsgemeinschaft in Hamburg endlich sprechen können, die mir ebenfalls zu abraten versucht hat.

Das nur per Telephon in Familie besprochene Projekt sagt mir sehr zu, da ich sowohl für Beratungen als auch für Grossenschaftsarbeiten qualifiziert bin. Ich habe mit Oxfam mehrere Jahre Erfahrung in Bangladesh, einer Ing. grad. als Programmleiter und im Laufe des Jahres meinen Magister in sanitären Umweltsystemen für Entwicklungsländern. Meine australische Frau ist ebenfalls als Landwirt ausgebildet in Indien eingesetzt gewesen.

Ihr Arbeitsbeginn am 1.4.1980 läßt sicher sehr viel Zeit für Berufungsvorbereitungen entweder in Großbritannien / Irland oder bei Ihnen in Berlin.

Ich bin Ende September einige Tage im Rheinland, natürlich jedoch ohne Familie. Mein Magister wird mir offiziell erst Dezember verliehen, obwohl ich die Arbeit im September eingereicht sein muß.

Ich bin im Kirchenvorstand der Gemeinde Wittenhausen/Werra der Landeskirche Kurhessen-Waldeck, z.Z. "beurlaubt." Christen sind in Indien seit unserer Zeit und durch die Ereignisse auf dem Subkontinent.

Auf Trinity College Dublin bin ich in der Abteilung Statistik, so daß mich Briefe normalerweise unter dept. statistics, Trinity College, Dublin erreichen würden.

→

Gossner Mission

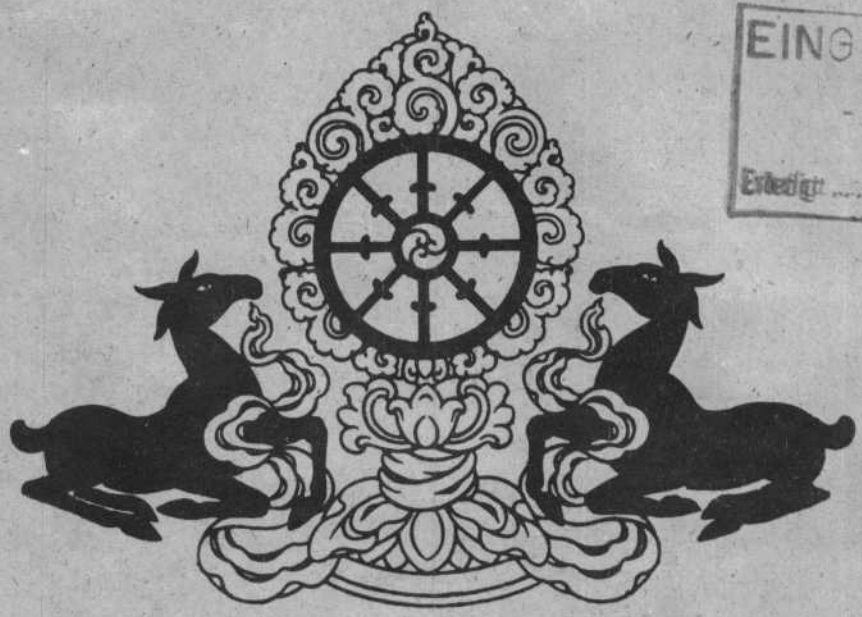

EINGEGANGEN
- 5. JULI 1979
Erledigt: .....

Aufgrund eines Familienfestes bin ich noch bis 7.7.79 bei meinem Bruder in 2341 Geltring/Hebroitz, falls Sie mich unvermittelt anschreiben wollen.

Mit freundlichen Grüßen

Paul Börsmann

UWS – Berlin
Gossner Mission

Sehr geehrter Herr Mische

Dublin, 20.7.79.

Ich beziehe mich erneut auf Ihren Brief vom 21.6.79., den ich nun vorliegen habe. Der Poststreik ist nun zu Ende.

Dem Brief, den ich von Gelting/Angeln abgeschickt hatte, ist hinzuzufuegen, dass ich ab Ende Oktober zur Verfuegeung stehe.

Ich stehe mit anderen Gesellschaften in Verbindung und moechte daher Verwicklungem mit den Referenzen vermeiden. Koennten Sie sich vorab an Supt. Bachmann in Witzenhausen wenden?

Die Zaire-Mission hat ebenfalls Interesse bekundet.

Ich hoffe, von Ihnen zu hoeren

Mit freundlichen Gruessen

Axel Hoesselmann

Eingegangen
26. JULI 1979

Gossner Mission

21.6.1979

Herrn
Axel Bösselmann
c/o Mr.T.Kennedy
Holborn Hotel
Holborn Road
Holyhead/Angelsea
Wales
Great Britain

Sehr geehrter Herr Bösselmann!

Durch eine Mitteilung des Evangelischen Missionswerkes haben wir erfahren, daß Sie sehr daran interessiert sind, als Tropenlandwirt in Übersee zu arbeiten.

Wir suchen zum 1.April 198o dringend einen Tropenlandwirt für unsere Arbeit im Gwembetal, Südzambia.

Die Gossner Mission beteiligt sich seit 197o an einem ländlichen Entwicklungsprojekt der zambianischen Regierung unter den Tongas im Gwembetal. Schwerpunkte sind 2 Bewässerungssysteme, landwirtschaftliche Beratung, angepasste Technologie, Kreditgenossenschaftswesen, Unterstützung von Selbsthilfeorganisationen. In unserem Team arbeiten z.Z. drei Agraringenieure, ein Wasserbauingenieur, ein Theologe, ein Elektroingenieur und zwei Krankenschwestern als Halbtagsmitarbeiterinnen.

Sollten Sie an einer Mitarbeit interessiert sein, würden wir gerne uns ausführlich mit Ihnen unterhalten und Ihnen die entsprechenden Informationen zukommen lassen.

Unser Projekt ist ein Verbundprojekt, das z.Z. etwa 1o.ooo Menschen erreicht.

Mit freundlichen Grüßen

E.Mischke

Ø Evangelisches Missionswerk, Hamburg

Gossner Mission

E v a n g e l i s c h e s M i s s i o n s w e r k
im Bereich der Bundesrepublik Deutschland und Berlin West e.V.
Mittelweg 143, 2000 Hamburg 13, Tel.: 040/44 14 11

- Geschäftsstelle -

EINGEGANGEN
21. JUNI 1979
Erledigt .....

19. Juni 1979
Az.: 4610/E/Gh

An
die Mitglieder und Vereinbarungspartner
des Evangelischen Missionswerkes

Dienste in Übersee, Arbeitsgemeinschaft evangelischer Kirchen e.V., Stuttgart

Lutheran Coordination Service (Tansania), Hamburg

Betr.: Personalangebot

Sehr verehrte Damen und Herren!

Mehrere Menschen haben sich in letzter Zeit gemeldet, die sich für eine Tätigkeit im Bereich von Kirche und Mission interessieren. Einige von ihnen haben Berufserfahrung, zwei auch im Ausland. Wir möchten Ihnen im Interesse einer frühzeitigen Kontaktaufnahme und dadurch möglichen längerfristigen Begleitung, Beratung und Zurüstung künftiger missionarischer Mitarbeiter daneben auch diejenigen Anwärter vorstellen, die soeben ihre Ausbildung abgeschlossen haben, in der Ausbildung stehen oder einer Ausbildung entgegengehen.

In allen Fällen bitten wir, ggf. direkt den Kontakt aufzunehmen und uns durch Briefdurchschriften oder auf andere Weise auf dem Laufenden zu halten. Letzteres ist uns wichtig, um bei jedem Bewerber bzw. um Auskunft Bittenden zu wissen, ob ein entsprechender Personalbedarf besteht bzw. evtl. bestehen wird und der nötige Kontakt hergestellt ist oder ob noch Fragen unbeantwortet bleiben.

Alle nachstehend Genannten erhalten Nachricht, daß ihre Anfrage durch diesen Rundbrief weitergegeben worden ist, und die erforderliche Information über das EMW.

1. Herr Rudolf Welter — K a u f m a n n
   Eichenknick 11 — P r o j e k t b e r a t e r
   2056 Glinde

   geb. 30.9.47, verheiratet (Ehefrau Sozialpädagogin)

   Wirtschaftsgymnasium, Dipl.-Kfm., Dipl.-Handelslehrer, Studienrat z.A.

Gossner Mission

1972/73 als Referendar an berufsbildenden Schulen in Hamburg

1974-79 über DÜ in Papua New Guinea (1974-76 Kfm. Ausbildungsleiter, 1976-79 Projektberater in regionaler Entwicklungsplanung)

sucht baldmöglichst Tätigkeit, vorzugsweise in Deutschland, Ausland aber nicht ausgeschlossen.

Sprachen: Englisch gut, Spanisch Grundkenntnisse.

2. Herr Axel Bösselmann T r o p e n l a n d w i r t
c/o Mr. T. Kennedy
Holborn Hotel
Holborn Road
Holyhead/Anglesea
Wales, Great Britain

geb. 12.8.49, ev.-luth., verh. (Ehefrau Australierin, Diplom in landw. Betriebswirtschaft), 1 Sohn

Abitur, landw. Studium 1969-72 Schleswig-Holstein, Studium Tropenlandwirtschaft und Umweltsicherung 1976-78 Witzenhausen, Ing.grad. Ges.-Hochschule Kassel (Thema: Indian Rural Development), z.Zt. Studienprojekt+ Trinity College Dublin 1.10.78-30.9.79, Mag.-Titel Nov. 1979. +) Ausarbeitung eines Programms zur sanitären Umweltsicherung in Entwicklungsländern

Praxis: Schleswig-Holstein 1969-72, Studienurlaub Indien/Ostpakistan 1970-72, Entwicklungshelfer Bangladesh 1973-76 (ländl. Oberschule/Genossenschaftsprojekt/Volksgesundheitszentrum/Waisenhaus/kurze Beratungs- und Unterrichtstätigkeit

Mitglied Kirchenvorstand Witzenhausen/Kurhessen-Waldeck seit 1977, derzeitige Gemeinde: Dublin Central Mission (method.); Mitglied Verband der Tropenlandwirte, Verband der Umweltingenieure etc.

Ab Ende September verfügbar.

3. Frau Doris Grimm L e h r e r i n
Hauptstr. 8
5419 Puderbach

z.Zt. im Schuldienst in der Hauptschule Puderbach (Krs. Neuwied), Fächer Geographie und Englisch.

Interessiert, im kirchlichen Auslandsschuldienst (bevorzugt Nordamerika) eingesetzt zu werden (an einer kirchlichen Schule bzw. durch eine kirchliche Stelle vermittelt).

4. Frau Angelika Weber L e h r e r i n
Friedenstr. 9
6300 Lahn-Dutenhofen

- 3 -

Gossner Mission

Vor kurzem 2. Staatsexamen, Fächer Deutsch und Französisch sowie Ev. Theologie (Erweiterungsprüfung) für das Lehramt an Haupt- und Realschulen.

Nicht zuletzt durch 6-jährige Aktivität in der heimischen CVJM-Jugendarbeit motiviert, die Erfahrungen in der Arbeit der Weltmission erweitern zu wollen.

Erbittet Information über Einsatzmöglichkeiten als Lehrerin in der Weltmission. (Evtl. ist diese Anfrage direkt an mehrere Missionswerke ergangen.)

5. Frau Monika Kudszus — J u g e n d- und H e i m-
Heidenheimer Straße 31 — e r z i e h e r i n
7920 Heidenheim 5

Alter: 26 Jahre

Z.Zt. in einem Jugendhaus in Heidenheim tätig.

Interessiert an einer Arbeit im Ausland, erbittet allg. Informationsmaterial über die Arbeit des EMW und seiner Mitglieder und Auskunft über die persönlichen Einsatzmöglichkeiten. Frau Kudszus würde umgehend weitere Unterlagen senden.

6. Fräulein Susanne Weinmann — B e r u f s z i e l:
Mühlweg 186 — E r z i e h e r i n
7119 Dörzbach/Hohebach

geb. 1.7.63, ev.

22.7.79 Abschluß Realschule Krautheim/Jagst

Berufsziel: Erzieherin. Geplanter Ausbildungsgang: Praktikum Kindergarten Hohebach, 2 J. Fachschule für Sozialpädagogik, Abschlußpraktikum, Abschluß 1983.

Bes. Kenntnisse: Französisch, Schreibmaschine, Rotkreuzkursus.

Wunsch, 1983 nach der Ausbildung sich als Entwicklungshelferin zu engagieren. Bewerbung auf Empfehlung von Pfr. Heinz Raulf, Religionslehrer und Pfarrer von Bobstadt (Boxberg). Lebenslauf und Schulzeugnis liegt hier vor, Auschlußzeugnis reicht Frl. Weinmann nach.

Schließlich möchte ich eine grundsätzliche Angelegenheit klären, die durch eine konkrete Anfrage - durch Herrn Pfarrer Jung, Kurhessen-Waldeck, uns weitergegeben - an uns herankam. Es geht um die Frage nach Möglichkeiten, in den überseeischen Partnerkirchen Wehrersatzdienst zu leisten. Uns ist bekannt, daß

a) der Dienst als Entwicklungshelfer über DÜ, DED, AGEH, Eirene und Weltfriedensdienst (mindestens 2 Jahre) als Ersatzdienst für den Zivildienst anerkannt wird (§ 14a Zivildienstgesetz in Verbindung

Gossner Mission

mit § 2 Entwicklungshelfergesetz),

b) es grundsätzlich möglich ist, bei Kirchen, Missionswerken und -gesellschaften in der Bundesrepublik Wehrersatzdienst zu leisten, die Voraussetzung der offiziellen Anerkennung jedoch erfüllt sein muß.

Wir wären dankbar, von Ihnen zu erfahren,

(1) welche unserer Mitglieder und Vereinbarungspartner für die Aufnahme von Wehrersatzdienstleistenden anerkannt sind;

(2) welche Erfahrungen Sie haben im Blick auf eine Ableistung des Wehrersatzdienstes in Ihren Partnerkirchen.

Von Herrn Igney weiß ich, daß in einem solchen Fall eines der anerkannten Missionswerke einen Antrag auf Genehmigung im Rahmen der Zivildienstüberwachung stellen müßte. In diesem Fall würde die Einsatzstelle in Übersee als "Auslandsfiliale" der anerkannten hiesigen Einrichtung deklariert werden. Hier sehen wir die Schwierigkeit, weil dies dem heutigen Verständnis unseres Verhältnisses zu unseren Partnerkirchen widerspräche.

Ihre Antworten werden uns helfen, auf die vorliegende Anfrage und in künftigen Fällen genaue Auskunft geben zu können.

Mit freundlichen Grüßen

Ihre

Ursula Ebert

Gossner Mission

CD

Gossner
Mission

Herrn
Dieter von Dreusche
Ober dem Hof 31

5o9o Leverkusen 31

Berlin, den 21.11.1983

Lieber Herr von Dreusche!

Sie erhalten von mir einen Zwischenbescheid, weil Herr Mische zur Zeit nicht in Berlin ist.
Leider sind bisher nur zwei Referenzen eingegangen, von Herrn Eckes und Herrn Deneke. Wir bitten darum um Ihr Verständnis, daß wir Sie auch diesmal nicht zum Vorstellungs- und Auswahlkurs von "Dienste in Übersee" schicken, sondern erst noch den Eingang der dritten Referenz abwarten. Darüber hinaus prüfen wir zur Zeit noch einige Bewerbungen, die ebenfalls so vielversprechend sind, daß wir uns ausführlich mit ihnen befassen müssen.

Sie werden von uns hören, sobald wir in der Angelegenheit weitergekommen sind.

Mit freundlichen Grüßen,
Ihr

Siegwart Kriebel

Gossner Mission

Dieter von Dreusche
Ober dem Hof 31
Postfach 31o1o7
5o9 Leverkusen 31

17.11.83

EINGEGANGEN
22. NOV. 2003
Erledigt .....

An die
Gossner Mission
Handjerystrasse 19-2o
1ooo B e r l i n 41

Sehr geehrte Damen und Herren!

Entsprechend unserer Televonvereinbarung in der 43.Woche habe ich umgehend Herrn Pfarrer Nicolei angesprochen und um die baldige Zusendung der Referenz gebeten. Herrn RA Weber erreichte ich nicht selbst, sondern informierte sein Büro.
In einer Nachfrage hat mich das Gemeindebüro wissen lassen, die Ausfertigung der Referenz sei vorgenommen worden, während Herr Weber erklärte, die von Ihnen gestellten Fragen nicht mehr zu haben. Er sei zum fraglichen Zeitpunkt verreist gewesen und habe die Fragen nicht binnen der von Ihnen gestellten Frist beantworten können und Ihre Anfrage anschließend vernichtet.

Inzwischen ist es für mich nötig, dem Arbeitsamt den Nachweis zu führen, daß ich in Ihre Dienste treten soll. Über Ihre zusage und das , was auf mich an Tests und Prüfungen zukommt, habe ich nichts in der Hand.
Ebenfalls habe ich die Reisekostenabrechnung vom 6.1o.83 noch nicht *) erhalten.

Mit freundlichen Grüßen

*) Reisekostenabrechnung ist bisher nicht eingegangen. An Dreusche bereits eine Abrechnung geschickt.
Fr. 22.11.

Gossner Mission

DIPL. ING. H. ECKES
BERATENDER INGENIEUR FÜR BAUWESEN
INGENIEURBÜRO FÜR BAUSTATIK

EINGEGANGEN
20. OKT. 1983
Erledigt .....

Gossner Mission
Handjerystraße 19 - 20

1 Berlin 41

17. Oktober 1983

Betr.: Referenz für Herrn Dieter von Dreusche, Leverkusen 1
Ihr Schreiben vom 10. Oktober 1983

Sehr geehrte Damen und Herren,

wie ich heute telefonisch von Frau L i s c h e w s k y erfahren habe wird meine durch Urlaub verspätete Antwort auf Ihr Schreiben vom 10. Okt. 1983 noch rechtzeitig bei Ihnen eingehen.

Über einen Zeitraum von 10 Jahren haben wir als Ingenieurbüro für Baustatik mit Herrn von Dreusche als selbständigem Architekten zusammengearbeitet. In dieser Zeit habe ich Herrn von Dreusche als einen sehr praxisbezogenen Architekten kennengelernt. Seine langjährig bei ihm beschäftigten Mitarbeiter wurden sehr konstruktiv und selbstbewußt geleitet. Herr von Dreusche hat sich auch im politischen Leben der Gemeinde Bergisch-Neukirchen durch sein persönliches Angagement hervorgetan.

Herr von Dreusche wirkte auf mich immer sehr aufgeschlossen, an vielen Dingen interessiert und auch engagiert, wenn es darum ging, eine Meinung zu vertreten.

Mit freundlichen Grüßen!

H. Eckes.

MÜLHEIMER STR. 88, 5090 LEVERKUSEN 1, RUF (0214) 57445, SPARKASSE DER STADT LEVERKUSEN-WALDSIEDLUNG, KTO.-NR. 105000939, (BLZ 37551440)
COMMERZBANK AG LEVERKUSEN, KTO.-NR. 4472759, (BLZ 37541453), BANK FÜR GEMEINWIRTSCHAFT LEVERKUSEN, KTO.- NR. 1200090900, (BLZ 37511411)

Gossner Mission

Dr.h.c. Diether Deneke, MdL
Staatsminister a.D.

5330 Königswinter 1
Flurgasse 32

9. 11. 1983

Gossner Mission
z. H. Herrn Lischewsky
Handjerystr. 19-2o

1ooo Berlin 41 (Friedenau)

EINGEGANGEN
15. NOV. 1983
Erledigt .....

Sehr geehrter HerrLischewsky,

mit Dank bestätige ich Ihr Schreiben vom 1o.1o., mit dem Sie mich um Auskunft über Herrn Dieter von Dreusche bitten.

Ich bitte um Entschuldigung, daß ich wegen einiger Auslandsaufenthalte und zahlreicher Termin-Verpflichtungen erst heute dazu komme, Ihren Brief zu beantworten; bei einem telefonischen Kontakt war meinem Büro mitgeteilt worden, daß Sie auch noch bis zum 2o.11. auf eine Reaktion Wert legen würden.

Herr v. Dreusche hat mich über seine Bewerbung bei Ihnen nicht informiert; richtig ist wohl, daß ich in der Zeit unserer Zusammenarbeit Herrn v. Dreusche angeboten habe, ihm ggf. bei der Suche nach einer neuen Tätigkeit, behilflich zu sein.

Während meiner Amtszeit als Landwirtschaftsminister in Nordrhein-Westfalen hatte ich mich bemüht, den Gedanken einer bürgerschaftlichen Selbsthilfe der Freizeit-Reiter zu unterstützen die dahin ging, durch freiwillige Abgaben Reitwege im freien Gelände zu unterhalten und Schäden zu beseitigen. Herr v. Dreusche hat sich für diesen Gedanken der freiwilligen Selbsthilfe - genannt "Solidarkasse" - mit großem Engagement eingesetzt, dabei sehr viel Eigeninitiative entwickelt und - gemessen an der leider geringen Unterstützung der etablierten Reiterverbände - auch beachtliche Erfolge erzielt. Wenn die "Solidarkasse" dennoch schließlich nicht zum Erfolg führte, so lag dies ausschließlich an dem Widerstand derer, die sehr andere Vorstellungen vom Reiten als Leistungssport hatten. Hinzu kam, daß der Gesetzgeber schließlich eine Regelung traf, bei der es keinen Raum mehr gab für eine freiwillige Selbsthilfe - Einrichtung.

Ich bitte um Verständnis, wenn ich Ihre präzise gestellten Fragen nicht ebenso präzise beantworten kann; denn ich habe Herrn v. Dreusche und sein Wirken nur in der beschriebenen Funktion kennen gelernt bzw. beobachten können.

Präsident: Verband Deutscher Naturparke e.V. - Ballindamm 2-3 - 2000 Hamburg 1 - Tel.: 040/338421-336023
Vorsitzender: Schutzgemeinschaft Deutscher Wald, Landesverband NRW - Külshammerweg 40 - 4300 Essen 1 - Tel.: 0201 / 791018 - 19

Gossner Mission

Auch meine Kenntnis von Sambia beschränkt sich auf einen schon etwa 1o Jahren zurückliegenden nicht sehr langen Aufenthalt. Zur eigentlichen beruflichen Qualifikation des Herrn v. Dreusche habe ich überhaupt kein Urteil.

Unter diesen Vorbehalten möchte ich meinen, daß die Art und Weise wie Herr v. Dreusche vom Grundsatz her - Freiwilligkeit vor Zwang, Selbsthilfe vor Reglementierung, eigenes Beispiel als Motivation - die übernommenen Aufgaben anpackt, zu einem Entwicklungsprojekt paßt in einem Lande, das sich um den genossenschaftlichen Weg bemüht ohne dabei kommunistische Rezepte zu akzeptieren.

Fleiß, persönliche Einsatzbereitschaft verbunden mit einem einerseits bestimmten Auftreten andererseits mit persönlicher Bescheidenheit, lassen ihn für eine Aufgabe im Rahmen der Entwicklungshilfe geeignet erscheinen. Besonders dürfte ihm dabei zugute kommen, daß - nach meinem Eindruck - Herr v. Dreusch durchaus in der Lage ist, auf sich selbst gestellt, übernommene Aufgaben durchzusetzen und dabei ggf. auch zu improvisieren, so wie dies nach meiner Kenntnis von Entwicklungs-Maßnahmen in verschiedenen ostafrikanischen Ländern notwendig ist.

Mit Dank und Hinweis auf die zugesicherte Vertraulichkeit

verbleibe ich

mit freundlichen Grüßen

Amke

Gossner Mission

Christoph Nicolai

5090 Leverkusen 31, den 25.10.83
Burscheider Str. 69

EINGEGANGEN
28. OKT. 1983
Erledigt

Betr.: Referenz für Herrn Dieter von Dreusche
Ihr Schreiben vom 10.10.83

Sehr geehrte Frau Lischewsky!

Aus einem Gespräch mit dem Bruder des Herrn von Dreusche, das ich in diesen Tagen führte, ging hervor, daß jener seine Bewerbung bei der Gossner Mission zurückgezogen hat.
Damit erübrigt sich die Referenz.

Mit freundlichen Grüßen

Ch. Nicolai, Pr.

Gossner Mission

KARL-FRIEDRICH WEBER · NORBERT W. JOHANN
RECHTSANWÄLTE

RECHTSANWÄLTE KARL-FRIEDRICH WEBER UND NORBERT W. JOHANN
BIRKENBERGSTRASSE 1 · 5090 LEVERKUSEN 3

Gossner Mission
Handjerystr. 19-2o
1ooo Berlin 41 (Friedenau)

EINGEGANGEN
13. OKT. 1983
Erledigt .....

5090 LEVERKUSEN-OPLADEN
BIRKENBERGSTRASSE 1
TELEFON (0 21 71) 16 11

STADTSPARKASSE LEVERKUSEN
(BLZ 375 514 40) 118 326 164

VOLKSBANK RHEIN-WUPPER EG
(BLZ 375 600 92) 1639

POSTSCHECKKONTO KÖLN 2419 35-502

DATUM: 12. Okt. 1983

N

Betr.: Referenz für Herrn Dieter von Dreusche, Leverkusen 31

Sehr geehrte Herren!

In obiger Angelegenheit bestätigen wir den Eingang Ihres Eilbriefes vom 1o.1o.1983.

Wir müssen Ihnen zu unserem Bedauern mitteilen, daß sich Herr Rechtsanwalt Weber bis zum 2o.1o.1983 in Urlaub befindet und Ihr Schreiben daher innerhalb der von Ihnen erbetenen Frist nicht beantwortet werden kann.

Hochachtungsvoll

(Johann)
Rechtsanwalt

Gossner Mission

Herrn Ratsherr
RA K.F. Weber
Rennbaumstraße

5090 Leverkusen

Berlin, den 10.10.1983

Betr.: Referenz für Herrn Dieter von Dreusche, Leverkusen 31

Sehr geehrter Herr Weber!

Herr Dieter von Dreusche hat sich bei uns beworben, um für die Gossner Mission in einem ländlichen Entwicklungsprojekt in Süd-Zambia als Bauingenieur zu arbeiten.

Er hat Sie als Referenz angegeben. Wir wären Ihnen sehr dankbar, wenn Sie uns einige Auskunft über die Person von Herrn von Dreusche geben können, die wir selbstverständlich streng vertraulich behandeln werden:

1. zu seinen beruflichen Qualifikationen,

2. zu seiner Persönlichkeit, wie Sie seine Flexibilität einschätzen, sich in einer fremden Kultur und Lebensgewohnheit umzustellen und entsprechend einzufügen,

3. wie seine Kooperationsfähigkeit mit anderen Mitarbeitern ist und seine Fähigkeit, sich auf andere Menschen einstellen zu können,

4. und wie er in der Lage sein könnte, gerade auch mit den einheimischen Menschen in Zambia gut zusammenzuarbeiten.

Für Ihre Mühe danken wir Ihnen im voraus. Wir wären Ihnen besonders dankbar, wenn Sie uns möglichst bald eine Antwort zukommen lassen können, da bis zum 31. Oktober alle Unterlagen vorliegen müssen.

Mit freundlichen Grüßen
i.A. Lischewsky, Sekr.

Gossner Mission

Herrn Staatsminister a.D.
Dr. Deneke, MdL
Landtag

4ooo Düsseldorf

Berlin, den 1o.1o.1983

Betr.: Referenz für Herrn Dieter von Dreusche, Ober dem Hof 31, Leverkusen 31

Sehr geehrter Herr Dr. Deneke!

HerrnDieter von Dreusche hat sich bei uns beworben, um für die Gossner Mission in einem ländlichen Entwicklungsprojekt in Süd-Zambia als Bauingenieur zu arbeiten.

Er hat Sie als Referenz angegeben. Wir wären Ihnen sehr dankbar, wenn Sie uns einige Auskunft über seine Personeneben können, die wir selbstverständlich streng vertraulich behandeln werden:

1. zu seinen beruflichen Qualifikationen,

2. zu seiner Persönlichkeit, wie Sie seine Flexibilität einschätzen, sich in einer fremden Kultur und Lebensgewohnheit umzustellen und entsprechend einzufügen,

3. wie seine Kooperationsfähigkeit mit anderen Mitarbeitern ist und seine Fähigkeit, sich auf andere Menschen einstellen zu können,

4. und wie er in der Lage sein könnte, gerade auch mit den heimischen Menschen in Zambia gut zusammenzuarbeiten.

Für Ihre Mühe danken wir Ihnen im voraus. Wir wären Ihnen besonders dankbar, wenn Sie uns möglichst bald eine Antwort zukommen lassen können, da wir zu einem Kurs, den Herr von Dreusche besuchen wird, alle Referenzen benötigen. Dieser Kurs beginnt am 21. Oktober.

Mit freundlichen Grüßen
i.A. Lischewsky, Sekr.

Gossner Mission

Herrn Dipl.-Ing.
H. Eckes
Mülheimstettstasse

5o9 Leverkusen

Berlin, den 1o.1o.1983

Betr.: Referenz für Herrn Dieter von Dreuschen, Leverkusen 31

Sehr geehrter Herr Eckes!

Herr von Dreuschen hat sich bei uns beworben, um für die Gossner Mission in einem ländlichen Entwicklungsprojekt in Süd-Zambia/Afrika als Bauingenieur zu arbeiten.

Er hat Sie als Referenz angegeben. Wir wären Ihnen sehr dankbar, wenn Sie uns einige Auskunft über seine Person geben könnten, die wir selbstverständlich streng vertraulich behandeln werden:

1. zu seinen beruflichen Qualifikationen,

2. zu seiner Persönlichkeit, wie Sie seine Flexibilität einschätzen, sich in einer fremden Kultur und Lebensgewohnheit umzustellen und entsprechend einzufügen,

3. wie seine Kooperationsfähigkeit mit anderen Mitarbeitern ist und seine Fähigkeit, sich auf andere Menschen einstellen zu können.

Für Ihre Mühe danken wir Ihnen im voraus. Wir wären Ihnen besonders dankbar, wenn Sie uns möglichst bald eine Antwort zukommen lassen könnten, da Herr von Dreuschen am 21. Oktober an einem Kurs teilnimmt, wo Referenzen vorliegen müssen.

Mit freundlichen Grüßen
i.A. Lischewsky, Sekr.

Gossner Mission

Herrn Pfarrer
Nicolei
Rudolf-Breitscheid-Str. 9

5o9 Leverkusen 31

Berlin, den 1o.1o.1983

Betr.: Referenz für Herrn Dieter von Dreuschen, Leverkusen 31

Sehr geehrter Herr Nicolei!

Herr Dieter von Dreuschen hat sich bei uns beworben, um für die Gossner Mission in einem ländlichen Entwicklungsprojekt in Süd-Zambia als Bauingenieur zu arbeiten.

Herr von Dreuschen hat Sie als Referenz angegeben. Wir wären Ihnen sehr dankbar, wenn Sie uns einige Auskunft über die Person von Herrn von Dreuschen mächen können, die wir selbstverständlich streng vertraulich behandeln werden:

1. zu seiner Persönlichkeit, wie Sie seine Flexibilität einschäfzen, sich in einer fremden Kultur und Lebensgewohnheit umzustellen und entsprechend einzufugen,

2. wie seine Kooperationsfähigkeit mit anderen Mitarbeitern ist und seine Fähigkeit, sich auf andere Menschen einstellen zu können,

3. wie er in der Lage sein könnte, gerade auch mit den einheimischen Menschen in Zambia gut zusammenzuarbeiten,

4. schließlich zu seiner christlichen Einstellung.

Für Ihre Mühe danken wir Ihnen herzlich im voraus. Wir wären Ihnen besonders dankbar, wenn Sie uns möglichst bald eine Antwort zukommen lassen könnten, da Herr von Dreuschen am 21. Oktober an einem Kurs teilnimmt, wo Referenzen vorliegen sollen.

Mit freundlichen Grüßen
A.A. Lischewsky, Sekr.

Gossner Mission

Dieter von Dreusche
PF 310107
Ober dem Hof 31
509 Leverkusen 31
Tel. 02171- 30360

6.10.83

EINGEGANGEN
10. OKT. 1983
Erledigt .....

An die
Gossner Mission

Handjerystr. 19-20
1000 B e r l i n 41

Sehr geehrter Herr Mische!

Etwas verspätet übersende ich Ihnen die tel. erbetenen Referenzen:

1.) Dipl.Ing. Michael Gentz in Fa. CONOCO (letzter Arbeitgeber)
2.) Pfarrer Nicolei, 509 Leverkusen 31, 0214 54411 Rudolf-Breitscheid Str. 9
3.) Pfarrer G. Finkenrath, 5632 Wermelskirchen-Neuenhaus
4.) Pfarrer Schäfer 5653 Leichlingen 2
5.) Stadtdir. a.D. H. Mombaur, 509 Leverkusen 31, Wuppertalstrasse
6.) Staatsminister a.D. Dr. Deneke,MdL, Landtag, 4000 Düsseldorf
7.) Zahnarzt S. Schulte, 509 Leverkusen 31, Im Oberfeld (Bauherr)
8.) Landwirt S.Oderwald, 509 Leverkusen 31, Hüscheid "
9.) Dipl.Ing. H.Eckes, 509 Leverkusen, Mülheimer Str. (Statiker)
10.) Bürgermeister W.D. Ludwig, 02171-42466 Leverkusen, Düsseldorfer Str.
11.) Ratsherr K.Hagemeyer, 509 Leverkusen 31, Hüscheid (Bauherr)
12.) Ratsherr RA K.F.Weber, 509 Lev. Rennbaumstr. (Bauherr)

Zugleich übergebe ich eine Aufstellung meiner bisherigen Auslagen mit der Bitte um Erstattung und Überweisung auf Kto.700303 Volksbank Rhein-Wupper BLZ 375 600 92

0214-3527700

Mit freundlichen Grüßen

Dieter v. Dreusche

Gossner Mission

Dienste in Übersee

Gerokstrasse 17
7000 Stuttgart 1
Fed. Rep. of Germany
Rép. Féd. d'Allemagne

Telegramme: Überseedienste
Telefon: (0711) 247081

Arbeitsgemeinschaft evangelischer Kirchen in Deutschland e. V.
Comittee of Protestant Churches in Germany for Service Overseas
Comité des Eglises Protestantes Allemandes pour le Service Outre-Mer
Comité de las Iglesias Protestantes de Alemania para el Servicio en Ultramar

Gossner Mission
z.Hd. Frau Vischer
Handjerystr. 19/2o

1ooo Berlin 41

EINGEGANGEN
29. AUG. 1983
Erledigt: .....

Referat für Bildungs- und Öffentlichkeitsarbeit

Stuttgart, den 26.8.1983/RK

Liebe Frau Vischer,

die nächsten Termine für OAK, Grundkurs und Vorbereitungskurs liegen folgendermassen fest:

OAK 22. - 24.9.1983
2o. - 22.1o.1983
24. - 16.11.1983

Referat B Antwort 9.9.83

Grundkurs 3o.1o. - 4.11.1983
2. - 7.1.1984

Vorbereitungkurs

1o. - 27.1o.1983
9. - 26.1.1984
23.4. - 11.5.1984

Wie in Ihrem Hause ja bekannt ist, bauen diese verschiedene Kurse aufeinander auf und sollten bei der Planung berücksichtigt werden:

> Beim OAK wird der Bewerber ausgewählt für eine Übersee-Tätigkeit. Nach positiver Entscheidung des Auswahlteams sollte er möglichst bald an einem GRUNDKURS teilnehmen. Hier werden wesentliche Fragen angesprochen, die später beim VORBEREITUNGSKURS vorausgesetzt werden.

Eine Anmeldung zu den Kursen, vor allem aber zum OAK, sollte möglichst bald erfolgen. Da die OAKs vom Vermittlungsbereich durchgeführt und organisiert werden, ist für Sie das Referat B (Frau Stevens) zuständig. Die anderen Kurse werden von unserem Referat aus organisiert. Sie können sich dann wieder an mich wenden.

Mit freundlichen Grüssen

Rau-Koerner

Lieselotte Rau-Koerner
Sachbearbeiterin

Träger: Außenamt der EKD, Deutscher Evangelischer Missionsrat, das Diakonische Werk der EKD, Evangelische Freikirchen, Evangelische Studentengemeinde in Deutschland, Leiterkreis der Evangelischen Akademien, Arbeitsgemeinschaft der Evangelischen Jugend Deutschlands, Lutherischer Weltdienst – Deutscher Hauptausschuß
Bankverbindung: Südwestbank Stuttgart (BLZ 600 602 01) Kto. Nr. 20 640

Boston University Mission

D. von Dreusche

1. Welchen Sinn sehen Sie darin, im Rahmen der Entwicklungshilfe in Übersee zu arbeiten?

Mich beunruhigt die Tatsache, daß tausende Menschen in der dritten Welt hungern und ein elendes Leben führen. Durch tatkräftige und ideenreiche Unterstützung durch die Industrieländer kann m.E. eine Hilfe zur Selbsthilfe geleistet werden, an der ich mitwirken möchte. Zugleich halte ich diese Hilfe für eine Wiedergutmachung gegenüber der 3.Welt, deren Verelendung ohne Dazutun der Europäer nicht in dieser Weise entstanden wäre.

2. Warum wollen Sie gerade bei der Gossner Mission in der kirchlichen Entwicklungshilfe mitarbeiten?

Mich hat eine Anzeige in der evangelischen Wochenzeitung Der Weg angesprochen. Daraufhin habe ich über die GM gelesen und festgestellt, daß ich mich mit deren Arbeit identifizieren kann. Ich glaube, daß ich mich nicht so schnell zu einer Mitarbeit in der 3.Welt entschließen könnte, wenn deren tragende Organisation eine weltliche Instanz wäre.

3. Welche beruflichen und persönlichen Fähigkeiten können Sie Ihrer Meinung nach in besonderem Maße bei einer solchen Mitarbeit einsetzen?

Alle Erfahrungen aus einem arbeitsreichen Berufsleben eines freiberuflichen Architekten und Ingenieurs. Das Vermögen organisieren und improvisieren zu können. Darüberhinaus die Fähigkeit Dinge mit Geduld angehen zu können (was ich vor 20 Jahren sicher nicht gekonnt hätte)

4. Welchen Zusammenhang hat Ihr Wunsch einer Mitarbeit in Übersee mit Ihrem bisherigen persönlichen Werdegang?

Ich habe in meinem Leben vieles erlebt und gelernt , die Hände zu falten. Ich habe für vieles dankbar zu sein und möchte aus dieser Dankbarkeit neue Tatkraft entwickeln und diese dort einsetzen, wo wirkliche Not ist.

Gossner Mission

Dieter von Dreusche
Postfach 31o1o7
Ober dem Hof 31
5o9 Leverkusen 31
Tel. o2171-3o36o

EINGEGANGEN
15. AUG. 1983
Erledigt 11.8.83

An die
Gossner Mission
Handjerystrasse 19/2o
1ooo B e r l i n 41

Inserat DER WEG Nr. 31 v. 31.7.83 'B A U I N G E N I E U R'

Sehr geehrter Herr Mische!

Unter Bezugnahme auf unser heutiges Telefonat übersende ich Ihnen hiermit meine Bewerbungsunterlagen. Damit Ihr angekündigter Besuch bei mir am kommenden Freitag erleichtert wird, lege ich weiter eine Kopie des Stadtplans mit Wegbeschreibung bei.

Ich bin Diplomingenieur, habe an der Staatlichen Ingenieurschule für Bauwesen Köln studiert und von der Fachhochschule Köln die Urkunde meiner Nachdiplomierung erhalten.

Ich habe in der Bau- und Grundstücksabteilung der Nordstern-Versicherung Köln und bei Architekt E.Ernestus Leverkusen erste Berufserfahrung gesammelt.
Bei Nordstern als Bauleiter eines großen Verwaltungsneubaus; zugleich lernte ich aber auch die Belange einer Immobilienverwaltung und den Bereich der Gebäudeunterhaltung kennen.
Architekt Ernestus, mit dem ich befreundet war, bereitete mich an Projekten, die ich vom Reißbrett bis zur Abrechnung betreute, auf mein Ziel vor, ein eigenes Büro eröffnen zu wollen.

Ich war von 196o-8o im eigenen Architektur- und Ingenieurbüro tätig. Hierüber verdeutlicht eine gesondert beigefügte Auflistung, daß ich umfangreiche Aufträge des Hoch- und Tiefbaus übernommen und abgewickelt habe.

Ende 1977 erhielt ich den sehr reizvollen Auftrag zu einem Modellvorhaben, in dessen Verlauf mir der Initiator, Landwirtschaftsminister Deneke nahelegte, als Geschäftsführer einer staatlich geförderten Einrichtung bereitzustehen. In der Gründungsphase trat Minister Deneke unerwartet zurück. Da sein Nachfolger das Projekt aus politischen Gründen nicht mehr realisierte und ich inzwischen Aufträge meines Büros an jüngere Kollegen weitergegeben hatte, zog ich ein Angebot der Mineralölwirtschaft einem weiteren Verbleib im freien Beruf vor.

Ich wurde am 1.1.81 'Leiter Tankstellentechnik' bei CONOCO Mineralöl GmbH Hamburg in deren Niederlassung Mannheim mit der Aufgabe, ein Netz von 11o Tankstellen in der Region Süd-West einschließlich der Planung großer Um- und Neubauten bei einem Jahersbudjet von ca. 6 Mio DM zu betreuen.

Gossner Mission

In dieses völlig neue Berufsmetier arbeitete ich mich ohne besondere Vorbereitung in kürzester Zeit ein und bewältigte die gestellte Aufgabe mit Freude und Erfolg. Das gelang nicht alleine durch energischen und fleißigen Einsatz, sondern insbesondere deshalb, weil ich aus dem freien Beruf Training und Kondition zu grosser Flexibilität und Belastbarkeit mitbrachte.

CONOCO hat mit Ablauf des ersten Halbjahres 1983 die Niederlassung Mannheim geschlossen, nachdem zuvor die amerikanische Muttergesellschaft verkauft und anschließend auch in Deutschland umfangreiche organisatorische Veränderungen und Rationalisierungen eingeleitet wurden. Davon bin ich, wie 30% der Mitarbeiter betroffen.

Ich bin, wie Sie den Unterlagen entnehmen ein Bewerber mit einer sehr breiten Kenntnispalette des gesamten Bauwesens. In der langen freiberuflichen Tätigkeit hat es nur wenige Bereiche gegeben, mit denen ich mich nicht gründlich zu befassen gehabt hätte, wobei für alle Arbeiten, die mein Büro verließen die letzte Kontrolle und Verantwortung bei mir selbst lag. Die Erziehung zu gründlicher Arbeit ist schon durch die Tatsache begründet, auch jeweils das finanzielle Risiko getragen zu haben. Das hat mir den Wechsel in die völlig andere Berufsmaterie der Mineralölwirtschaft sehr erleichtert

Mit meinen Fähigkeiten decke ich die Forderungen ab, die Sie in Ihrem Inserat genannt haben. Dieses Stellenangebot übt auf mich den Reiz aus, meinem sozialen Engagement zu folgen, zu dem ich von frühester Jugend an in einem Pfarrhaus erzogen wurde. Dabei nehme ich bewußt in Kauf, daß die Dotierung der Stelle weit unter dem liegen dürfte, was ich bisher verdiente. Aus diesem Grund bitte ich auch, mein Alter und die Vermutung einer möglichen Überqualifikation nicht als Hindernis zu sehen.

Abschließend versichere ich, völlig gesund und absulut belastbar zu sein; so lautet auch das Ergebnis einer kürzlichen ärztlichen Untersuchung.

Mit freundlichen Grüßen

Dieter v. Brünn

Gossner Mission

Fahrtroute für Besuch bei Dieter von Dreusche

Ober dem Hof 31
509 Leverkusen 31 (Bergisch Neukirchen
Tel 02171-30360

Autobahn A3 (Frankfurt-Oberhausen)

Abfahrt Leverkusen/Opladen

an 1. Ampel links abbiegen

2. Ampel (mit Vorampel) überfahren

an 3. Ampel halb-rechts abbiegen, Fahrtrichtung Burscheid-Bergisch Neukirchen

bis Kreisverkehr fahren

in 2. einmündende Straße (Hinweis Burscheid/Berg.Neukirchen auf kleinem gelben Schid) einbiegen (Rat Deycks Str)

nächste Ampel überfahren

an nächster Ampel ist nur Abbiegen nach links möglich Hinweis Burscheid/Berg.Neukirchen auf kleinem Schild bitte mittleren Fahrbahnstreifen wählen

an nächster Ampel gerade aus. Bergisch Neukirchen ist groß ausgeschildert. 3 km fahren.

Im Ort Bergisch Neukirchen fällt BP-Tankstelle deutlich in's Auge, danach noch 50 m.

Rechts abbiegen in Strasse Ober dem Hof. Bis zum letzten Haus auf linker Seite durchfahren. Haus Nr. 31.

Bitte bestätigen Sie die Ankunftzeit auf ca 2 Std. Genauigkeit.

Gossner Mission

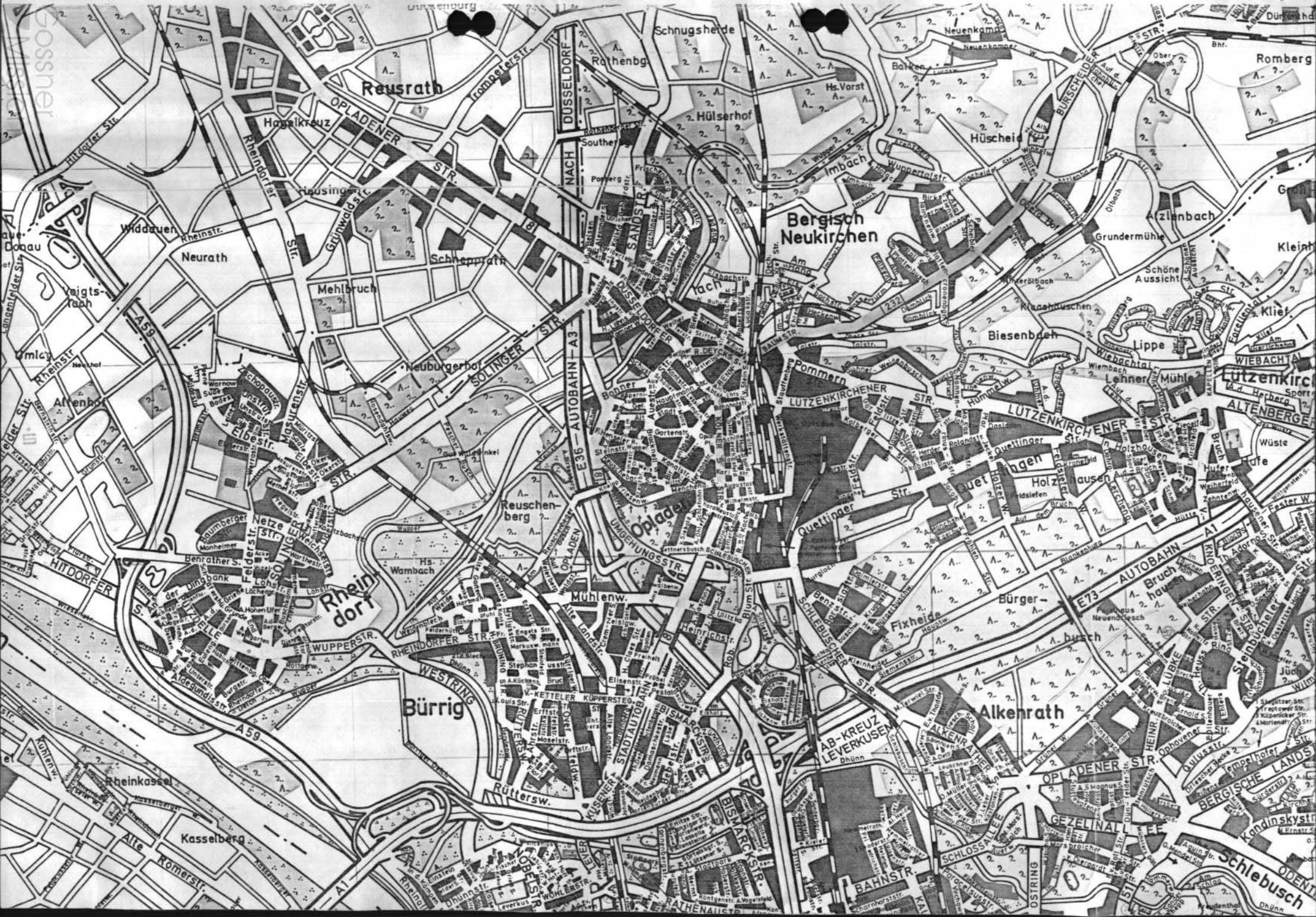
Reusrath
Hasselkrouz
OPLADENER STR.
Trompeterstr.
DÜSSELDORF
NACH
Schnugsheide
Rathenbg.
Hs. Vorst
Hülserhof
Southern
Pommern
Hüscheid
Romberg
Bergisch Neukirchen
Imbach
Grundermühle
Alzlenbach
Schöne Aussicht
Biesenbach
Lippe
Lehner Mühle
WIEBACHTAL
Lützenkirch
ALTENBERGER
LÜTZENKIRCHENER STR.
Quettinger
Holzhausen
Widdauen
Neurath
Rheinstr.
Rheindorfer Str.
Grünwaldstr.
Schnepprath
Mehlbruch
Voigtsbach
Omlcy
Altenhof
Neuburgerhof
SOLINGER STR.
Masurenstr.
Elbestr.
Netzestr.
Reuschenberg
Hs. Wambach
Mühlenw.
Opladen
UMGEHUNGSSTR.
Rheindorf
HITDORFER
WUPPERSTR.
RHEINDORFER STR.
WESTRING
Bürrig
A59
Rheinkassel
Kasselberg
Alte Römerstr.
A1
E36 — AUTOBAHN — A3
E73 — AUTOBAHN — A1
Bürger-
Fixheide
Alkenrath
AB-KREUZ LEVERKUSEN
OPLADENER STR.
GEZELINALLEE
SCHLOSSALLEE
BAHNSTR.
Schlebusch
BERGISCHE LANDSTR.
Kondinskystr.
Tempelhofer
Quitzsstr.
Ophovener Str.
HEINR. LÜBKE
Steinbücheler
KNÖRINGER
Bruchhaus
Bruch
Wüste
Hufe
Huter
Weihnachtsfeld
Zehnten
Faster W.
Hauptw.
Fernhaus Neuendorf
Blankenburg
Auf dem Bruch
Im Adornbusch
Kleinheider W.
Siemensstr.
Benzstr.
Daimlerstr.
Kruppstr.
Burgloch
Blum Str.
SCHLEBUSCHER STR.
Heinrichstr.
Kolbergerstr.
Feldstr.
Jakobistr.
Augustastr.
Wilhelmstr.
Mencheng.
Gartenstr.
Steinstr.
Bonner
Sandstr.
Düsseldorfer
Bismarckstr.
Stadtautobahn
Rüttersw.
Moselstr.
Erftstr.
Elisenstr.
Fröbelstr.
Kupperstegstr.
V. Ketteler
Louis Str.
Stephan
Markusw.
Engelsstr.
Weidenbach
Paidernuhl
Gottesw.
Hohen Ufer
Lohsstr.
Löchergr.
Benrather S.
Ding bank
Aldegundisstr.
Burgstr.
Rheindorfer Str.
Wuppertalstr.
Hüttenstr.
Kaiserstr.
Bahnhofstr.
Bismarckstr.
Nobelstr.
Wöhlerstr.
Einsteinstr.
Leverkusen
Dhünnstr.
Rathenaustr.
Schorlemerstr.
Schorlemerbusch
Schlossallee
Ostring
Kaiserstr.
Kreuzstr.
Bernhardstr.
Hitdorfer Str.
Langenfelder Str.
Masurenstr.
Schopauer
Onsbrg.
Elbestr.
Oderstr.
Warnowstr.
Sudetenstr.
Bodenstr.
Hanseatenstr.
Baumberger
Monheimer
Wartbestr.
Aldegundisstr.
Lohsstr.
Hohen Ufer

Dieter von Weitzel
Leverkusen

Lebenslauf

2. 1. 1930	geboren in Remscheid
1936 - 40	Volksschule Bergisch Nüttscheid
1940 - 50	Gymnasium Opladen mit kriegsbedingter Unterbrechung 1944-45
1950 - 53	Baupraktikum in verschiedenen Bereichen des Hoch- u. Tiefbaus
1953 - 56	Studium, Staatliche Ingenieurschule f. Bauwesen, Köln
1956 - 59	Nordstern-Versicherung Köln
1959 - 60	Architekt Ernestus Leverkusen
1960 - 80	eigenes Büro in Bergisch Nüttscheid (Schule Leverkusen 31)
1981	Cofreco (Generalplaner)
Tätigkeiten	

Gossner Mission

Dieter von Dreusche

A U F L I S T U N G	der Tätigkeiten und ausgeführten Projekte als freiberuflicher Architekt
196o	eigenes Büro in Bergisch Neukirchen (Rhein-Wupper-Kreis; nach Gebietsreform 1975 Stadtteil von Leverkusen.)
1962 - 1975	in der Regel 4 - 5, in Spitzenzeiten bis zu 9 angestellten und freien Mitarbeitern.
1975 - 1977	nach erfolgter kommunaler Neugliederung einschneidende Beschränkung der Bebauungsmöglichkeiten in meinem Tätigkeitsbereich insbesondere durch die Nichtverwirklichung von zwei von mir vorbereiteten Bebauungsplangebieten. Verkleinerung des Büros auf 2 Mitarbeiter.
1977 - 198o	Zusammenarbeit mit freiberuflichen Kollegen, gemeinsame Projektbearbeitung in Arbeitsgemeinschaften
ab 1.1.1981	angestellt bei CONOCO Mineralöl-GmbH, Hamburg, Überseering 27, tätig als 'Leiter Tankstellentechnik' des Vertriebsbüros Süd-West in Mannheim.

P R O J E K T E

1. <u>Neubauten:</u>

Einfamilienhäuser:	Zahlreiche Projekte vom freistehenden Haus bis zum Reihen- bzw. Atriumhaus. In der Qualität vom anspruchsvollen Villengebäude bis zur einfachen Siedlerstelle.
Mehrfamilienhäuser:	Für Baugesellschaften (insbes. d. Bayer AG), kommunale und kirchliche Auftraggeber sowie zahlreiche private Bauherrn.
Geschäftshäuser:	Selbstbedienungsmärkte der Lebensmittelbranche, Läden für die Textil-, Möbel-, Haushaltwaren- und Reisebranche.

Gossner Mission

Praxen:	In Verbindung mit Ein- und Mehrfamilien- sowie Geschäftshäusern für Ärzte, Zahnärzte und sonstige Freiberufler.
Büro- und Verwaltungsgebäude:	für gewerbliche, kommunale und kirchliche Auftraggeber.
Kommunale und Kirchliche Bauten:	Kindergärten, Sportheim, Jugendheim Friedhofshallen.
Landwirtschaftliche Gebäude:	Neu- und Umbauten sowie Erweiterungen von Hofanlagen, z.T. gemeinsam mit der Bauernsiedlungsgesellschaft.
Gewerbliche Bauten:	Hallen, Werkstätten und Tankstellen für Handwerk und Mittelstandsgewerbe.
2. Altbausanierungen:	Renovierung erhaltenswerter Gebäude, Wohngebäude, Kirchen und kirchliche Gebäude, z.T. gemeinsam mit dem Landeskonservator.
3. Umbauten:	Wohn- und Geschäftshäuser mit teilweise höchstem technischen Schwierigkeitsgrad. Umbauten an kirchlichen Gebäuden.
4. Bauschädenbeseitigung:	An zahlreichen Fremdbauten. (ich selbst habe während meiner gesamten freiberuflichen Tätigkeit keine von mir verschuldeten Baumängel und auch keine Haftungsinanspruchnahmen zu beklagen gehabt.)
5. Haus- und Wohnungsverwaltung:	Für zahlreiche Bauherrn habe ich im Anschluß an die Bauzeit deren Miethäuser und Eigentumswohnungen verwaltet.
6. Bebauungsplanung:	Ausarbeitung von Entwürfen für die Stadtverwaltungen Bergisch Neukirchen und Opladen.
7. Erschließung und Baureifmachung:	Parzellierung und Durchführung privater Umlegungen. Bau von Erschließungsstrassen, Ver- und Entsorgungsanlagen gemäß Erschließungsverträgen mit den Städten Bergisch Neukirchen, Opladen und Leverkusen.

Gossner Mission

8. Gutachten:

Sachverständiger für Bewertungsfragen im Gutachterausschuß des Rhein-Wupperkreises (1964 bis 1975) und des Umlegungsausschusses der Stadt Burscheid (1966 bis 198o).
Private Gutachten. (als öffentlich bestellter Gutachter hatte ich mich nie beworben.)

9. Sonstige Tätigkeiten:

Auftrag zur Durchführung eines Modellvorhabens des Ministeriums für Ernährung, Landwirtschaft und Forsten des Landes Nordrhein-Westfalen über Reitwegebau, Kostenbeteiligung der Reiter, Herstellung und Kartierung eines integrierten Reitwegenetzes in Nordrhein-Westfalen. (1977 - 1979)

Mitwirkung an einem Forschungsvorhaben des Bundeslandwirtschaftsministeriums über Reitdichte, Reitwegequalität und - unterhaltung. (1979 - 198o)

Beratung der drei Landtagfraktionen des Landes Nordrhein-Westfalen bei Novellierung des Landschaftsgesetzes, soweit Betretungsrechte und Reitregelungen angesprochen waren. (1979/8o)

1o. Ehrenamtliche Tätigkeiten:

Ratsherr der Stadt Bergisch Neukirchen.
Fraktions- und Bauausschußvorsitzender.
Bürgerschaftsmitglied im Kreistag des Rhein-Wupper-Kreises.
Mitglied des Orts-, Kreis- und Bezirksverbandsvorstandes meiner Partei.

Stellvertretender Vorsitzender des Landschaftsbeirates der Stadt Leverkusen.

Mitglied des Landschaftsbeirates des Rheinisch-Bergischen-Kreises.

Mitglied der Brandschaukommission der Stadt Bergisch Neukirchen.

Gründer und Vorsitzender eines Schulverei mit dem Ziel der Förderung der Montessori Pädagogik.

Gründer und Leiter eines Jugendsingkreise

Mitbegründer eines Förderkreises einer be schützenden Werkstatt für Körperbehinder

Gossner Mission

CONOCO MINERALOEL GMBH

ÜBERSEERING 27
2000 HAMBURG 60
TELEFON (040) 6 38 01-1

ZWISCHENZEUGNIS

Herr Dieter von Dreusche, geb. am 2. Januar 1930, ist seit dem 1. Januar 1981 als Leiter der Tankstellen-Technik in unserem Verkaufsbüro Südwest in Mannheim tätig. Er ist in dieser Funktion direkt dem Tankstellen-Verkaufsbüroleiter unterstellt und führt die technische Gruppe des Verkaufsbüros mit zwei Ingenieuren und einer technischen Sachbearbeiterin.

Herr von Dreusche übernahm diese neugeschaffene Position mit der Zielsetzung, eine technische Abteilung im Verkaufsbüro Südwest aufzubauen, die nicht nur den Anforderungen des Verkaufs durch eine entsprechende technische Ausgestaltung der Tankstellen Rechnung tragen soll, sondern darüber hinaus im Rahmen der für unseren Geschäftsbetrieb geltenden besonderen behördlichen Auflagen den einwandfreien technischen Zustand der Tankstellen im Verkaufsgebiet gewährleistet.

Im Rahmen dieser Zielsetzung überwacht Herr von Dreusche die Aktivitäten der Tankstellen-Ingenieure in ihren Gebieten mit insgesamt ca. 110 Tankstellen und schaltet sich bei auftretenden technischen Problemen ein sowie bei Verhandlungen mit Beratungsfirmen, Behörden, Baufirmen usw. Er ist verantwortlich für die Investitionsvorhaben an den Tankstellen von der Planung der Investitionen über das Koordinieren und Abstimmen der entsprechenden technischen Maßnahmen und Aktionen mit dem zuständigen Verkaufsbüroleiter und den Fachabteilungen der Zentrale bis zur Überwachung der genehmigten Verkaufsbüro-Investitions- und Reparaturbudgets und der ordnungsgemäßen Administration und Kostenabwicklung.

Darüber hinaus führt Herr von Dreusche für alle größeren Projekte die technische Planung der baulichen Maßnahmen durch, stimmt die Projekte mit den zuständigen Stellen des Verkaufs ab, läßt Bauzeichnungen anfertigen, erstellt die Bauanträge und holt die notwendigen behördlichen Genehmigungen ein. Mit dieser Tätigkeit sind häufig Verhandlungen mit Behörden hinsichtlich besonderer Auflagen, Auslegen von Vorschriften usw. verbunden.

Handelsregister Hamburg B 1679 ·sführer: Karl Heinrich, W. Brandmayr, Helmut J. Schreier

Gossner Mission

Auch die Auftragsvergabe und Bauleitung der Projekte im Verkaufsgebiet Südwest gehört zu seinem Aufgabengebiet. Dies erstreckt sich von der Ausschreibung über die Angebotsprüfung, Führen von Verhandlungen mit den Baufirmen und Auftragsvergabe bis zur Bauüberwachung bzw. Steuerung der Bauleitung durch die Tankstellen-Ingenieure und Abnahme der Bauten nach Fertigstellung.

Herr von Dreusche übernahm bei uns die Aufgabe, die technische Abteilung des Verkaufsbüros Südwest zu organisieren und zu konsolidieren. Aufgrund seiner langjährigen Berufserfahrung arbeitete sich Herrn von Dreusche in kurzer Zeit in die technischen Belange des Tankstellengeschäfts ein. Seine Fähigkeit, analytisch zu denken und sein Auge fürs Detail ermöglichten es ihm, in diesem sehr breitgefächerten Aufgabengebiet Probleme klar zu definieren und entsprechende Lösungen auszuarbeiten, was sich ebenfalls auf dem Gebiet der Kostenüberwachung und Budgetkontrolle deutlich auswirkt. Besonders hervorheben möchten wir seine starke Identifizierung mit seiner Aufgabenstellung sowie seinen überdurchschnittlichen Einsatz für die Interessen des Unternehmens, denen er häufig seine persönlichen Belange unterordnet.

Herr von Dreusche erzielt besondere Verhandlungserfolge in den teilweise sehr komplizierten Verfahren mit Behörden. Seine verbale Ausdrucksfähigkeit und sein Verhandlungsgeschick machen ihn darüber hinaus zu einem akzeptierten Gesprächspartner gegenüber außerbetrieblichen Stellen und Geschäftspartnern sowie zu einem von Kollegen und Vorgesetzten geschätzten Mitarbeiter.

Dieses Zwischenzeugnis wird auf Wunsch von Herrn von Dreusche ausgestellt.

Hamburg, 2. Dezember 1982

CONOCO MINERALOEL GMBH

i.V. Wilbandt

Gossner Mission

NORDSTERN

ALLGEMEINE VERSICHERUNGS-AKTIENGESELLSCHAFT

Zeugnis

Herr Dieter v. Dreusche, geboren am 2.1.193o, trat am 1.9.1956 als Bautechniker in unsere Dienste, nachdem er am Schluß des Sommersemesters 1956 an der Staatsbauschule Köln die Abschlußprüfung der Abteilung Architektur als Ingenieur für das Bauwesen bestanden hatte.

In der ersten Zeit seiner Tätigkeit bei uns wurde Herr v. Dreusche in die allgemeinen Belange einer Bauverwaltung eingearbeitet, um anschließend als Bauleiter bei dem Erweiterungsbau unseres Verwaltungsgebäudes Gereonstraße / Mohrenstraße / Cardinalstraße eingesetzt zu werden. Es handelte sich hierbei um einen Neubau mit 6.3oo m^2 Nutzfläche bei einem umbauten Raum von 24.75o m^3.

Als Bauleiter hatte Herr v. Dreusche Gelegenheit, seine theoretischen und bis dahin erworbenen praktischen Kenntnisse derart zu vervollkommnen, daß er die mannigfachen Erfordernisse eines solchen Verwaltungsbaues - zum überwiegenden Teil sogar selbständig - meisterte. Während seiner Tätigkeit auf der Baustelle, die sich von der Einteilung der Arbeiten über die Beaufsichtigung der Baudurchführung bis zur Bauabrechnung erstreckte, hat Herr v. Dreusche sich jederzeit restlos für die Belange der Bauherrschaft eingesetzt, so daß wir ihm das Zeugnis eines pflichtbewußten und korrekten Mitarbeiters ausstellen können, mit dessen Leistungen wir stets zufrieden waren.

Nach Beendigung des Bauabschnittes wurde Herr v. Dreusche mit kleineren Bauaufgaben beschäftigt, wobei er sich auf den nächsten Einsatz bei einer anderen Großbaustelle unseres Unternehmens vorbereiten sollte.

Herr v. Dreusche hat sein Dienstverhältnis fristgemäss zum 31.3.1959 gekündigt, um sich selbständig zu machen. Zur Abwicklung verschiedener Bauaufträge stellte er uns seine Mitarbeit noch bis zum 3o.4.1959 zur Verfügung.

Wir wünschen Herrn v. Dreusche für die Zukunft alles Gute.

K ö l n, den 29. April 1959

Nordstern
Allgemeine Versicherungs-Aktiengesellschaft

Gossner Mission

ARCHITEKTENKAMMER NORDRHEIN-WESTFALEN

KÖRPERSCHAFT DES ÖFFENTLICHEN RECHTS

ARCHITEKTENKAMMER NW, INSELSTRASSE 27, 4000 DÜSSELDORF 30

Geschäftsstelle

Herrn Architekten
Dipl.-Ing. Dieter von Dreusche
Ober-dem-Hof 31

5090 Leverkusen

Ihr Zeichen	Ihre Nachricht vom	Unsere Nachricht vom	Unser Zeichen	Datum
			Pt	1. März 1982

Sehr geehrter Herr von Dreusche,

wir bestätigen, daß Sie gemäß Entscheidung des Eintragungsausschusses vom 5.10.1971 unter der Mitglieds-Nr. A 8513 in die Architektenliste Nordrhein-Westfalen eingetragen worden sind.

Ein Antrag auf Löschung liegt hier bis heute nicht vor. Mit der Eintragung in die Architektenliste sind Sie gemäß § 83 a Landesbauordnung in Nordrhein-Westfalen bauvorlageberechtigt.

Mit freundlichen Grüßen

H. Hussmann
Geschäftsführer

Tel. (0211) 490089 / 492283 · Postfach 320128 / 320129 · Girokonto 3160918, Westdeutsche Landesbank, Girozentrale Düsseldorf (BLZ 30050000)
Raiffeisenbank Düsseldorf EG 394017 (BLZ 30160213) · Postscheck Essen 1570 7-439 (BLZ 36010043)

Gossner Mission

Anlage 4 zur Durchführungsverordnung v. 29. 11. 1977
(GVBL Nr. 29/77, S. 461 ff) des Hessischen Architektengesetzes:
Bescheinigung Bauvorlagenberechtigung
Architekten

Bescheinigung zur Bauvorlagenberechtigung

nach § 3 Abs. 3 Satz 2 Hessisches Architektengesetz
in Verbindung mit § 91 Abs. 7 Nr. 1 Hessische Bauordnung
zur Vorlage und zum Verbleib bei der Bauaufsichtsbehörde

Herr/Frau Dipl.-Ing. Dieter von Dreusche

geb. am 2.1.1930

wohnhaft in 5090 Leverkusen, Ober dem Hof 1

ist seit 4.5.1982

a) in der Architektenliste unter Nr. -.-

b) in der Architektenliste, Sondergruppe „Auswärtige bauvorlagenberechtige Architekten"
unter Nr. A/587

mit der Fachrichtung
1) (Hochbau-) Architekt
2) Innenarchitekt
3) Landschaftsarchitekt

eingetragen.

Frankfurt am Main, den 7.5.1982

Siegel

ARCHITEKTEN-
KAMMER
HESSEN

Architektenkammer Hessen

Heid

Präsident

Hinweis:

Die Bauvorlagenberechtigung erstreckt sich

für (Hochbau-) Architekten: nach § 91 Abs. 2 Nr. 1 HBO auf alle Baufälle des § 91 Abs. 1 HBO,

für Innenarchitekten: nach § 91 Abs. 3 Nr. 1 HBO auf den Um- und Ausbau von Gebäuden,

für Landschaftsarchitekten: nach § 91 Abs. 3 Nr. 2 HBO auf alle Baufälle des § 91 Abs. 1 Satz 2 HBO (Aufschüttungen, Abgrabungen, Lager-, Abstell- und Ausstellungsplätze, Sport-, Spiel-, Camping- und Zeltplätze sowie sonstige, mit festen Einrichtungen versehene Anlagen für Erholung und Freizeit, Stellplätze für mehr als zehn Kraftfahrzeuge).

Gossner Mission

Staatliche Ingenieurschule für Bauwesen Köln

INGENIEUR – URKUNDE

Herr Dieter von Dreusche

geboren am 2.1.1930 in Remscheid

hat am 27.7.1956 an der Staatlichen Ingenieurschule

für Bauwesen Köln

die staatliche Ingenieurprüfung mit Erfolg abgelegt.

Er ist gemäß Runderlaß des Kultusministers des Landes Nordrhein-Westfalen vom 25. Juli 1966 (ABl. KM. NW. S. 290; SMBl. NW. 22 307) berechtigt, die Bezeichnung

„Ingenieur (grad.)"

zu führen.

Köln, den 8. März 19 67

Der Direktor

Baudirektor

STAATL. INGENIEURSCHULE FÜR BAUWESEN KÖLN

Gossner Mission
Muster A

STAATSBAUSCHULE • KÖLN

STAATLICHE INGENIEURSCHULE FÜR BAUWESEN • ABTEILUNG ARCHITEKTUR

INGENIEUR-ZEUGNIS

HERR Dieter v. Dreusche

GEBOREN AM 2. Januar 1930 ~~xxx~~ in Remscheid

HAT NACH ORDNUNGSMÄSSIGEM BESUCH DER STAATSBAUSCHULE KÖLN AM SCHLUSSE DES

Sommer-- -SEMESTERS 1956 DIE ABSCHLUSSPRÜFUNG DER ABTEILUNG ARCHITEKTUR

ABGELEGT MIT DEM GESAMTURTEIL -Bestanden-

UND DAMIT DIE BERUFSBEZEICHNUNG

INGENIEUR FÜR BAUWESEN

ERWORBEN

KÖLN, DEN 27. Juli 1956

DER STAATLICHE PRÜFUNGSAUSSCHUSS

DER VORSITZENDE

DER DIRECTOR DER STAATL. INGENIEURSCHULE FÜR BAUWESEN • KÖLN •

DIE DOZENTEN

DIE BEISITZER

Der Abteilungsleiter

Gesamtbeurteilung: mit Auszeichnung bestanden, gut bestanden, befriedigend bestanden, bestanden

Gossner Mission

DIE SEMESTERLEISTUNGEN UND DIE ERGEBNISSE DER PRÜFUNG WERDEN BEURTEILT:

1. STAATS- UND KULTURKUNDE		-teilgenommen-
2. BAUBETRIEBS- UND GESCHÄFTSKUNDE		-gut-
3. FREIHANDZEICHNEN		----
4. BAUKONSTRUKTION		-befriedigend-
5. ENTWERFEN	STÄDT. ENTWURF	-gut-
	LANDW. ENTWURF	
6. BAUSTOFFKUNDE		-gut-
7. STATIK		-befriedigend-
8. STAHLBETON		-befriedigend-
9. STAHLBAU		-befriedigend-
10. GRUNDBAU		-befriedigend-

DEMNACH HAT HERR Dieter v. Dreusche DIE INGENIEURPRÜFUNG

MIT DEM GESAMTURTEIL----------BESTANDEN

KÖLN, DEN 27. Juli 1956

DER STAATLICHE PRÜFUNGSAUSSCHUSS

DER VORSITZENDE

DER DIREKTOR

DIE DOZENTEN

DIE BEISITZER

DER DIREKTOR DER STAATL. INGENIEURSCHULE FÜR BAUWESEN · KÖLN ·

Der Abteilungsleiter

Gossner Mission

FACHHOCHSCHULE KÖLN

URKUNDE

Herrn/~~Frau~~ Dieter von Dreusche

geboren am 2.1.1930 in Remscheid

wurde mit Urkunde der

Staatlichen Ingenieurschule für Bauwesen Köln

vom 8.3.1967 die Berechtigung erteilt, die staatliche Bezeichnung

Ingenieur (grad.)

zu führen.

Gemäß Art. IV Nr. 1 des Gesetzes zur Änderung hochschulrechtlicher Bestimmungen vom 21.7.1981 (GV. NW. 1981 S. 408) steht ihm/ihr nunmehr das Recht zu, anstelle der verliehenen Graduierung den entsprechenden Diplomgrad

Diplomingenieur(in)

Dipl.-Ing.

als staatliche Bezeichnung zu führen.

Auf den Antrag vom 10.2.1983 wird zum Beweis der Führungsberechtigung diese Urkunde erteilt.

Köln, den 15.3.1983

Rektor

Prof.Dr.-Ing.J.L.Atrops

Siegel

Gossner Mission

Dagmar Dekker

EINGEGANGEN
11. März 1981
Erledigt .....

33 Braunschweig, 9.3.81
Im Sieke 18

Antwortbriefen 13.3
Eb 12/5

An die

Gossner Mission
Handjerystr. 20

1000 B e r l i n 41

Betr.: Ihre Anzeige in der Zeitung "Die Zeit" vom 6.3.81

Sehr geehrte Herren!

Hiermit bewerbe ich mich um die in der Zeitung "Die Zeit" vom 6.3.81 annoncierte Stelle als Referentin für die Referate Öffentlichkeitsarbeit/Gemeindedienst und Nepal.

Ich bin gerade von einem 6-jährigen Aufenthalt in Süd-Afrika nach Deutschland zurückgekehrt und würde mich gerne an einer Stelle betätigen, an der ich sowohl meine Auslandserfahrung und englischen Sprachkenntnisse als auch meine pädagogischen Studien und meine journalistische Tätigkeit (s. Lebenslauf) verwenden könnte.

Ich meine, daß das bei der von Ihnen ausgeschriebenen Position als Referentin der Fall wäre, umso mehr, als ich mich von jeher sehr für das kirchliche Geschehen und die Mission interessiere. Schon während meiner Schulzeit in Braunschweig habe ich aktiv in der Gemeindearbeit in Schapen/Weddel mitgewirkt, war u.a. im Jugendausschuß und habe lange Zeit den Kindergottesdienst mitgestaltet.

In Süd-Afrika besuchte ich mehrere Missionsstationen verschiedener Konfessionen und nahm des öfteren an sogenannten "Arbeitslagern" teil, während denen dem jeweiligen Missionar mit unterschiedlichen wichtigen Arbeiten geholfen wurde. Dort wurde mein Interesse für die Mission und für die besondere Problematik von Entwicklungsfragen vertieft.

Gossner Mission

Während meines dritten und vierten Studienjahres unterrichtete ich die 11. und 12. Klasse des "Loreto Convent" in Pretoria in Deutsch, beschloß nach Studienabschluß jedoch, mich dem Journalismus zu widmen, und wurde Reporterin für soziale und kulturelle Fragen bei der Zeitung "Hoofstad" in Pretoria.

Als Referentin bei Ihrer Mission glaube ich, mich sinnvoll meiner Ausbildung und meinen Interessen gemäß betätigen zu können. Über eine positive Beurteilung meiner Bewerbung würde ich mich daher sehr freuen, und verbleibe

mit freundlichen Grüßen

D. Dekker

Anlagen

Lebenslauf
beglaubigte Kopie meines Abiturzeugnisses
beglaubigte Kopie des BA-Zeugnisses
beglaubigte Kopie des H.O.D.-Zeugnisses

Gossner Mission

Oberkotzau, 8.5.81

Sehr geehrter Herr Pfarrer Kriebel !

Am 25.3.1981 habe ich mich schriftlich mit meinen Unterlagen bei Ihen auf die Anzeige in der "Zeit" vom 7.3.1981 für die Gossner Mission beworben.

Da ich bisher keine Nachricht von Ihnen erhalten habe, muß ich annehmen, daß ich nicht in die engere Wahl des Bewerberkreises gekommen bin, obwohl die Stelle mich nach wie vor sehr interessiert.

Wenn meine ~~meine~~ Annahme stimmt, bitte ich Sie doch freundlichst, mir meine Unterlagen (ungeknickt) umgehend zurück zu schicken,

Gossner Mission

Absender
Sieglind Dreyer

Bergstr. 12a

(Postfach oder Straße und Hausnummer)

8671 Oberkotzau
(Postleitzahl) (Ort)

da ich sie dann anderweitig benötige.

Mit freundlichen
Grüßen Ihre

S. Dreyer

DEUTSCHE BUNDESPOST
50

HOF, SAALE BHF
10.-5.81-11
8670

Postkarte

Pfarrer Kriebel

Gossner Mission

Handjerystr. 19-20
(Postfach oder Straße und Hausnummer)

1000 Berlin 41
(Postleitzahl) (Bestimmungsort)

Unterlagen am 12.5. zurückgeschickt mit Formbrief.

Gossner Mission

Sieglind Dreyer

8671 Oberkotzau, 25.3.81
Bergstr. 12a
Tel. 09286-6262
Dienst 09281-816231

Gossner Mission
Handjerystr. 19-20

1000 Berlin 41

EINGEGANGEN
27. MRZ. 1981
Erledigt 26 12/5.

Betr.: Bewerbung auf die Anzeige in der "Zeit" vom 7.3.1981

Sehr geehrter Herr Pfarrer Kriebel!

Hiermit bewerbe ich mich für die ausgeschriebene Stelle als Referentin für die Referate Öffentlichkeitsarbeit/Gemeindedienst und Nepal der Gossner Mission zum nächstmöglichen Einstellungstermin.

Ich beziehe mich auf das mit Ihnen telefonisch geführte Informationsgespräch am 13.3.1981. Die Unterlagen habe ich erhalten und mich ausführlich damit auseinander-gesetzt.-Diese Arbeit würde mich sehr interessieren, zumal ich denke, gute Voraussetzungen mit meinen zwei sozialen Berufen (Krankenschwester mit 10j. Berufserfahrung, davon 4 Jahre in U.S.A und Soz.päd.grad.) zu haben, wobei mich die Probleme in den Entwicklungsländern schon immer interessiert haben. -

Die Reisetätigkeit würde mir nichts ausmachen, da ich ein kontaktfreudiger Mensch - und unabhängig bin -.
Über mein Verhältnis zum Glauben möchte ich sagen, daß ich Vertrauen in Gott und Jesus Christus habe, daß ich von ihm getragen und geführt werde. Mein Verhältnis zur Kirche als Institution ist nicht so mit einem Satz zu erklären. Darüber würde ich mich mit Ihnen lieber persönlich unterhalten.

Der Grund, warum ich mich aus meiner jetzigen Position als redaktionelle Mitarbeiterin bewerbe, ist der, daß bei der Frankenpost Hof in Kürze (zum Sommer d.J. hin) Einsparungs- und Umstrukturierungsmaßnahmen getroffen werden.
Sie können jederzeit Referenzen bei meinem derzeitigen Chef, Herrn Speth, Tel. 09281-816230 oder in der Personalabteilung, Frau Thelen, Tel. 09281-816201 einholen.

Gossner Mission

Ich bin jederzit bereit zu einem persönlichen Vorstellungsgespräch nach Berlin zu kommen.

Mit freundlichen Grüßen

Ihre

S. Orlyk

Gossner Mission

Herrn
Jürgen Czerner
Uelzener Str. 12

3113 Böddenstedt

Berlin, den 7.2.8o

Sehr geehrter Herr Czerner!

Besten Dank für Ihr Schreiben vom 5.2.198o, in dem Sie weiterhin Ihr Interesse bekunden, in dem Gwembe South Development Project mitzuarbeiten. Es ist wünschenswert, daß wir uns so bald wie möglich persönlich kennenlernen, denn die Stelle ist noch frei, und wir sehen durchaus eine Möglichkeit, daß Sie auch als Wasserbau-Ingenieur die geforderten Aufgaben übernehmen können.

In der Anlage schicke ich Ihnen ein Merkblatt zu, dem Sie erste detaillierte Informationen über unsere Leistungen und Erwartungen entnehmen können.
In der Regel bitten wir um drei Referenzen, die über Ihre Persönlichkeit und Motivation Auskunft geben. Einen Vordruck dieses Anschreibens an die von Ihnen benannten Personen füge ich bei. Schließlich füge ich noch einen Motivationsbogen bei, den Sie uns bitte ausgefüllt zurückschicken möchten.
Sie würden in Anlehnung an den BAT IVa besoldet und entsprechend umfassend sozialversichert werden. Das Gehalt würde in Ihrem Fall ca. DM 1.92o,-- netto betragen.

Jeden ernsthaften Bewerber bitten wir, an einem Auswahl- und Orientierungskurs von DÜ (Dienste in Übersee), Stuttgart, teilzunehmen, wo Sie in Gesprächsform von Fachkräften getestet werden.

Ich wäre Ihnen dankbar, wenn Sie, sofern Ihr Interesse weiterhin besteht, noch im Februar nach Berlin kommen könnten.

Mit freundlichen Grüßen

Erhard Mische

<u>Anlagen:</u>
Merkblatt
Referenzenvordruck
Motivationsbogen
Jahresbericht des Gossner Service Teams 1978

Gossner Mission

Jürgen Czerner

Böddenstedt d. 5.2.80
Uelzenerstr. 12

An
Gossner Mission
1000 Berlin 41

Eingegangen
- 7. FEB. 1980
Erledigt:

Betr.: Ihr Schreiben vom 31.1.80

Sehr geehrter Herr Mische,
Die von Ihnen geschilderten Aufgaben sind, wenn auch nicht schwerpunktmäßig, in dem Vorlesungsstoff der FHS in Suderburg enthalten. Ich glaube, daß ich nach einer Einarbeitungszeit auch diese Tätigkeit ausführen kann, zumal ich die Aufgabe sehr reizvoll finde und es mich interessiert auf diesem Gebiet meine Kenntnisse zu erweitern.

Sollte die Stelle noch nicht besetzt und Sie an meiner Einstellung interessiert sein würde ich mich freuen, wenn Sie ausführlichere Informationen in nächster Zeit mir zusenden könnten. Nicht unerwähnt sollte bleiben, wer mich bezahlt (soziale Sicherung) und wie hoch das Gehalt sein wird.

Anlage
Tabellarischer Lebenslauf

Mit freundlichen Grüßen
Jürgen Czerner

Gossner Mission

Persönliche Daten und tabellarischer Lebenslauf

Name:	Jürgen Czerner
Geburtsdatum/-ort:	24.5.52 - Dortmund
Familienstand:	ledig
Schulbildung (Abschluß):	Fachhochschulreife
Berufsausbildung	Technischer Zeichner Staatlich geprüfter Techniker Dipl. Bauingenieur
Besondere Kenntnisse:	Konstruktionslehre Maschinenbau Konstruktion und Bauüberwachung von Badewasserumwälzanlagen
Derzeitiges Arbeitsgebiet:	

Datum von	Datum bis	Praktische Tätigkeit	Sonstiges
4/68	9/71	Fa. Rüter, Wietze Ausbildung zum Technischen Zeichner Abschluß mit Gehilfenprüfung	
10/71	1/74	Fa. Reisert, Celle Konstrukteur von Badewasserumwälzanlagen	
2/74	1/76	Technikerschule, Braunschweig Abschluß als staatlich geprüfter Techniker mit Fachhochschulreife	
3/76	5/76	Praktikum im Wasserwirtschaftsamt Celle	
5/76	9/76	Bearbeitung HW-Schutz an der Unteraller als Techniker(Weiterführung in den Semesterferien)	
9/76	1/80	Fachhochschule Nordostniedersachsen Fachbereich Bauingenieurwesen Abschluß als Dipl. Bauingenieur	

Gossner Mission

Gossner Mission

Handjerystraße 19-20
1000 Berlin 41 851021
Telefon (0 30) 8 51 30 01

Albert-Schweitzer-Straße 113/115
6500 Mainz
Telefon (0 61 31) 2 45 16 · 2 04 93

Herrn
Jürgen Czerner
Uelzener Str. 12
3113 Böddenstedt

1000 Berlin 41, den 31.1.80

Betr.: Bau-Ingenieur für Süd-Zambia
Bez. : Ihr Schreiben vom 20.1.80

Sehr geehrter Herr Czerner!

Besten Dank für Ihren Brief vom 20.Januar d.Js. und Ihre Anfrage. Die in Ihrer Fachhochschule angezeigte Stelle eines Wasserbauingenieurs ist für uns bedauerlicherweise immer noch unbesetzt. Sollten Sie an einer Mitarbeit interessiert sein , möchte ich Sie bitten, dies uns doch möglichst bald mitzuteilen.
Allerdings sieht die Aufgabenbeschreibung ein wenig anders aus als in der Anzeige angegeben wurde. Nach Rücksprache mit unseren Mitarbeitern in Zambia sind wir zur Auffassung gelangt, daß wir in erster Linie einen Bauingenieur suchen sollten, der vor allem die Betreuung der Baugenossenschaft mit 50-60 Mitgliedern übernehmen soll. Zu den konkreten Aufgaben gehören:

Einholen von Angeboten
Kalkulation und Erstellen von Angeboten
Materialbeschaffung
Kontrolle der Buchführung

Wenn Sie sich diese Aufgaben als Wasserbauingenieur zutrauen, würde ich mich gerne mit Ihnen ausführlicher unterhalten.
Neben der oben beschriebenen Tätigkeit sollte der Bauingenieur auch drei Bewässerungssysteme mitbetreuen, wobei zwei Projekte in der nächsten Zukunft erweitert werden, dazu müssen Wasserkanäle angelegt werden, das dritte Projekt muß von Grund auf erneuert werden.

Dieser knappen Beschreibung können Sie entnehmen, daß die speziellen Aufgaben eines Wasserbauingenieurs nur einen geringeren Umfang der gesamten Aufgaben einnehmen. Trotzdem sind wir davon überzeugt, daß auch ein Wasserbauingenieur die Baugenossenschaft managen kann, wie es in der Vergangenheit der Fall war. Z.Z. hat der Elektroingenieur des Teams die technische Leitung übernommen, während das Kaufmännische von einer Agrarökonomin wahrgenommen wird. Es bestehen Kontakte zu einem Architekten in Lusaka, der das Team wiederholt beraten hat und auch bereit ist, in der Zukunft zu beraten.

Mit freundlichen Grüßen

(E. Mische)

Gossner Mission

Jürgen Czerner
Uelzener Str. 12
3113 Böddenstedt

Böddenstedt, d. 20.1.80

Eingegangen
23. JAN. 1980
Erledigt

Gossner Mission
Albert-Schweitzer-Str.
6500 Mainz

Berlin

Ihr Aushang in der Fachhochschule Nordostniedersachsen vom 2.7.79

Sehr geehrte Damen und Herren,
Sie suchten für ein Entwicklungsprojekt in Süd-Zambia einen Wasserbauingenieur.

Da diese Stelle wohl nicht mehr frei ist, möchte ich sie bitten, mich über andere Projekte zu unterrichten, soweit dort Wasserbauingenieure benötigt werden.
Voraussichtlich werde ich am 31.1.80 meine Ingenieurprüfung erfolgreich abschließen, und ich würde mich freuen, wenn Sie mir bis dahin eine positive Antwort geben könnten.

Mit freundlichem Gruß

Jürgen Czerner

Gossner Mission

Jürgen Gerner Städtensteadt, d.20.1.80

Heisener Str. 12

3113 Städtensteadt

Gossner Mission

Albert - Schweitzer - Str.

6500 Mainz

Zur Antwort in der Fachhochschule Nordost-
niedersachsen vom 4.7.79

Sehr geehrte Damen und Herren,

Sie suchten für ein Entwicklungsprojekt
in Tschad - Zambia einen Wasserbauingenieur.

Da dieses Stelle wohl nicht mehr frei ist,
möchte ich sie bitten, mich über andere
Projekte zu unterrichten, soweit dort Wasser-
bauingenieure benötigt werden.

Voraussichtlich werde ich am 31.4.80
meine Ingenieurprüfung erfolgreich absolvieren
und ich würde mich freuen, wenn Sie mir
bis dahin eine positive Antwort geben
könnten.

Mit freundlichen Grüß

Jürgen Gerner

Gossner Mission

Frau
Christa Czerson
Alexandrinenstr. 1

1000 Berlin 61

2. Mai 1979

Betrifft: Bewerbung

Sehr geehrte Frau Czerson!

Wir danken Ihnen für Ihre Bewerbung, müssen Ihnen aber leider mitteilen, dass wir die ausgeschriebene Stelle durch eine andere Bewerberin besetzt haben. Die uns überlassenen Bewerbungsunterlagen reichen wir Ihnen beiliegend zu unserer Entlastung zurück.

Mit freundlichen Grüssen

Sekretärin

Anlage

Gossner Mission

hat sich noch

nicht gemeldet

Gossner
Mission

Herrn
Peter Christ
Aussiedlerhof

6733 Haßloch

Berlin, den 13.9.1979

Betr.: Ihre Bewerbung vom 12.9.79

Sehr geehrter Herr Christ!

Wir bedanken uns für Ihre Bewerbung vom 12.9., die uns das Berliner Arbeitsamt zugeschickt hat. Die Gossner Mission sucht für das kommende Jahr einen Agraringenieur für ein ländliches Entwicklungsprojekt im Gwembetal, Süd-Zambia, wo seit 197o ein Team von 6 Fachleuten arbeitet. Aufgaben des Agraringenieurs sind Beratung der Bauern über Anbau neuer Getreide- und Gemüsesorten, Erforschung und Einführung neuer Sorten im Gwembetal, Betreuung eines Bewässerungssystems, Beratung in der Tierhaltung, Motivierung der Bauern zur Verbesserung ihrer Anbaumethoden. Die Gossner Mission ist eine evangelische Missionsgesellschaft, die dieses Entwicklungsprojekt aufgrundeines Vertrages mit der Regierung von Zambia aus christlicher Verantwortung durchführt. Wir erwar-

b.w.

Gossner Mission

ten dabei von unseren Mitarbeitern Aufgeschlossenheit für die Probleme eines Entwicklungslandes, Sensibilität für die Mentalität und Lebensgewohnheiten der einheimischen Bevölkerung, Bereitschaft zur Kooperation mit den anderen Teammitgliedern.
Wir schließen 3-Jahresverträge, die jeweils verlängert oder erneuert werden können und besolden in Anlehnung an den BAT.
Sollten Sie Interesse für diese Aufgabe haben, würden wir uns freuen, wenn Sie sich bald schriftlich oder telefonisch bei uns melden können, damit wir einen Termin für ein Gespräch vereinbaren können.
In der Anlage erhalten Sie den Jahresbericht 1978 unseres Teams, wobei für Sie die Ausführungen von Peter Sauer besonders interessant sind.

Mit freundlichen Grüßen

Gossner Mission
I.A.

Sekr.

Anlagen:
Jahresbericht 78,
Faltblatt Zambia.

Gossner Mission

Landesstelle für Arbeitsvermittlung
Postfach 37 47
3000 Hannover 1

den 18.8.79

Bewerber
02 0523 CLAUSMEIER/GERH/1

Herr Kuske, wurde H.-C. angeschrieben v. Ihm

?

für Firma

GOSSNER MISSION
HANDJERYSTR. 19/20
1000 BERLIN 41

als 1 ING.GRAD.AGRAR

Sehr geehrte Damen und Herren,

anbei senden wir Ihnen die Bewerbungsunterlagen des oben genannten Bewerbers. Wenn Sie Interesse an einem Kontakt mit dem Bewerber haben, setzen Sie sich bitte direkt mit ihm in Verbindung.

Sofern der vorgeschlagene Bewerber nicht Ihren Vorstellungen entspricht, bitten wir Sie, uns die Unterlagen wieder zuzusenden. Wir werden gerne versuchen, Ihnen weitere Vorschläge zu machen.

Sie helfen uns bei unserer Arbeit, wenn Sie uns über das Ergebnis Ihrer Überlegungen und Verhandlungen auf der Rückseite dieses Schreibens informieren und uns eine kurze Erläuterung Ihrer Entscheidung geben. Wir können dann gegebenenfalls die für Sie wesentlichen Gesichtspunkte besser berücksichtigen.

Mit freundlichen Grüßen
Ihr Arbeitsvermittler
i. A. Wehmel

Anlagen

Bewerbungs-Vorlage-Schreiben (BVS)

Gossner Mission

Rückantwort

Arbeitsamt IV Berlin (West)
Der Direktor
1000 Berlin 71, Charlottenstraße 90-94
Fernruf: 2584 App.: 391
-Ia331-

Der Bewerber wird eingestellt ab _____ *)

Der Bewerber wird nicht eingestellt, weil *)

- ☐ er abgesagt bzw. sich nicht vorgestellt hat
- ☐ bei den Gehaltswünschen keine Übereinstimmung erzielt wurde,
  mein Angebot _____ DM, seine Forderung _____ DM
- ☐ ihm die Entfernung zur Arbeitsstelle zu groß ist
- ☐ er zu wenig Berufserfahrung hat

Wir erwarten von einem Bewerber folgende andere fachliche/persönliche Voraussetzungen: *)

_____

_____

☐ Weitere Vorschläge sind erwünscht. *)

_____, den _____ _____
(Stempel/Unterschrift)

*) Bitte Zutreffendes ankreuzen, ggf. ausfüllen.

Gossner Mission

, den 16.1.80
851021
xxxxxxxxxxxx

Herrn
Uwe Dobers
1000 Berlin 61
Planufer 88

Betr.: Ihre Bewerbung, Gwembe South Development Porject

Sehr geehrter Herr Dobers!

Da ich Sie bisher nicht telephonisch erreichen konnte, möchte ich Sie auf diese Weise davon unterrichten, daß wir Ihre Bewerbung leider nicht berücksichtigen können. Nach Rücksprache mit DÜ sind uns grundsätzliche Bedenken gekommen, ob es in Ihrem eigenen Interesse gut und richtig ist, daß Sie für drei Jahre im Ausland beschäftigt werden, bevor Sie sich in der Bundesrepublik genügend akklimatisiert haben. Auch könnten Sie die Zusammenführung mit Ihrer Familie von hier aus besser als von Zambia aus betreiben. Zu einem späteren Zeitpunkt, wenn Sie dann noch an einer Tätigkeit und Mitarbeit im Gwembe South Development Project interessiert sind, würden wir gerne bereit sein, Sie erneut in die engere Auswahl zu nehmen.
Zu unserer Entlastung schicke ich Ihnen Ihre persönlichen Unterlagen wieder zurück.

Mit freundlichen Grüßen

Gossner Mission

Herrn und Frau
Hilke und Karl Bohley
Martin-Luther-Str. 47

1000 Berlin 30

Berlin, den 4.1.1980

Betr.: Bewerbung des Herrn Uwe Dobers, Planufer 88, 1000 Bln 61, als Bauingenieur bei der Gossner Mission

Sehr geehrtes Ehepaar Bohley!

Herr Uwe Dobers hat sich bei uns beworben, um für die Gossner Mission in einem ländlichen Entwicklungsprojekt in Süd-Zambia, Afrika, als Bauingenieur zu arbeiten.

Er hat Sie als Referenz angegeben. Wir wären Ihnen sehr dankbar, wenn Sie uns einige Fragen zu seiner Person beantworten können, die selbstverständlich streng vertraulich behandelt werden:

1. wie schätzen Sie seine beruflichen Qualifikationen ein,

2. wie beurteilen Sie seine Persönlichkeit, seine Flexibilität, sich in einer fremden Kultur und bei fremden Lebensgewohnheiten umzustellen und entsprechend einzufügen,

3. halten Sie ihn für kooperativ in der Zusammenarbeit mit anderen Mitarbeitern,

4. wie beurteilen Sie seine Fähigkeit, gerade auch mit den einheimischen Menschen in Afrika gut zusammenzuarbeiten,

5. können Sie uns Auskunft geben, über seine mögliche kirchliche Einstellung?

Für eine möglichst schnelle Antwort wären wir Ihnen sehr dankbar. Für Ihre Mühe bedanken wir uns im voraus.

Mit freundlichen Grüßen
i.A.

(Shkr.)

Gossner Mission